राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 300

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, मंगलवार, 7 अप्रैल 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 14

आइसोलेशन के बाद अस्पताल में भर्ती हुए ब्रिटिश पीएम

>> 11

कोरोना मीटर

(स्रोत : वर्ल्डोमीटर्स डॉट इंफो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय)

	विश्व	अमेरिका	स्पेन	भारत	31 मार्च की स्थिति	दिल्ली
कुल केस	12,88,320	3,36,907	1,35,032	4602	1,225	525
मौतें	70,567	9,624	13,055	142	31	7
स्वस्थ हुए	2,72,029	17,977	40,437	344	111	19

भारत के प्रमुख राज्य

राज्य	केस	मौतें
महाराष्ट्र	868	52
तमिलनाडु	621	5
केरल	327	7
उत्तर प्रदेश	317	7
आंध्र प्रदेश	303	0
राजस्थान	301	2
मध्य प्रदेश	251	18
तेलंगाना	234	11
अन्य	855	33

शाम 12:00 बजे तक

अन्य प्रमुख देश

देश	इटली	जर्मनी	फ्रांस
केस	1,28,948	1,00,232	92,839
मौतें	15,887	1,591	8,078

नोट : कोरोना से प्रभावित लोगों के संदर्भ में आंकड़े उल्लिखित दो सोतों के अतिरिक्त जागरण न्यूज नेटवर्क के रूप में अन्य माध्यमों से भी लिए गए हैं। अत : तालिका तथा दैनिक जागरण के इस अंक में प्रकाशित सामग्री में आंकड़ों का अंतर संभव है।

हेल्पलाइन नंबर

कोरोना से जुड़ी सही जानकारी देने के लिए भारत सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वाट्सएप हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। इन नंबरों को मोबाइल में सुरक्षित करके कोई भी प्रामाणिक सूचना पाई जा सकती है। कृपया नंबर दर्ज करके वाट्सएप पर सिर्फ नमस्कार का संदेश भेजें। तुरंत एक मेन्यू आएगा, जिसके अनुसार वांछित जानकारी ली जा सकती है।

who:+41 798931892

mygov : +9190131515515

अब एक घंटे में होगी कोरोना वायरस की जांच ● पेज 5

सीएनजी सिलेंडरों से होगी ऑक्सीजन की आपूर्ति ● पेज 6

बुरी यादें तो अच्छी आदतें भी दे जाएगा कोरोना ● पेज 7

अपना देस

कैलन मोदी जी एलान, सतर्क रहे के हिंदुस्तान...

कटिहार : बिहार के कटिहार जिले का द्वाशय गांव। कोरोना का खौफ है तो कौतूहल भी। घरों के दरवाजे बंद या गलियों में इक्का-दुक्का लोग। गांव अपनी भाषा में समझा रहा कोरोना से चल रही लड़ाई का मर्म। (पेज-13)

जागरण विशेष

बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार...

पानीपत : कल हनुमान जयंती पर घर-घर में हनुमान चालीसा का पाठ कर संकटमोचन से प्रार्थना की जाएगी। पानीपत में तो इसे मुहिम की शक्ल दे दी गई है, जिसमें देश-विदेश के हजारों लोग जुड़ चुके हैं। (पेज-13)

न्यूज गैलरी

डरें नहीं, लड़ें ▶ पृष्ठ 6

क्लोरोक्विन के लिए सब देख रहे भारत का मुंह

नई दिल्ली : मलेरिया में इस्तेमाल होने वाली दवा 'हाइड्राक्सी क्लोरोक्विन' की मांग बढ़ती जा रही है। अभी तक 30 देश भारत से इसकी आपूर्ति की मांग कर चुके हैं। कोरोना के प्रसार को देखते हुए सरकार कोई जोखिम नहीं उठाना चाहती।

स्पोर्ट्स ▶ पृष्ठ 12

टी-20 क्रिकेट विश्व कप तय समय पर होने की उम्मीद

मेलबर्न : महामारी के बावजूद टी-20 क्रिकेट विश्व कप के आयोजकों को उम्मीद है कि ऑस्ट्रेलिया में अक्टूबर -नवंबर में होने वाला यह टूर्नामेंट तय समय पर होगा। कोरोना वायरस के कारण पूरी दुनिया में खेल गतिविधियां रुकी हुई हैं।

एक साथ नहीं, टुकड़ों में हटाया जाएगा लॉकडाउन

केंद्र ने शुरू की तैयारी, कोरोना केसों के आधार पर बांटे जाएंगे राज्य

नीलू रंजन, नई दिल्ली

- चार कैटेगरी में बटेंगे राज्य, इसी आधार पर मिलेगी प्रतिबंधों से अलग-अलग छूट
- संक्रमितों के नए मामले आने पर नए सिरे से लगाए जा सकेंगे प्रतिबंध

लॉकडाउन के अंतिम चरण में पहुंचने, लेकिन कोरोना संक्रमण में नरमी के संकेत नहीं मिलने के बीच सरकार इस मंथन में जुट गई है कि आखिर इससे बाहर आने का रास्ता कैसे बने। फिलहाल जो मेगा प्लान प्रस्तावित है उसके तहत सभी राज्यों को चार कैटेगरी में बांटा जाएगा और उसी हिसाब से अलग-अलग राज्यों या जिलों में लॉकडाउन हटाने के बारे में सोचा जा रहा है। ज्यादा एक्टिव कोरोना वाले क्षेत्रों में कोई छूट नहीं दी जाएगी, लेकिन जिन राज्यों में गत सात दिन से कोरोना का कोई भी मामला सामने नहीं आया हो, वहां राहत मिल सकती है। नए केस आने पर नए सिरे से पाबंदी लगाई जा सकती हैं। ज्ञात हो, 24 मार्च की मध्यरात्रि से पूरे देश में लागू लॉकडाउन की अवधि 14 अप्रैल को समाप्त हो रही है।

यह तो तय है कि लॉकडाउन एक साथ खत्म नहीं होगा। राज्यों के मुख्यमंत्रियों और केंद्रीय मंत्रियों के साथ चर्चा में भी पीएम ने यही संकेत दिया।

ऐसे तय होंगी कैटेगरी : कोरोना के 50 से अधिक केस वाले राज्यों को चौथी कैटेगरी में रखा गया है, यानी गंभीर। यहां लॉकडाउन लागू रहेगा। प्रति 10 लाख की आबादी पर दो से अधिक केस या 40 फीसद से अधिक जिले प्रभावित रहने वाले राज्य भी इसी कैटेगरी में रहेंगे। 20 से अधिक केस, 30 फीसद जिलों के प्रभावित होने और प्रति 10 लाख आबादी में एक से दो मरीज वाले राज्य तीसरी कैटेगरी में रहेंगे। यहां लॉकडाउन जारी रहेगा, पर कुछ छूट दी जा सकती हैं। दूसरी कैटेगरी में वे राज्य होंगे जिनमें एक से अधिक जिले कोरोना प्रभावित होंगे, लेकिन ऐसे जिले कुल जिलों के 30 फीसद से कम होंगे। साथ ही 20 से कम मरीज होंगे और प्रति 10 लाख आबादी में उनकी संख्या एक से कम होगी। पहली कैटेगरी में वे राज्य होंगे जहां एक से अधिक जिले प्रभावित नहीं होंगे। मरीजों की संख्या पांच से कम होगी। यह भी देखा जाएगा कि गत सात दिनों में नया मरीज सामने नहीं आया हो।

अलग-अलग कैटेगरी में ये होंगी छूट : तीसरी कैटेगरी के राज्यों में रेल, बस व हवाई सेवाओं में प्रतिबंधों के साथ कुछ ढील दी सकती है, जो राज्य के भीतर ही सीमित रहेगी। यहां भी कोरोना के केस वाले जिलों को अन्य जिलों से आइसोलेट रखा जाएगा। यहां कुछ शर्तों के साथ घरेलू विमान और रेल सेवाओं की अनुमति दी जा सकती है, लेकिन आर्थिक गतिविधियां, शैक्षणिक व अन्य सेवाएं स्थगित रहेंगी। वहीं, पहली श्रेणी के राज्यों में आर्थिक, शैक्षणिक व अन्य गतिविधियों को शुरू करने की इजाजत मिल जाएगी। यहां रेल, हवाई और जलमार्ग से यातायात की सेवाएं बहाल तो होंगी, लेकिन कोरोना से प्रभावित जिले या कैटेगरी तीन व चार वाले राज्यों में इससे आने-जाने की अनुमति नहीं होगी। रेलगाड़ी में लोग यहां चढ़ और उतर तो सकते हैं, लेकिन किसी को भी कोरोना प्रभावित राज्य या जिले में चढ़ने या उतरने की अनुमति नहीं होगी।

आर्थिक प्रभावों से जूझने की युद्धस्तर पर तैयारी करें मंत्रालय

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंत्रियों से विचार-विमर्श में दी सलाह
- हॉटस्पॉट को छोड़कर बाकी विभागों को खोलने की योजना बनाएं

पीएम नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में सोमवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से कैबिनेट की बैठक हुई। एएनआइ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'कोविड-19' महामारी के मसले पर केंद्रीय मंत्रियों से सोमवार को विचार-विमर्श के दौरान इसके आर्थिक प्रभावों से लड़ने के लिए सभी मंत्रालयों को युद्धस्तर पर तैयारी करने और मंत्रालयों को 'कारोबार निरंतरता योजना' बनाने की सलाह दी। पीएम ने इस संकट को एक महत्वपूर्ण अवसर भी बताया जिसमें 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देने के साथ अन्य देशों पर निर्भरता घटाई जा सकती है। मोदी की केंद्रीय मंत्रियों के साथ हुई वीडियो कांफ्रेंसिंग में कैबिनेट सचिव व अन्य आला अफसरों ने भी भाग लिया।

पीएम मोदी ने मंत्रियों से कहा कि वे मैन्यूफैक्चरिंग और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए उचित सुझाव पेश करें। यह सुनिश्चित करें कि भारत नए क्षेत्र के निर्यात दायरे में जरूर शामिल हो जाए। सभी विभाग इस बात पर गौर करें कि उनका काम 'मेक इन इंडिया' को कैसे बढ़ावा देगा। बैठक में मोदी ने कोरोना से जंग में दृढ़ प्रतिज्ञ व सतर्क रहने पर विशेष बल दिया। मंत्रियों से बातचीत में पीएम ने लॉकडाउन को सही तरीके से लागू करने में राज्य व जिला प्रशासन के निरंतर संपर्क में रहने व आकस्मिक समस्याओं के समाधान में सहयोग प्रदान करने की बात कही। आर्थिक चुनौतियों से निपटने को जिलास्तरीय योजनाएं बनाने को कहा।

महामारी से लड़ाई लंबी है पर जीतेंगे हम : मोदी

नई दिल्ली : नरेंद्र मोदी ने भाजपा के 40वें स्थापना दिवस पर कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने लंबी लड़ाई का संकेत देते हुए कार्यकर्ताओं को पांच टास्क दिए हैं। इसमें गरीबों के लिए भोजन, पानी और राशन से लेकर पीएम केयर्स फंड में खुद के साथ साथ 40 अन्य लोगों से सहयोग करवाने जैसे निर्देश हैं। (पेज-3)

मोदी ने मंत्रियों से कहा, वे पीएम गरीब कल्याण योजना पर अमल की निगरानी करें। आरोग्य सेतु एप को लोकप्रिय बनाया जाए ताकि उपयुक्त लोगों को इसका लाभ मिल सके।

उपज बेचने में किसानों की मदद करें पेज>>3

कोरोना संक्रमण के दूसरे और तीसरे चरण के बीच में है भारत

नई दिल्ली, एजेंसियां : देश में कोरोना संक्रमितों की बढ़ती संख्या के बीच सरकार ने कहा है कि हम अभी वायरस के प्रसार के तीसरे चरण में नहीं पहुंचे हैं। इस संबंध में कुछ रिपोर्टों और एम्स के डायरेक्ट डॉ. रणदीप गुलेरिया के बयान से पैदा हुए संशय के बीच सोमवार को स्वास्थ्य मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि भारत में संक्रमण अभी कम्युनिटी ट्रांसमिशन यानी स्टेज तीन पर नहीं पहुंचा है।

डॉ. रणदीप गुलेरिया ने कहा था कि कुछ हिस्सों में स्थानीय स्तर पर कम्युनिटी ट्रांसमिशन का मामला पाया गया है। हालांकि ज्यादातर जगहों पर वायरस का प्रसार स्टेज दो पर ही है। इसके बाद कयास लगने लगे थे कि देश में कोरोना का संक्रमण स्टेज तीन पर पहुंच गया है। इस तरह की खबरें आते ही स्वास्थ्य मंत्रालय ने स्थिति स्पष्ट की। मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने कहा, 'अगर

- स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा, स्टेज तीन से बचे रहने के लिए हो रही कर कोशिश
- कुछ जगहों पर एकमुश्त मामले आए हैं, लेकिन प्रसार दूसरे स्टेज पर ही है

देश में कहीं भी कम्युनिटी ट्रांसमिशन का मामला सामने आया तो हम सबसे पहले सूचित करेंगे, ताकि लोग सतर्क हो सकें। जहां तक एम्स के डायरेक्टर की बात है, उन्होंने लोकलाइज्ड कम्युनिटी ट्रांसमिशन शब्द प्रयोग किया है। इसका अर्थ है कि किसी एक जगह पर ही बड़ी संख्या में संक्रमण के मामले मिल रहे हैं। हम अभी दूसरे और तीसरे स्टेज के बीच में हैं। हमारे प्रयास व कदम इसी दिशा में होने चाहिए कि हम स्टेज तीन पर ना पहुंचें।' स्टेज दो का अर्थ है कि जिसे संक्रमण हुआ है, वह विदेश से यात्रा कर लौटा है या ऐसे किसी व्यक्ति के संपर्क में आया है। दूसरे स्टेज तक यह पता रहता है कि किसी व्यक्ति को संक्रमण कैसे हुआ। वहीं स्टेज तीन में व्यक्ति किसी अज्ञात के संपर्क में आकर संक्रमित होता है। उसके संक्रमण का स्रोत नहीं मिल पाता है। यह बहुत घातक स्थिति होती है।

जांच की गति तेज कर रही आइसीएमआर : इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आइसीएमआर) ने जांच के लिए रैपिड एंटीबॉडी ब्लड टेस्ट की मंजूरी दे दी है। इस जांच से कोरोना की पुष्टि नहीं होती है, लेकिन इंफ्लूएंजा का पता चल जाता है, जो कोरोना के कारण भी हो सकता है। इसकी रिपोर्ट 15 से 20 मिनट में मिल जाती है। इसके पॉजिटिव मरीज को संभावित कोरोना संक्रमित मानते हुए इलाज शुरू किया जाएगा। जहां संक्रमण के एकमुश्त मामले आने की आशंका है, वहां इस जांच का प्रयोग होगा। रिपोर्ट निगेटिव आने पर जरूरत पड़ी तो आरटी-पीसीआर जांच की जाएगी। आइसीएमआर को बुधवार तक एंटीबॉडी टेस्ट के लिए सात लाख किट मिलने की उम्मीद है। इस समय 200 से ज्यादा लैब को कोरोना जांच की अनुमति दी गई है। अब तक 96 हजार लोगों की जांच की जा चुकी है।

हॉटस्पॉट से तय होगी लॉकडाउन की समयसीमा : आइसीएमआर के रमन आर गंगाखेड़कर का कहना है कि हॉटस्पॉट की पहचान लॉकडाउन की समयसीमा तय करने में अहम भूमिका निभाएगी। संक्रमितों की संख्या को दोगुना होने में लगने वाला समय इसके प्रसार को समझने का अहम मानक होता है। अभी तब्लीगियों के कारण अचानक बढ़े मामलों के कारण यह फॉर्मूला लागू नहीं किया जा सकता है, लेकिन लॉकडाउन के आखिरी हफ्ते में यह मानक अहम कारक बनेगा। इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि लॉकडाउन की जरूरत राष्ट्रीय स्तर पर होगी या स्थानीय स्तर पर।

सांसदों का वेतन 30 फीसद कटेगा, दो साल नहीं मिलेगी सांसद निधि

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और राज्यपालों ने भी स्वेच्छा से तीस फीसद कम वेतन लेने का किया एलान
- वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये पीएम ने कैबिनेट के साथ की बैठक, वेतन कटौती को लेकर अध्यादेश को मंजूरी

कोरोना के खिलाफ छिड़ी जंग में अब देश के शीर्ष संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों और दोनों सदनों के 790 सांसदों के वेतन से तीस फीसद धनराशि कटेगी। हर साल हर सांसद को मिलने वाली पांच करोड़ रुपये की सांसद निधि भी दो साल तक सरकार के कंसोलिडेटेड फंड में जाएगी। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में इस आशय के अध्यादेश को मंजूरी दे दी गई है। यह अध्यादेश एक अप्रैल, 2020 से एक साल के लिए अमल में रहेगा है। इस फैसले के तत्काल बाद ही राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और राज्यपालों ने भी स्वेच्छा से साल भर तक तीस फीसद कम वेतन लेने का एलान किया है।

कैबिनेट के फैसले की जानकारी देते हुए केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री प्रकाश जावडेकर ने सोमवार को बताया कि कोरोना से जंग में हर किसी का योगदान चाहिए। ऐसे मे अगर दो साल तक सांसद निधि रुकती है तो सरकार के खाते में 7900 करोड़ रुपये आएंगे। ध्यान रहे कि पीएम बार-बार याद दिला रहे हैं कि कोरोना से जंग लंबी चलेगी। इसका आर्थिक प्रभाव कितना खतरनाक होगा इसका अहसास पूरे विश्व को है। ऐसे में हर किसी की भूमिका जरूरी है। पहले उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने सांसदों से आग्रह किया गया था कि वह सांसद निधि का एक-एक करोड़ रुपया दें, लेकिन अब वित्त वर्ष 2020-21 और 2021-22 की पूरी सांसद निधि सरकारी खाते में जाएगी।

जावडेकर ने बताया कि सांसदों के अलावा, प्रधानमंत्री और केंद्रीय मंत्रियों का भी 30 फीसद वेतन कम होगा। ध्यान रहे कि पीएम और केंद्रीय मंत्रियों का वेतन सांसदों के वेतन से अलग होता है। सांसदों का मासिक वेतन एक लाख रुपये और संसदीय क्षेत्र का मासिक भत्ता 70 हजार रुपये के अलावा अन्य भत्ते भी होते हैं।

मैं पीएम नरेंद्र मोदी जी को बधाई देता हूं कि कैबिनेट ने एक साल के लिए सभी सांसदों के 30 फीसद वेतन में कटौती को मंजूरी दी है।

-अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री

सांसदों का वेतन संसद के तय कानून से ही निर्धारित होता है। इनमें कटौती का फैसला भी कानून में बदलाव के जरिये ही होगा। इसलिए अध्यादेश को संसद सत्र में लाया जाएगा। संसद सदस्य अधिनियम, 1954 के वेतन, भत्ते और पेंशन में संशोधन का अध्यादेश मंजूर किया गया है जो इसी माह की शुरुआत से लागू हो गया है।

पीएम आवास पर पीएम के साथ सिर्फ अमित शाह व राजनाथ थे : कोरोना में शारीरिक दूरी को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी न सिर्फ आगाह कर रहे हैं, बल्कि खुद ही उदाहरण भी पेश कर रहे हैं। इस क्रम में सोमवार को उन्होंने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये ही कैबिनेट की बैठक ही। पीएम आवास में उनके साथ सिर्फ गृहमंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह साथ थे। बाकी सभी मंत्री अपने-अपने घरों से लिंक से जुड़े थे। पिछली कैबिनेट बैठक मे भी शारीरिक दूरी के लिए ही मंत्रियों को दूर-दूर बिठाया गया था। बीच से टेबल गायब था और मंत्रियों को एक-एक मीटर की दूरी पर आगे पीछे कर बिठाया गया था।

विपक्ष एमपीलैड के स्थगन के खिलाफ पेज>>3

कोरोना संक्रमित तब्लीगियों की संख्या 1445 पर पहुंची

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- देश के कुल कोरोना संक्रमितों में तब्लीगियों की तादाद एक तिहाई से ज्यादा
- अब तक विभिन्न राज्यों में 25,500 से ज्यादा को किया गया क्वारंटाइन

देश में कोरोना से ग्रसित पाए जाने वाले तब्लीगी जमात के लोगों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। कुल कोरोना संक्रमितों में एक तिहाई से ज्यादा अकेले इस जमात से जुड़े लोग हैं। इससे जुड़े 25,500 से अधिक लोगों को अब तक क्वारंटाइन किया गया है।

गृह मंत्रालय की संयुक्त सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव के अनुसार केंद्र और राज्य सरकारों के साझा सहयोग से चलाए गए मेगा अभियान से कुल 25,500 तब्लीगियों और उनके संपर्क में आने वालों की पहचान हुई है और उन सभी को क्वारंटाइन किया गया है। इस दौरान इन पर नजर भी रखी जा रही, ताकि कोई आइसोलेशन का उल्लंघन नहीं कर पाए। उन्होंने कहा कि विदेश से पर्यटक वीजा पर आकर दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके

लव अग्रवाल फाइल फोटो

में तब्लीगी जमात के मजहबी आयोजन में भाग लेने वाले विदेशियों के खिलाफ कार्रवाई का सिलसिला जारी है। अभी तक कुल 2083 विदेशी तब्लीगियों की पहचान हो चुकी है और गृह मंत्रालय ने उनमें से 1750 का वीजा निरस्त कर ब्लैकलिस्ट कर दिया है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल के अनुसार देश में कुल चार हजार से ज्यादा कोरोना संक्रमितों में से अकेले तब्लीगी जमात से जुड़े लोगों की संख्या 1445 है। हजारों तब्लीगियों को क्वारंटाइन में रखे जाने के साथ ही कोरोना के लक्षण वाले तब्लीगियों का टेस्ट किया जा रहा है। जाहिर है आने वाले समय में कोरोना के ग्रसित तब्लीगियों की संख्या बढ़ सकती है। केंद्र सरकार की ओर से हरियाणा के पांच गांव सील करने की जानकारी भी दी गई, जहां विदेश से आए तब्लीगियों के रुकने की पुष्टि हुई है। हालांकि देर रात हरियाणा सरकार ने इसका खंडन किया। हरियाणा के गृह सचिव विजयवर्धन के अनुसार नूह जिले के चार गांव ऐसे हैं, जहां तब्लीगी जमात के लोग ठहरे थे। राज्य के स्वास्थ्य विभाग ने इन चारों गांव में डोर टू डोर जाकर लोगों के स्वास्थ्य जांच की मुहिम शुरू की है, लेकिन एक भी गांव सील नहीं है।

राज्यों ने दी सख्त चेतावनी

कोरोना संक्रमितों में तब्लीगियों की बढ़ती तादाद को देखते हुए राज्यों ने सख्त कदम उठाने की तैयारी की है। अब भी बड़ी संख्या में तब्लीगी जमात से जुड़े ऐसे लोग हैं, जो निजामुद्दीन में आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए थे या शामिल होने वाले के संपर्क में आए थे, लेकिन सामने नहीं आए हैं। अब स्थानीय प्रशासन इनसे निपटने की रणनीति बना रहे हैं। उप्र के कानपुर जिले के प्रशासन ने एलान किया है कि मंगलवार दोपहर तक ऐसे लोगों के पास सामने आने का आखिरी मौका है। इसके बाद जानबूझकर पहचान छुपाने वालों पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत कार्रवाई होगी। उत्तराखंड ने आपदा प्रबंधन कानून व अन्य धाराओं में कार्रवाई की बात कही है। उन पर हत्या और हत्या के प्रयास का मामला भी दर्ज किया जाएगा। असम सरकार ने भी सख्त कार्रवाई की बात कही है।

मरकज का जाल

निजामुद्दीन के मरकज से दो कंप्यूटर, लैपटॉप व अन्य दस्तावेज गायब, तब्लीगियों पर सुबूत मिटाने की धाराएं भी जोड़ सकती है क्राइम ब्रांच

जमाती उड़ा ले गए काले कारनामों के सुबूत

राकेश कुमार सिंह, नई दिल्ली

निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज को खाली करने से पहले जमातियों ने वहां से काले कारनामों के सुबूत मिटा दिए थे। क्राइम ब्रांच को जांच के दौरान अंदर रखे कंप्यूटर, लैपटॉप व अन्य दस्तावेज गायब मिले हैं। जांच टीम को उम्मीद थी कि इन कंप्यूटर व लैपटॉप से उसे ऐसी कई अहम जानकारियां मिलेंगी, जिससे फंडिंग के स्रोत के साथ ही धर्म के नाम पर फैलाई जा रही कट्टरता का भी पर्दाफाश होगा। क्राइम ब्रांच अब मौलाना साद और प्रबंधन के अन्य सदस्यों के खिलाफ दर्ज मुकदमे में सुबूत मिटाने की धाराएं भी जोड़ सकती है।

क्राइम ब्रांच को मरकज (तब्लीगी मुख्यालय) के कर्मचारियों से पूछताछ में जानकारी मिली थी कि वहां दो बड़े कंप्यूटर और छह से ज्यादा लैपटॉप हैं। इनमें देश-विदेश से आने वालों का नाम, पता, चंदा व प्रबंधन से जुड़ी अन्य जानकारियों का रिकॉर्ड है। ऐसे में सैनिटाइजेशन के बाद स्वास्थ्य विभाग की अनुमति मिलते ही क्राइम ब्रांच व फॉरेंसिक एक्सपर्ट की 10 सदस्यीय टीम ने रविवार को (11.30 बजे से शाम पांच बजे) तक मरकज में जांच-पड़ताल की। टीम को पहली मंजिल पर बने कार्यालय से सभी कंप्यूटर, लैपटॉप, कई रजिस्टर व फाइलें गायब मिलीं। आठ रजिस्टर और कुछ प्रिंटर मिले, जिनसे कोई खास जानकारी नहीं मिली है। ऐसे में गायब किए गए कंप्यूटर व लैपटॉप बरामद कर उनसे जानकारी जुटाने की नई चुनौती खड़ी हो गई है, क्योंकि इनके बिना मरकज के काले कारनामों का पर्दाफाश करना नामुमकिन है। इधर, कोरोना वायरस के संक्रमण के चलते मौलाना साद और अन्य को अभी गिरफ्तार करना भी क्राइम ब्रांच के लिए संभव नहीं है।

दो संक्रमितों की द. अफ्रीका व ईरान में मौत पेज>>4

10-23 मार्च तक मरकज में आए लोगों का पता लगाना चुनौती

सालभर मरकज में देश-विदेश से लोगों का आना-जाना लगा रहता है। प्रतिदिन यहां 1000-2000 लोग आते-जाते हैं। 13 मार्च को मौलाना साद ने विशेष आयोजन किया था। इसके लिए देश के सभी राज्यों के अलावा विश्व के कई देशों के लोगों को निमंत्रण भेजा गया था। इसलिए विदेश से बड़ी संख्या में लोग कार्यक्रम में शरीक हुए थे। यही नहीं कोरोना के वैश्विक महामारी घोषित होने के बावजूद इस एक दिन के कार्यक्रम को बढ़ाकर दो दिन कर दिया गया। यही नहीं 15 मार्च से दोबारा भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें शामिल होने के लिए 13 मार्च से पहले ही बड़ी संख्या में लोग देश-विदेश से आ गए थे। इसके बाद 23 मार्च तक जमातियों के आने-जाने का सिलसिला चलता रहा। इन लोगों के बारे में जानकारी जुटाना दिल्ली पुलिस व सरकार के लिए अब बड़ी चुनौती साबित हो रहा है।

देश में तब्लीगी जमात के कारण बढ़ी मौत और संक्रमण की संख्या : संघ

संजय कुमार, रांची

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मनमोहन वैद्य ने कहा है कि देश में तब्लीगी जमात के कारण संक्रमण पीड़ितों और मौतों की संख्या बढ़ रही है। स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार, पहले साढ़े सात दिनों में यह संख्या दोगुनी हो रही थी, अब चार दिनों में हो रही है। इस जमात के लोग अपने ही समाज में बेनकाब हो रहे हैं। मुस्लिमों में एक वर्ग है जो सरकार के निर्देशों का पालन करते हुए ऐसे तब्लीगियों की खोज में प्रशासन की मदद कर रहा है।

मनमोहन वैद्य सोमवार को नई दिल्ली स्थित संघ कार्यालय से ऑनलाइन पत्रकार वार्ता में तब्लीगी जमात से संबंधित प्रश्नों का जवाब दे रहे थे। उन्होंने केंद्र सरकार के कार्यों की जमकर सराहना करते हुए कहा, हमें पूरी उम्मीद है कि सब मिलकर इस संकट से पार पाएंगे।

सह सरकार्यवाह वैद्य ने कहा, ऐसे लोग अपने ही समाज में हो रहे बेनकाब

सह सरकार्यवाह मनमोहन वैद्य।

वैद्य ने तब्लीगी जमात के कारण उभरे हालात पर कहा, अपना कार्यक्रम रद न करना अलग बात है, लेकिन छिपे रहना, लोगों को छिपाना, सेवा में लगे लोगों व नर्सों से दुर्व्यवहार कुल मिलाकर उनकी विकृत मानसिकता को दर्शाता है। संघ को जब कोरोना की भयावहता का पता चला तो प्रतिनिधि सभा की बैठक स्थगित कर दी, रास्ते से ही 1500 लोगों को वापस भेज दिया, परंतु यह आश्चर्य की बात है कि उन लोगों ने ऐसा नहीं किया।

25 सेवा कार्य चला रहा संघ पेज>>3

न्यूयॉर्क के चिड़ियाघर में बाघिन को कोरोना

न्यूयॉर्क, एनवाइटी: न्यूयॉर्क के ब्रोंक्स चिड़ियाघर में एक बाघिन को कोरोना वायरस से संक्रमित पाया गया है। अमेरिका में किसी जानवर के कोरोना पीड़ित होने का यह पहला मामला है। माना जा रहा है कि बाघिन को यह संक्रमण चिड़ियाघर के किसी कर्मचारी से हुआ, जो कोरोना से संक्रमित तो है लेकिन उसमें लक्षण नहीं दिखाई दे रहे। न्यूयॉर्क के सभी चारों चिड़ियाघर और एक्वेरियम 16 मार्च से आम जनता के लिए बंद हैं।

वाइल्डलाइफ कंजरवेशन सोसायटी ने बताया कि चार साल की बाघिन नादिया के अलावा एक अन्य बाघिन, दो बाघ और तीन अफ्रीकी शेर भी कुछ दिन से बीमार थे। चिड़ियाघर के मुख्य पशु चिकित्सक पॉल कैले के मुताबिक, नादिया ज्यादा बीमार थी। इसलिए उसका दो अप्रैल को टेस्ट किया गया, जो पॉजिटिव आया।

27 मार्च को दिखे थे लक्षण पेज>>13

142 दर्ज किया गया राजधानी का एयर इंडेक्स सोमवार को। इस दौरान फरीदाबाद का एयर इंडेक्स123, गाजियाबाद का 181, ग्रेटर नोएडा का 142, गुरुग्राम का 106 और नोएडा का 120 रहा।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
मंगलवार 7 अप्रैल 2020

न्यूज गैलरी

प्रसव पीड़ा से तड़पती महिला को एएसआइ ने पहुंचाया अस्पताल

नई दिल्ली : लॉकडाउन के दौरान प्रसव पीड़ा से तड़पती महिला को समय पर अस्पताल पहुंचाकर दिल्ली पुलिस के एएसआइ ने महिला और बच्चे दोनों की जान बचाई। डीसीपी की तरफ से एएसआइ को दो हजार रुपये का नकद पुरस्कार व कमांडेशन कार्ड देकर पुरस्कृत किया गया है। तीन अप्रैल की रात देशबंधु गुप्ता रोड स्थित पुलिस स्टेशन में तैनात एएसआइ शेख सेफुद्दीन पेट्रोलिंग पर थे। देर रात उन्हें किशन गंज में एक महिला के जोर-जोर से चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। पूछताछ करने पर पता लगा कि महिला का नाम चीनू है और वह प्रसव पीड़ा से तड़प रही हैं। लॉकडाउन के चलते कोई भी उन्हें अस्पताल नहीं पहुंचा पा रहा था। शेख सेफुद्दीन ने निजी वाहन की व्यवस्था करके उन्हें लेडी हॉर्डिंग मेडिकल कॉलेज अस्पताल पहुंचाया। समय रहते अस्पताल पहुंचने पर महिला और शिशु दोनों की जान बच गई। (जासं)

हाई कोर्ट के लिए जिला अदालतों में दायर हो सकेगी याचिका

नई दिल्ली : वकील अब दिल्ली हाई कोर्ट के लिए अपनी याचिकाएं जिला अदालतों में ई-फाइल प्रणाली से दायर कर सकेंगे। सभी जिला अदालत परिसरों के सुविधा काउंटर पर ऐसा किया जा सकेगा। तीस हजारी कोर्ट के जिला न्यायाधीश व दिल्ली की सभी निचली अदालतों के प्रशासनिक प्रमुख गिरीश कथपालिया ने इस संबंध में अधिसूचना जारी की है। दिल्ली की छह जिला अदालतों की बार एसोसिएशनों के अध्यक्षों और सचिवों को इस बारे में सूचित किया गया है। सात अप्रैल से यह सुविधा उपलब्ध होगी। कोरोना वायरस के चलते इस व्यवस्था को अपनाया गया है। (जासं)

हेल्पलाइन से की 855 लोगों की मदद

नई दिल्ली : लॉकडाउन में बेवजह बाहर निकलने वाले लोगों पर सख्ती करने के साथ ही दिल्ली पुलिस ने सोमवार को विभिन्न जिलों में दो लाख से अधिक लोगों को भोजन भी उपलब्ध कराया। इसके लिए 15 जिलों में 400 एनजीओ का सहयोग लिया जा रहा है। सोमवार को दिल्ली पुलिस की हेल्पलाइन पर 855 कॉल आईं। इनमें से पैसे और खाना न होने से संबंधित 46 कॉल थीं। विभिन्न एनजीओ की मदद से ऐसे परिवारों को भोजन और राशन उपलब्ध कराया गया है। 24 कॉल स्वास्थ्य सेवा के संबंध में थीं और 610 कॉल मूवमेंट पास से संबंधित थीं। इसके अलावा प्रत्येक थाना क्षेत्र में सड़क पर रहने वाले, रिक्शा चालक, कबाड़ बीनने वाले और बेघर लोगों के लिए खाने की व्यवस्था की जा रही है। इसके लिए दिल्ली पुलिस ने 15 जिलों में 250 केंद्र बनाए हैं, जहां दोपहर और रात का भोजन लोगों को बांटा जा रहा है। इस दौरान शारीरिक दूरी का विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसके अलावा लोगों को कोरोना वायरस से बचने के लिए जागरूक भी किया जा रहा है। राजधानी के 15 जिलों में सोमवार को दो लाख 37 हजार से अधिक लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था की। (जासं)

10 लाख लोगों को आज से पांच-पांच किलो मुफ्त राशन

राहत ▶ बिना राशन कार्ड वालों को चार किलो चावल, एक किलो गेहूं

सीएम बोले, मरकज से निकाले गए जमातियों की वजह से बढ़े कोरोना के मामले

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को डिजिटल प्रेसवार्ता में कहा कि ऐसे 10 लाख गरीबों को मंगलवार से पांच-पांच किलो मुफ्त राशन दिया जाएगा, जिनके पास राशन कार्ड नहीं है। शुरुआत में 421 स्कूलों में राशन बांटा जाएगा। इसके अंतर्गत चार किलो चावल और एक किलो गेहूं दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि दिल्ली में 71 लाख लोग राशन कार्ड धारी हैं। सभी को दिल्ली सरकार साढ़े सात किलो राशन मुफ्त दे रही है।

केजरीवाल ने कहा कि पिछले कुछ दिनों से आप लोगों को लग रहा होगा कि कोरोना के केस तेजी से बढ़ रहे हैं। मगर इसका मुख्य कारण है कि मरकज से निकाले गए जमाती हैं। उन्होंने कहा कि हमें टेस्टिंग किट मिल रहे हैं इसलिए हमने टेस्ट बढ़ा दिए हैं। हम चाहते हैं कि जो भी लोग टेस्ट करवाना चाहें उनका टेस्ट हो। टेस्ट से पुष्टि कर उनको क्वारंटाइन किया जा सके। इस मामले में साउथ कोरिया को बेहतर माना जाता है। वहां पर भी ज्यादा से ज्यादा टेस्ट किए गए थे, जिस कारण कोरोना पर नियंत्रण हो सका। ठीक उसी तरह दिल्ली में भी ज्यादा से ज्यादा टेस्ट कर कोरोना को रोकने का प्लान है।

एक लाख टेस्टिंग किट के दिए आर्डर : मुख्यमंत्री ने एक आंकड़ा दर्शाते हुए कहा कि 25 मार्च से 100 से लेकर 125 टेस्ट किए जा रहे थे। उसके बाद एक अप्रैल से हम 500 से ज्यादा टेस्ट कर पा रहे हैं। आने वाले समय में हम इसे बढ़ाते चले जाएंगे। केजरीवाल ने कहा कि हमने एक लाख टेस्टिंग किट के ऑर्डर दे दिए हैं। किट आने के बाद शुक्रवार से हम बड़े स्तर पर टेस्ट कर सकेंगे।

6.90 लाख लोगों को कराया भोजन : केजरीवाल ने कहा कि रविवार को हमने पूरी दिल्ली में 6 लाख 90 हजार लोगों को दोपहर का भोजन कराया था। वहीं 6 लाख 94 हजार लोगों को रात का खाना खिलाया। दिल्ली में कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं सोएगा।

डिजिटल प्रेसवार्ता के दौरान बोलते मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल। सौ. दिल्ली सरकार

केंद्र ने दीं 27,000 पीपीई किट, राशन भी मिला

केजरीवाल ने कहा कि पिछले दिनों हम कह रहे थे कि पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्यूपमेंट (पीपीई) किट की कमी है, लेकिन केंद्र सरकार ने 27,000 पीपीई किट की मंजूरी दे दी है। केंद्र सरकार का शुक्रिया। उम्मीद है कि यह पीपीई किट कल या परसों तक हमारे पास पहुंच जाएंगी। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि राशन की उपलब्धता के मामले में केंद्र पूरा सहयोग कर रहा है। फिलहाल तो राशन है, अगर कम पड़ता है हम केंद्र सरकार से और राशन लेंगे। उन्होंने कहा कि सभी विधायक, सांसद, काउंसलर यह सुनिश्चित करें कि दुकानों पर राशन लेने वालों की भीड़ न लगे। अगर भीड़ लग गई तो सारा लॉकडाउन का असर खत्म हो जाएगा।

फीस रोकी तो नहीं मिल पाएगा शिक्षकों को वेतन : कांग्रेस

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : प्रदेश कांग्रेस ने एक बार फिर आरोप लगाया है कि कोरोना संकट से निपटने में दिल्ली सरकार नाकाम साबित हो रही है। प्रदेश अध्यक्ष अनिल चौधरी व उपाध्यक्ष जयकिशन का कहना है कि राजधानी होने के बावजूद दिल्ली में कोरोना के मरीज आए दिन बढ़ते ही जा रहे हैं।

सोमवार को उन्होंने कहा कि केजरीवाल सरकार फ्री का ढिंढोरा पीट वाहवाही लूटना चाह रही है, जबकि उसके परिणामों को जानबूझकर अनदेखा कर रही है। यही वजह है कि स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरी का दावा करने वाली सरकार स्वास्थ्य के क्षेत्र में तो पिछड़ ही रही है, अब शिक्षा के क्षेत्र में इससे भी ज्यादा पीछे होने को है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया अभिभावकों से पूछ रहे हैं कि निजी स्कूलों की फीस ली जाए या नहीं ली जाए।

जयकिशन के मुताबिक दिल्ली के निजी स्कूलों में पहले से ही वित्तीय संकट चल रहा है। यहां चार हजार से ज्यादा निजी स्कूल दिल्ली सरकार और सीबीएसई से मान्यता प्राप्त हैं। इन स्कूलों में शिक्षा का स्तर काफी बेहतर रहा है। इनमें करीब 24 लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं और इन स्कूलों से करीब 7-8 लाख शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों का रोजगार जुड़ा है। इसलिए फीस को लेकर सोच समझकर ही निर्णय लिया जाए या जिस तरह सरकार केंद्र से राशन लेकर दिल्ली वासियों को बांट रही है, वैसे ही निजी स्कूलों को भी वित्तीय सहायता प्रदान करे।

डॉक्टरों व नर्सों के सुरक्षा कवच में थोड़ी चूक से फैल सकता है संक्रमण

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

दिल्ली में बड़ी संख्या में डॉक्टर, नर्स व स्वास्थ्य कर्मी कोरोना की चपेट में आ चुके हैं। इसलिए अस्पतालों में स्वास्थ्य कर्मियों के बचाव के लिए की गई व्यवस्था पर डॉक्टर व नर्सिंग संगठन सवाल खड़े कर रहे हैं। उनका कहना है कि अस्पतालों में स्वास्थ्य कर्मियों को पीपीई (पर्सनल प्रोटेक्शन इक्वीपमेंट), एन-95 मास्क पर्याप्त संख्या में उपलब्ध कराया जाना चाहिए। अस्पतालों में पीपीई व एन-95 मास्क की कमी होने की बात कही जा रही है। साथ ही इन दिनों इमरजेंसी वार्ड में पहुंचने वाले हर मरीज को कोरोना का संदिग्ध मरीज मानकर डॉक्टरों व नर्सों को सुरक्षा उपाय अपनाने की बात कही जा रही है।

यह बात ठीक भी है, क्योंकि दिल्ली में इस बीमारी से पीड़ित होने वाले ज्यादातर डॉक्टर व स्वास्थ्य कर्मी ऐसे हैं जो कोरोना के मरीजों के इलाज से सीधे तौर पर नहीं जुड़े हैं। कुछ मामलों में अस्पताल व स्वास्थ्य कर्मियों की तरफ से भी लापरवाही हुई है। वहीं अस्पतालों में संसाधनों की कमी के कारण सभी कर्मचारियों को एन-95 मास्क उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है। मास्क के इस्तेमाल को लेकर आए दिन दिशानिर्देश बदल रहे हैं। इसके अलावा इमरजेंसी में कई तरह के मरीज इलाज के लिए पहुंचते हैं। उनमें से कौन कोरोन से संक्रमित है और कौन नहीं, यह पहचान भी आसान नहीं है क्योंकि ऐसे लोग भी कोरोना पॉजिटिव पाए जा रहे हैं जिनमें कोई लक्षण नहीं होता। पश्चिमी दिल्ली के महाराजा अग्रसेन अस्पताल में आइसीयू में अन्य बीमारी से पीड़ित दो मरीज बाद में कोरोना पॉजिटिव पाए गए। दिल्ली राज्य कैंसर संस्थान में प्रीवेंटिव आंकोलॉजी के एक डॉक्टर के संक्रमित होने के बाद एक अन्य डॉक्टर के अलावा छह नर्स भी कोरोना से पीड़ित हो गईं।

दिल्ली नर्सेज फेडरेशन के महासचिव लीलाधर रामचंदानी ने कहा कि स्वास्थ्य कर्मियों के कोरोना से पीड़ित होने का सबसे बड़ा कारण यह है कि जो डॉक्टर, नर्स कोरोना के इलाज से जुड़े हैं, उन्हें तो मौजूदा समय में पीपीई किट व एन-95 मास्क मिल रहा है, लेकिन इमरजेंसी व आइसीयू में कार्यरत सभी कर्मचारियों को यह उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है। मौजूदा समय में हर मरीज को संदिग्ध मानकर स्वास्थ्य कर्मियों को सुरक्षित रखने की जरूरत है। डॉक्टर, नर्स व सफाई कर्मचारियों के बीच भेदभाव नहीं करना चाहिए। बचाव के उपायों के बारे में सभी कर्मचारियों को प्रशिक्षित भी नहीं किया गया। यह भी एक कारण है कि नर्स व सफाई कर्मचारी भी इसकी चपेट में आ रहे हैं। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष डॉ. केके अग्रवाल ने कहा कि सभी स्वास्थ्य कर्मियों को बचाव के उपाय को अपनाना जरूरी है। ऐसा नहीं करने पर करीब 10 फीसद डॉक्टर व स्वास्थ्य कर्मी इसकी चपेट में आ सकते हैं।

सफदरजंग अस्पताल के मॉडल को अपनाने की दरकार : सफदरजंग अस्पताल के रेजिडेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन (आरडीए) के अध्यक्ष डॉ. मनीष ने कहा कि इस अस्पताल में डॉक्टरों व स्वास्थ्य कर्मियों के बचाव के लिए मास्क व पीपीई किट उपलब्ध कराए जा रहे हैं। अभी कोई दिक्कत नहीं है। इसके अलावा इमरजेंसी में इलाज के लिए भी प्रोटोकॉल बनाया गया है। इमरजेंसी में प्रवेश द्वार के पास ही स्क्रीनिंग सेंटर बनाया गया है, जहां पीपीई किट में डॉक्टर मौजूद रहते हैं। इस दौरान कोरोना के संदिग्ध मरीजों को वहीं से सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक में स्थानांतरित कर दिया जाता है। जिन मरीजों में कोरोना का संदेह नहीं होता, उनका इमरजेंसी में इलाज किया जाता है। यदि इमरजेंसी में प्रवेश करते समय ही सावधानी बरती जाए और स्क्रीनिंग कर ली जाए तो काफी हद तक बचाव संभव है। इसके अलावा फ्लू व कोरोना जैसे लक्षण से पीड़ित मरीजों के लिए अलग कॉर्नर बनाया गया है, जहां बुखार, खांसी, सर्दी से पीड़ित मरीजों को देखा जाता है।

एम्स आरडीए ने पीएम से की डॉक्टरों की मदद करने की मांग

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : एम्स के रेजिडेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन (आरडीए) ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर कहा है कि कोरोना से बचाव के लिए अस्पतालों में पीपीई किट सहित संसाधनों की कमी व क्वारंटाइन सुविधा की मांग करने पर डॉक्टरों को परेशान किया जा रहा है। उनके खिलाफ कार्रवाई की बात कह कोरोना वॉरियर्स की आवाज दबाने की कोशिश की जा रही है। आरडीए ने प्रधानमंत्री से उनकी समस्याओं पर ध्यान देने और डॉक्टरों की मदद करने की मांग की है। आरडीए का कहना है कि पीपीई की कमी का मुद्दा उठाने पर देश में कई जगहों पर स्थानीय प्रशासन द्वारा डॉक्टरों के खिलाफ कार्रवाई की बात कही गई है। एम्स आरडीए के एक पूर्व अध्यक्ष के खिलाफ भी बयान जारी किए गए। मौजूदा समय में सरकार को डॉक्टरों के विचारों पर गौर करना चाहिए। आरडीए ने केंद्र सरकार द्वारा कोरोना की रोकथाम के लिए किए जा रहे उपायों की सराहना करते हुए उम्मीद जाहिर की है कि प्रधानमंत्री उनकी बात भी सुनेंगे।

कोरोना मरीज के अंतिम संस्कार तक पर रहेगी डीएम की नजर

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना के मरीज की अस्पताल में मृत्यु होने की स्थिति में शव का अंतिम संस्कार करने के लिए दिल्ली सरकार ने स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (एसओपी) तैयार किया है। इसमें जिलाधिकारियों को विशेष अधिकार दिए गए हैं यानी मृतक पर अस्पताल से लेकर अंतिम संस्कार तक जिलाधिकारी की पूरी नजर रहेगी। इसका मकसद यह सुनिश्चित करना है कि मरने वाले व्यक्ति से किसी अन्य में कोरोना वायरस न पहुंचे।

दिल्ली सरकार द्वारा जारी एसओपी में कहा गया है कि अस्पताल में कोरोना मरीज की मृत्यु होने पर तुरंत शव को कीटाणुरहित करना होगा। अस्पताल में मरीज के शव को प्रशिक्षित हेल्थकेयर वर्कर ही संभालेंगे, अन्य कोई नहीं।

अस्पताल प्रशासन को तय करना होगा कि पोस्टमार्टम किया जाए या नहीं। अस्पताल प्रशासन एक विशेष वैन उपलब्ध कराएगा जिसमें शव को अंतिम संस्कार के लिए ले जाया जाएगा। वैन में भी प्रशिक्षित हेल्थकेयर वर्कर सुरक्षा वस्त्र पहने हुए साथ में होंगे। अंतिम संस्कार के स्थान से वैन वापस अस्पताल आने पर उसे पूरी तरह सैनिटाइज करना होगा।

हमें पैसे नहीं चाहिए, कहीं से पीपीई किट दिला दें गंभीर : मुख्यमंत्री

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

राजधानी में कोरोना पीड़ितों की संख्या 500 के पार पहुंच गई है। इस बीच मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पूर्वी दिल्ली के भाजपा सांसद गौतम गंभीर से पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट (पीपीई) किट दिलाने का अनुरोध किया है। इस पर गंभीर ने एक हजार पीपीई किट भी दिल्ली सरकार को उपलब्ध कराने की बात कही।

दरअसल, गौतम गंभीर ने दिल्ली सरकार को 50 लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की पेशकश की है। गंभीर की पेशकश पर मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा कि हमें पैसे नहीं पीपीई की जरूरत है। ट्वीट कर केजरीवाल ने कहा कि गौतम जी, आपके प्रस्ताव के लिए धन्यवाद। समस्या पैसे की नहीं, बल्कि पीपीई किट की उपलब्धता की है।

अगर आप हमें तुरंत कहीं से पीपीई किट दिलवाने में हमारी मदद करते हैं तो हम आभारी होंगे। दिल्ली सरकार उन्हें खरीद लेगी। इससे पहले पूर्वी दिल्ली के सांसद व भाजपा नेता गौतम गंभीर ने पत्र लिख कर सोमवार को संसद सदस्य स्थानीय क्षेत्र विकास योजना कोष से दिल्ली सरकार को कोविड-19 से लड़ने में स्वास्थ्यकर्मियों के लिए जरूरी उपकरण खरीदने में मदद के लिए 50 लाख रुपये देने की पेशकश की। वह दो सप्ताह पहले भी इस लड़ाई में मदद के लिए 50 लाख रुपये की पेशकश कर चुके हैं।

सीएम बताएं किट कहां पहुंचानी हैं

गौतम गंभीर ने एक हजार पीपीई किट दिल्ली सरकार को उपलब्ध करवाने की जानकारी देते हुए ट्वीट में कहा कि मुख्यमंत्री बताएं कि इन किटों को कहां पर पहुंचाना है। उन्होंने केजरीवाल को सोमवार को लिखे एक पत्र में कहा कि उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा था कि दिल्ली के कई सरकारी अस्पतालों में बढ़ती चिकित्सीय उपकरणों की मांगों को पूरा करने के लिए धन की जरूरत है। उन्होंने कहा कि दो सप्ताह पहले मैंने 50 लाख रुपये देने की बात कही थी। मैं आगे भी आपके कार्यालय को अपने कोष से 50 लाख रुपये देने की इस उम्मीद में पेशकश करता हूं कि इस धन का इस्तेमाल चिकित्साकर्मियों के लिए उपकरण खरीदने और कोविड-19 के इलाज में होगा।

गौतम गंभीर। (फाइल)

पसरा सन्नाटा

लॉकडाउन के दौरान अंतरराज्यीय बस अड्डे के पास सड़क पर पसरा सन्नाटा। सामान्य दिनों में यहां जाम का सामना करना पड़ता है। जागरण

सोमवार रहा इस सीजन का सबसे गर्म दिन

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : धीरे-धीरे बढ़ती गर्मी के बीच सोमवार का दिन इस सीजन का सबसे गर्म रहा। दिल्ली का अधिकतम तापमान 37 डिग्री पार हो गया। न्यूनतम तापमान में भी इजाफा दर्ज किया गया। हालांकि पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से मंगलवार को मौसम थोड़ा बदलेगा। धूल भरी हवा चलने के साथ -साथ हल्की बारिश होने के भी आसार हैं।

पिछले कई दिनों से खिल रही तेज धूप के बीच सोमवार को दिल्ली का अधिकतम तापमान सामान्य से एक डिग्री अधिक 35.8 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम तापमान सामान्य से एक डिग्री कम 18.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इस सीजन में इतना अधिक तापमान पहली बार दर्ज हुआ है। दिल्ली के प्रादेशिक मौसम विज्ञान केंद्र के प्रमुख कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया कि एक पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता से मंगलवार को आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे।

करीब 90 फीसद मरीज नहीं हैं गंभीर

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

वैश्विक महामारी कोरोना को लेकर लोग दहशत में है। हाल के दिनों में जिस तरह इसका संक्रमण बढ़ा है उससे हर कोई घबराया हुआ है। हालांकि यदि दिल्ली के अस्पतालों में भर्ती मरीजों के आंकड़ों पर नजर डालें तो करीब 10 मरीजों की ही हालत गंभीर है। इसमें से भी सिर्फ 6.62 फीसद मरीज ही आइसीयू में हैं। 90 फीसद मरीज की हालत स्थिर है।

इसलिए लोगों को कोरोना से घबराने की जरूरत नहीं है। सिर्फ शारीरिक दूरी व घर में क्वारंटाइन रहने के नियम का पालन करते रहें।

डॉक्टर भी कहते हैं कि 80 से 85 फीसद मरीजों में माइल्ड संक्रमण देखा जा रहा है। इसलिए लोगों को डरने की जरूरत नहीं है। हाथ की स्वच्छता और आइसोलेशन में रहकर इस बीमारी के संक्रमण से बचा जा सकता है। दिल्ली में मौजूदा समय में 525 मामले सामने आए हैं। जिसमें से 498 मरीज अस्पतालों में भर्ती हैं। इनमें से 33 मरीज आइसीयू में भर्ती हैं और 15 को ऑक्सीजन सपोर्ट पर रखा गया है। अन्य सभी मरीजों की हालत स्थिर बनी हुई है। दिल्ली में अभी तक मृत्युदर भी डेढ फीसद से भी कम है। इनमें भी ज्यादातर बुजुर्ग, मधुमेह व हाइपरटेंशन से पीड़ित लोग थे।

फोर्टिस अस्पताल के श्वांस रोग विशेषज्ञ डॉ. विकास मौर्या ने कहा कि कोरोना सांस की वायरल बीमारी है। जो खांसी व छिंकने से निकले ड्रॉपलेट से फैलता है। ज्यादातर सांस की बीमारियां इसी तरह फैलती हैं। बहुत कम मरीजों को आइसीयू की जरूरत पड़ रही है। इसलिए लोग घबराएं नहीं। अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता ठीक रखना है। 60 साल से अधिक उम्र के लोग, मधुमेह, हाइपरटेंशन, हार्ट व अन्य बीमारियों से पीड़ित लोग अपनी पुरानी बीमारी को दवा से नियंत्रित रखें। ऐसी स्थिति में यदि संक्रमण होता भी है तो वह ठीक हो सकता है। काफी लोग ठीक होकर इस बीमारी से बाहर आ रहे हैं।

यह एक नया वायरस है। इसलिए आने वाले दिनों में क्या स्थिति रहेगी यह कहना मुश्किल है। फिर भी यह देखा गया है कि सांस से जुड़ी अन्य वायरल संक्रमण की बीमारियां गर्मी में बहुत कम हो जाती हैं। वैसे भी जिन देशों में ठंड अधिक है वहां संक्रमण ज्यादा देखा गया है। इसलिए आने वाले दिनों में यहा कुछ राहत मिल सकती है। लेकिन, यह स्थिति अगले कुछ दिनों में तापमान बढ़ने पर ही स्पष्ट हो पाएगी।

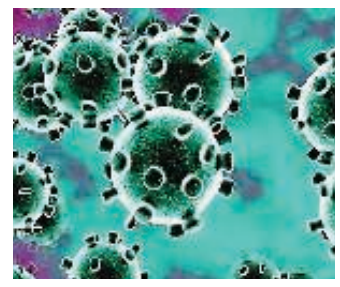

प्रतीकात्मक

घर से बाहर निकलने वाले क्वारंटाइन किए गए 247 लोगों पर एफआइआर

जासं, नई दिल्ली : जिन लोगों को होम क्वारंटाइन किया गया था, उनके घर से निकलने पर पुलिस ने एफआइआर दर्ज की है। अब तक ऐसे 247 लोगों के खिलाफ मामले दर्ज किए गए हैं। होम क्वारंटाइन पर नजर रखने के लिए पुलिस उनके मोबाइल नंबर को सर्विलांस पर लेकर नजर रखे हुए है। मौके पर जाकर भी पुलिस इस बात को सुनिश्चित कर रही है कि वे घर में हैं या नहीं। लॉकडाउन के दौरान जिन लोगों को कोरोना संदिग्ध मानकर होम क्वारंटाइन किया गया, वे घर पर ही रहे, इसके लिए पुलिस पूरी मुस्तैदी से कार्य कर रही है। ऐसे लोग अगर घर से बाहर निकलते हैं तो वे कोरोना वायरस का प्रसार कर सकते हैं। ऐसे में जिन लोगों को होम क्वारंटाइन किया गया है, उनका 14 दिनों के लिए घर से निकलना प्रतिबंधित करते हुए उन्हें घर के अंदर रहना अनिवार्य किया है।

247 में से 81 लोगों के खिलाफ पुलिस ने घर पर पहुंचकर जांच करने के बाद मामला दर्ज किया गया है। पुलिस निरीक्षण में ये लोग घर पर नहीं मिले, जबकि 160 लोगों पर मोबाइल सर्विलांस के जरिये नजर रखी जा रही थी। तकनीकी जांच के बाद इन लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। वहीं छह लोगों पर पुलिस ने पड़ोसियों की शिकायत के आधार पर केस दर्ज किया है। सबसे अधिक मामले बाहरी दिल्ली और सबसे कम मामले पूर्वी दिल्ली जिले में दर्ज किए गए हैं।

लॉकडाउन के उल्लंघन पर हिरासत में लिए गए 3728 लोग : लॉकडाउन का उल्लंघन करने के मामले में सोमवार को दिल्ली पुलिस ने 3728 लोगों को हिरासत में लिया। ये वे लोग थे, जो बिना किसी जायज कारण के घर से बाहर सड़कों पर निकल आए थे। इस बीच पुलिस ने 191 एफआइआर भी दर्ज की हैं। इसके अलावा 376 लोगों के वाहनों को भी जब्त कर लिया। इन लोगों को कड़ी चेतावनी भी दी गई है। इसके अलावा पुलिस की तरफ से 733 मूवमेंट पास ऑनलाइन जारी किए गए। दिल्ली पुलिस द्वारा लॉकडाउन के उल्लंघन के मामले में यह कारवाई सोमवार की शाम पांच बजे तक की गई।

नया जीवन

लॉकडाउन के कारण दिल्ली व हरियाणा की औद्योगिक इकाइयां बंद, नहीं गिर रहा रसायन, यमुना मॉनिटरिंग कमेटी ने सीपीसीबी से कहा- शोध रिपोर्ट तैयार कर बनाएं भावी योजना

यमुना के साफ पानी ने दिखाई भविष्य की राह

संजीव गुप्ता, नई दिल्ली

लॉकडाउन ने दिल्ली की मृतप्राय यमुना को नया जीवन ही नहीं दिया, बल्कि भविष्य के लिए भी नई राह दिखाई है। जिस यमुना को करोड़ों रुपये का बजट खर्च करके भी साफ नहीं किया जा सका, वह महज औद्योगिक प्रदूषण पर अंकुश से बेहतर नजर आने लगी है। यमुना के इस बदलाव को विशेषज्ञों के स्तर पर भी गंभीरता से लिया जा रहा है। इसीलिए इस पर एक अध्ययन भी शुरू हो गया है। इसी आधार पर यमुना के पुनरुद्धार की भावी योजनाएं तैयार होंगी।

यमुना की स्थिति और जल में आए इस बदलाव ने आम जन का ही नहीं, बल्कि विशेषज्ञों का भी ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। यमुना मॉनिटरिंग कमेटी की ओर से केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) को इस पर अध्ययन रिपोर्ट तैयार करने को कहा गया है ताकि यह बदलाव भविष्य में भी यमुना में सुधार का आधार बन सके। यमुना से जुड़ी योजनाएं भी इसी रिपोर्ट को आधार बनाकर तैयार की जाएंगी। इसी निर्देश के मद्देनजर सोमवार को सीपीसीबी की एक टीम ने विभिन्न स्थानों से राजधानी में यमुना के पानी के नमूने भी उठाए हैं। संभावना जताई जा रही है कि इसी सप्ताह यमुना के इस बदलाव पर प्राथमिक रिपोर्ट जारी कर दी जाएगी।

गौरतलब है कि दिल्ली में पल्ला से बदरपुर तक कुल 54 किलोमीटर तक यमुना बहती है, लेकिन वजीराबाद से ओखला के बीच 22 किलोमीटर के क्षेत्र में यह सबसे ज्यादा प्रदूषित है। यमुनोत्री से इलाहाबाद के बीच 1,370 किलोमीटर लंबी यमुना का यह हिस्सा कहने को तो थोड़ा सा है, लेकिन 76 फीसद प्रदूषण इसी हिस्से में दिखता है। वजह, पानीपत और दिल्ली की औद्योगिक इकाइयों का कचरा और रसायन युक्त पानी नालों के जरिये सीधे यमुना में गिरता है।

दिल्ली सरकार के उद्योग विभाग ने पिछले कुछ समय में सीधे नालों में गंदगी फैलाने को लेकर 900 से अधिक औद्योगिक इकाइयों पर कार्रवाई भी की थी। प्रदूषण नियंत्रण उपायों में दिल्ली के 28 औद्योगिक क्लस्टरों में से 17 को 13 कॉमन एफ्लूएंट ट्रीटमेंस प्लांट (सीईटीपी) से जोड़ा हुआ है और 11 इससे जुड़े ही नहीं हैं।

दूसरी तरफ यमुना किनारे बसी झुग्गियों में रहने वाले लोग अपने घर चले गए है। इस कारण वहां की गंदगी भी यमुना में कम जा रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक 748 एमजीडी में मात्र 90 एमजीडी पानी का शोधन हो रहा है और 290 एमजीडी यमुना में ऐसे ही गिर रहा है।

पिछले करीब दो सप्ताह से चल रहे देशव्यापी लॉकडाउन ने दिल्ली और हरियाणा की तमाम औद्योगिक इकाइयों पर भी तालाबंदी कर रखी है। नतीजा, यमुना में फिलहाल औद्योगिक कचरा और रसायन युक्त पानी बिल्कुल नहीं जा रहा है। इस दौरान बारिश भी कई बार हो चुकी है। दूसरी तरफ सूत्र बताते हैं कि हरियाणा ने हाल ही में सिंचाई का भी काफी सारा पानी यमुना में छोड़ा है। इन्हीं सबके मिश्रित परिणाम से यमुना का बहाव बढ़ा है, पहले का कचरा नीचे बैठ गया है और बह रहा पानी भी पहले की तुलना में काफी साफ नजर आ रहा है।

प्रदूषण कम होने के बाद सिग्नेचर ब्रिज के पास स्वच्छ रूप में बहती यमुना। पारस कुमार

लड़ाई लंबी पर जीतेंगे हम : मोदी

भाजपा स्थापना दिवस ▶ कहा, कोविड-19 से लड़ाई में डब्लूएचओ भी कर रहा भारत की प्रशंसा

कार्यकर्ताओं को दिए पांच टास्क, भाजपा अध्यक्ष ने कहा- पूरा करेंगे

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

भाजपा की 40वें स्थापना दिवस के मौके पर सोमवार को पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करने के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। एएनआइ

कोरोना से जंग के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लंबी लड़ाई का संकेत देते हुए भाजपा कार्यकर्ताओं को पांच टास्क दिए हैं। इसमें गरीबों के लिए भोजन, पानी और राशन से लेकर पीएम केयर्स फंड में खुद के साथ साथ 40 अन्य लोगों से सहयोग करवाने जैसे निर्देश हैं। भाजपा की ओर से पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने भरोसा दिलाया है कि पार्टी कार्यकर्ता प्रधानमंत्री के सभी निर्देशों को पालन करेंगे।

सोमवार को भाजपा के स्थापना दिवस पर वीडियो के जरिये ही कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने परोक्ष रूप से नेताओं को यह भी संदेश दे दिया कि अगर विपक्ष सरकार के कदमों पर सवाल उठाए तो तथ्यों के साथ उसका जवाब दें। मालूम हो कि पिछले दिनों में विशेषकर कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी, राहुल गांधी सरीखे नेताओं की ओर से कुछ सवाल उठाए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'जब तमाम देश कोरोना की भयावहता का अंदाजा लगाने का प्रयास कर रहे थे तब भारत एक के बाद एक अनेक फैसले जमीन पर उतार चुका था। भारत ने जितनी गति और समग्रता से काम किया उसकी डब्लूएचओ भी प्रशंसा कर रहा है।' प्रधानमंत्री ने यह जरूर कहा कि लड़ाई लंबी है, लेकिन भारत में इससे जीतने की क्षमता भी है और संकल्प भी। जनता कर्फ्यू से लेकर रविवार को नौ मिनट दीप जलाकर जनता ने यह दिखाया है कि वह कितने अनुशासन के साथ एक लक्ष्य लेकर सामूहिक बल के साथ लड़ने को तैयार है।

कोरोना से लड़ाई में पीएम केयर्स फंड की जरूरत को देखते हुए यूं तो सरकार के स्तर पर भी फैसले लिए जा रहे हैं, लेकिन प्रधानमंत्री ने भाजपा कार्यकर्ताओं से विशेष भूमिका की अपेक्षा की। उन्होंने हर कार्यकर्ता को भी इसमें योगदान देने के कहा और अन्य 40 को इसके लिए तैयार करने की अपेक्षा भी जताई। ध्यान रहे कि भाजपा सदस्यों की संख्या ही लगभग 18 करोड़ है जबकि सक्रिय सदस्यों की संख्या भी करोड़ों में है। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा की ओर से पहले ही यह निर्देश दिया गया था कि सभी सदस्य कम से कम सौ रुपये का योगदान करें। प्रधानमंत्री ने कोरोना संक्रमण से सतर्क रहने के लिए बनाए गए 'आरोग्य एप' को भी 40 लोगों के मोबाइल में इंस्टाल कराने का निर्देश दिया है। यह एप कोरोना संक्रमित व्यक्ति के नजदीक आने पर अलर्ट करता है। तीसरा आग्रह डॉक्टर, नर्स, सफाई कर्मचारी जैसे आवश्यक सेवाओं से जुड़े लोगों के लिए धन्यवाद मैसेज है। मास्क कोरोना वायरस से बचाव के लिए अहम माना जा रहा है। ऐसे में प्रधानमंत्री ने खुद के साथ-साथ छह-सात अन्य लोगों के लिए मास्क वितरण का निर्देश दिया। यह सुनिश्चित करने को भी कहा कि हर कार्यकर्ता यह देखे कि उनके आसपास कोई भी भूखा न रहे।

प्रधानमंत्री के संबोधन के तत्काल बाद नड्डा ने भरोसा जताया कि पार्टी हर निर्देश को अमलीजामा पहनाएगी। ध्यान रहे कि भाजपा की ओर से पहले ही रोजाना पांच करोड़ लोगों को खाना देने की एक योजना चल रही है जो 14 अप्रैल तक लागू रहेगी।

सांसद निधि निलंबन के सवाल पर कांग्रेस नेताओं में मतभेद

संजय मिश्र, नई दिल्ली

- पार्टी रुख से अलग जयराम रमेश ने सरकार के फैसले का किया स्वागत
- रमेश पर भड़के कांग्रेस के लोकसभा सांसद

कोरोना महामारी से लड़ाई के लिए सांसद निधि को दो साल स्थगित करने के फैसले पर कांग्रेस के अंदर मतभेद खुले तौर पर सामने आ गए हैं। पार्टी ने आधिकारिक रूप से जहां इस पर एतराज उठाया है। वहीं वरिष्ठ कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने एमपीलैड के स्थगन का समर्थन किया है। जबकि जयराम के इस रुख से इतर पार्टी के तमाम लोकसभा सांसदों ने सोशल मीडिया पर एमपीलैड को स्थगित करने को तमाम संसदीय क्षेत्रों की जनता के खिलाफ बताया है। कांग्रेस सांसद कार्ति चिदंबरम ने तो जयराम रमेश पर सीधा हमला करते हुए कहा कि जिन लोगों ने कभी चुनाव न लड़ा हो वही ऐसी बात कर सकता हे।

सांसद निधि के स्थगन को लेकर लोकसभा में विपक्षी सदस्यों के एतराज का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदंबरम के बेटे और लोकसभा सांसद कार्ति चिदंबरम ने अपनी ही पार्टी के थिंक-टैंक और हाईकमान के करीबी माने जाने वाले जयराम रमेश की खुले तौर पर जबरदस्त खिंचाई की। जयराम ने सरकार के फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि वे पहले से कहते रहे हैं कि इस 7000 करोड़ रुपये का इस्तेमाल सरकारी खर्च पर चुनाव कराने के लिए किया जाना चाहिए।

कार्ति ने जयराम के इस टवीट पर सीधे उन्हें जवाब देते हुए कहा कि ऐसी बात वही कर सकता है जिसने कभी चुनाव न लड़ा हो और उसे कभी जनता को सीधे जवाब नहीं देना पड़ा हो। जयराम पर तंज कसते हुए कार्ति ने कहा कि शहरी मानसिकता वाले लोग इसका स्वागत कर रहे हैं वे उनके संसदीय क्षेत्र शिवगंगा में आकर देखें कि सांसद निधि स्थानीय स्तर पर लोगों के लिए कितना लाभकारी है। वैसे जयराम का रुख पार्टी के आधिकारिक नजरिये से भी मेल नहीं खाता क्योंकि रणदीप सुरजेवाला ने कांग्रेस की ओर से सांसद निधि के दो साल के निलंबन को वापस लेने की मांग की है। जयराम की तरह पार्टी के दूसरे राज्यसभा सांसद अभिषेक सिंघवी भी धीमे सुर में एमपीलैड के निलंबन का समर्थन करते हुए दिखे और कहा कि शायद ऐसा करना जरूरी हो। हालांकि इसके विपरीत कांग्रेस के तमाम लोकसभा सांसद मनीष तिवारी, शशि थरूर, कार्ति चिदंबरम, तरुण गोगोई और मणिक्कम टैगोर ने जयराम के रुख से उलट सोशल मीडिया पर खुलकर एमपीलैड के स्थगन का विरोध किया। शशि थरूर ने तो बिना देरी किए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि बेशक एमपीलैड की यह राशि कोरोना महामारी से लड़ाई में खर्च की जाए मगर यह स्थानीय स्तर पर सांसदों के इलाके में ही हो और इस राशि को केंद्र की समेकित निधि में शामिल करने के फैसले पर पुनर्विचार हो।

न्यूज गैलरी

'मानसिक स्वास्थ्य हेल्पलाइन स्थापित करें विवि व कॉलेज'

नई दिल्ली : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने सभी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को छात्रों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं को दूर करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य हेल्पलाइन की स्थापना के निर्देश दिए हैं। यूजीसी सचिव रजनीश जैन की तरफ से कुलपतियों को भेजे गए पत्र के अनुसार, 'कोरोना संक्रमण के कारण जारी देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और मनोवैज्ञानिक चिंताओं का निवारण बहुत जरूरी है, इसलिए विवि और कॉलेज मौजूदा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए छात्रों के किसी भी प्रकार के तनाव और भय को दूर करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य हेल्पलाइन की स्थापना करें।' (प्रेट्र)

अगस्ता मामले में मिशेल की याचिका पर फैसला सुरक्षित

नई दिल्ली : अगस्ता वेस्टलैंड मामले में आरोपित बिचौलिए क्रिश्चियन मिशेल की अंतरिम जमानत याचिका पर दिल्ली हाई कोर्ट ने सोमवार को फैसला सुरक्षित रख लिया। वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से न्यायमूर्ति मुक्ता गुप्ता ने मिशेल के अधिवक्ता के साथ ही सीबीआइ और प्रवर्तन निदेशालय का पक्ष सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया। (जासं)

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- सभी अदालतें वीडियो कांफ्रेंसिंग से करें सुनवाई

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- कोरोना महामारी के चलते सुप्रीम कोर्ट ने जारी किए दिशा-निर्देश
- अदालतें सुनिश्चित करें कि परिसर संक्रमण फैलने का जरिया न बने

सोमवार को सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश एसए बोबडे (बीच में) की पीठ वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये सुनवाई करती हुई। एएनआइ

कोरोना महामारी के चलते सुप्रीम कोर्ट ने शारीरिक दूरी बनाए रखने और अदालतों में भीड़ नहीं जुटाने की बात कहते हुए देश की सभी अदालतों को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये सुनवाई करने के निर्देश दिए हैं। सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत प्राप्त विशेष शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए लॉकडाउन के चलते उत्पन्न स्थिति में वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये सुनवाई के बारे में दिशा-निर्देश जारी किए हैं।

ये दिशा-निर्देश मुख्य न्यायाधीश एसए बोबडे, डीवाई चंद्रचूड़ और एल नागेश्वर राव की पीठ ने दिए। कोर्ट ने कहा कि महामारी से उपजी विकट स्थिति में जरूरी है कि अदालतें हर स्तर पर शारीरिक दूरी का पालन कर सुनिश्चित करें कि अदालत परिसर संक्रमण फैलने का जरिया न बने। पीठ ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट ने अदालत परिसर में लोगों की शारीरिक उपस्थिति कम करने के लिए जो नियम बनाए हैं, वे सभी कानूनी माने जाएंगे। सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये न्यायिक कार्य के लिए जरूरी कदम उठाने को अधिकृत हैं। मौजूदा स्थिति और जन स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए प्रत्येक हाई कोर्ट वीडियो कांफ्रेंसिंग से सुनवाई के अस्थायी तौर-तरीके तय कर सकता है। संबंधित कोर्ट इस बारे में एक हेल्पलाइन भी बनाएगा, जिसमें वीडियो कांफ्रेंसिंग के दौरान सुनाई देने आदि के बारे में शिकायत की जा सके। इस संबंध में कोई भी शिकायत सुनवाई के दौरान या उसके तुरंत बाद ही सुनी जाएगी।

सुप्रीम कोर्ट ने आदेश में कहा है कि प्रत्येक राज्य की जिला अदालतें संबंधित हाई कोर्ट के तय नियमों के मुताबिक वीडियो कांफ्रेंसिंग से सुनवाई करेगी। अगर किसी केस में जरूरी हो तो अदालत एमीकस क्यूरी नियुक्त कर सकती है और उस वकील के जरिये वीडियो कांफ्रेंसिंग की सुविधा उपलब्ध करा सकती है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि जब तक संबंधित हाई कोर्ट इस संबंध में उचित नियम नहीं बनाता ट्रायल और अपीलीय दोनों स्तरों पर वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये बहस होगी। किसी भी मामले में दोनों पक्षों की सहमति के बगैर वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये गवाही या साक्ष्य दर्ज नहीं किए जाएंगे। अगर अदालत कक्ष में साक्ष्य दर्ज करना जरूरी हो तो पीठासीन जज दो लोगों के बीच उचित दूरी बनाए रखने का ध्यान रखेंगे। पीठासीन जज को अदालत कक्ष में लोगों का प्रवेश नियंत्रित करने का अधिकार होगा।

विपक्षी पार्टियां एमपीलैड के स्थगन के खिलाफ

फंड पर खींचतान

- कांग्रेस ने कहा-सांसद निधि के निलंबन से स्थानीय जनता को दिक्कत
- माकपा, तृणमूल कांग्रेस और आप ने भी किया विरोध

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

विपक्षी दलों ने कोरोना महामारी से मुकाबले के लिए मंत्रियों-सांसदों के वेतन में कटौती का तो समर्थन किया है। मगर सांसद निधि फंड को दो साल के लिए स्थगित करने का विरोध किया है। इन दलों का कहना है कि एमपीलैड को निलंबित करने से स्थानीय स्तर पर कोरोना जैसी महामारी या अन्य प्राकृतिक आपदा ही नहीं जनता से जुड़े छोटे-मोटे विकास कार्यों का रास्ता बंद हो जाएगा। कांग्रेस ने कहा है कि सांसद निधि बंद करने के बजाय केंद्र सरकार को अपने गैरजरूरी खर्च में कटौती कर इस रकम को कोरोना से लड़ाई में लगाना चाहिए।

कांग्रेस मीडिया विभाग के प्रमुख रणदीप सुरजेवाला ने कहा कि कोरोना से लड़ने का संसाधन जुटाने के लिए सांसदों के वेतन में पचास फीसद तक कटौती कर लेते तो इसमें कोई दिक्कत नहीं होती। लेकिन एमपीलैड सांसदों का कोई निजी कोष नहीं होता बल्कि स्थानीय स्तर पर यह जनता की भलाई के कार्यों के लिए होता है।

सुरजेवाला ने कहा कि इसे निलंबित करने से जहां एक ओर स्थानीय स्तर पर जनता के जरूरी विकास कार्य रूक जाएंगे वहीं सांसदों की भूमिका पर भी प्रश्नचिन्ह लग जाएगा। अगर देश के सांसदों की आवाज ही चली गई तो लोकतंत्र में संसद की प्रभावी भूमिका भी कम हो जाएगी।

कांग्रेस की मांग है कि सांसद निधि को बहाल किया जाए। कांग्रेस के दूसरे नेता मनीष तिवारी ने भी वेतन में कटौती का समर्थन किया मगर सांसद निधि को निलंबित करने के फैसले को जनता के हितों के खिलाफ करार दिया। माकपा महासचिव सीताराम येचुरी ने कहा कि मोदी सरकार ने देश को कोरोना से पहले ही आर्थिक मुश्किलों में ला खड़ा किया था और सरकारी धन का दुरुपयोग गैरजरूरी प्रचार और कामों में किया। सरकार अपनी नाकामी छुपाने के लिए इस तरह का विकल्प अपना रही है। तृणमूल कांग्रेस ने भी बयान जारी कर एमपीलैडस को दो साल के लिए स्थगित करने का विरोध किया।

आम आदमी पार्टी के प्रवक्ता संजय सिंह ने भी कहा कि सरकार का यह फैसला अनुचित है और यह कदम उठाने से पहले सांसदों से मशविरा करना चाहिए था।

सांसदों का वेतन

वेतन	भत्ते - राशि
मूल वेतन	1,00,000 रुपये प्रतिमाह
चुनाव क्षेत्र भत्ता	70,000 रुपये प्रतिमाह
ऑफिस खर्च भत्ता	60,000 रुपये प्रतिमाह
फर्नीचर भत्ता	1,00,000 रुपये (पांच साल में एक बार)
कटौती	30,000 रुपये प्रतिमाह (मूल वेतन का 30 फीसद)

लॉकडाउन में भारत ने राजनीति व धर्म के बिना जीना सीखा : माधवन नायर

- कहा, हर चुनाव के बाद अपनाया जाना चाहिए ऐसा ही रुख

बेंगलुरु, प्रेट्र : देश के प्रख्यात वैज्ञानिक और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के पूर्व चेयरमैन जी. माधवन नायर ने कहा है कि लॉकडाउन में देश ने राजनीति और धर्म के बिना जीना सीख लिया है। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

माधवन नायर ने कहा कि यह ट्रेंड जारी रहना चाहिए, हर चुनाव के बाद राजनीतिक गतिविधियां पृष्ठभूमि में चली जानी चाहिए और हर व्यक्ति को राष्ट्र निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। कोविड-19 पर उन्होंने कहा कि पृथ्वी पर ऐसे कई वायरस निष्क्रिय अवस्था में रहते हैं और जब स्थितियां अनुकूल होती हैं तो वे सक्रिय हो जाते हैं। अगर आप पिछली तीन सदियों या उससे पीछे के समय को देखें तो हर सौ वर्ष में एक बार कुछ न कुछ जरूर फैलता है। इसलिए यह प्राकृतिक घटना है। इसमें सतर्क रहने की जरूरत है।

राष्ट्र निर्माण में भी दिखानी होगी ऐसी एकजुटता : नायर ने कहा कि कोरोना वायरस के प्रसार के खिलाफ लड़ाई में भारतीयों ने जाति, पंथ और राजनीतिक विचारधारा से ऊपर उठकर अपनी एकजुटता दिखाई है।

जी. माधवन नायर फाइल फोटो

राष्ट्र निर्माण में भी यही रुख अपनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वायरस का प्रसार रोकने के लिए लागू किए जा रहे विभिन्न कदमों को बड़े पैमाने पर नौकरशाही द्वारा संचालित किया जा रहा है जिसने इस मौके पर बहुत बढ़िया काम किया है। यही भावना बरकरार रखनी होगी।

स्वदेशीकरण कार्यक्रम के लिए अच्छा समय : भारत में बहुत बड़े घरेलू बाजार का उल्लेख करते हुए पूर्व इसरो प्रमुख जी. माधवन नायर ने स्वदेशीकरण कार्यक्रम पर जोर देने की वकालत की जो पिछले कुछ समय से विदेश में आसानी से उपलब्ध वस्तुओं की वजह से पृष्ठभूमि में चला गया था। नायर ने कहा, 'भारतीय उद्योगों और अनुसंधान प्रयोगशालाओं के लिए अब समय है कि वे स्वदेशीकरण अभियान को तेज गति प्रदान करें।'

बिचौलियों का खात्मा देश के लिए अच्छा

नायर ने कहा कि लोगों के लिए कोविड-19 राहत पैकेज लाने में भारत बिचौलियों को खत्म करने में सफल रहा है। उन्होंने कहा, 'पहले सभी तरह की आर्थिक सहायता बिचौलियों के हाथों में चली जाती थी और वे लोग उसके लाभों से वंचित हो जाते थे जिन तक उसे पहुंचना होता था। इसलिए यह प्रक्रिया (बिचौलियों के खात्मे की) अगर जारी रहती है तो यह निश्चित तौर पर देश के लिए अच्छी है।'

उपज बेचने में किसानों की मदद करें

प्रथम पृष्ठ से आगे

प्रधानमंत्री ने मंत्रियों से यह भी कहा, 'उन स्थानों पर विभागों को धीरे-धीरे खोलने के लिए एक श्रेणीबद्ध योजना बनाई जानी चाहिए जहां हॉटस्पॉट मौजूद नहीं हैं।' देश के ग्रामीण क्षेत्रों में इन दिनों फसलों की कटाई शुरू हो चुकी है। इसके बाद उपज बेचने की बारी आएगी। इसके मद्देनजर प्रधानमंत्री ने अपने मंत्रियों को इसमें किसानों का सहयोग करने की अपील की। इसके तहत मंडियों से किसानों को जोड़ने के लिए एप आधारित कैब सेवाओं की तर्ज पर 'ट्रक एग्रीगेटर्स' जैसे नए समाधान की संभावनाएं तलाशें। लॉकडाउन उपाय के साथ शारीरिक दूरी बनाए रखने के मानदंडों पर एक साथ अमल करने की जरूरत पर बल देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि लॉकडाउन समाप्त होने पर प्रत्येक मंत्रालय के लिए 10 प्रमुख निर्णयों और फोकस वाले 10 प्राथमिकता के क्षेत्रों की पहचान करनी जरूरी है। उन्होंने कहा कि सभी मंत्रालय इसे चुनौती के रूप में स्वीकार कर आगे बढ़ें। बैठक में मंत्रियों ने कोरोना महामारी के प्रभावों की चुनौतियों का जिक्र करने के साथ ही उन चुनौतियों से निपटने के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी दी।

देशभर में लागू हो सकता है कोरोना से बचाव का 'भीलवाड़ा माडॅल'

जागरण संवाददाता, जयपुर

राजस्थान के भीलवाड़ा में कोरोना वायरस से निपटने को लेकर अपनाई गई नीति पूरे देश में लागू हो सकती है । केंद्रीय कैबिनेट सचिव राजीव गौबा ने प्रदेश के मुख्य सचिव डीबी गुप्ता से इसको लेकर विस्तृत जानकारी मांगी। इस बारे में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और चिकित्सा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत करा दिया गया है।

गुप्ता ने बताया कि कैबिनेट सचिव गौबा ने कोरोना से बचाव के लिए भीलवाड़ा में किए गए उपायों की तारीफ करते हुए इस मॉडल को देशभर में लागू करने के संकेत दिए है। वहीं केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों ने भी इस बारे में प्रदेश में चिकित्सा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव रोहित कुमार सिंह से जानकारी मांगी है। प्रदेश के चिकित्सा मंत्री डॉ.रघु शर्मा ने बताया कि भीलवाड़ा में कोरोना का प्रकोप मार्च के तीसरे सप्ताह में एक साथ फैला तो सरकार ने घर-घर स्क्रीनिंग शुरू की। इस दौरान 18 लाख लोगों की जांच की गई । इसके लिए 15 हजार टीमें बनाई गई थीं। पहले लॉकडाउन और फिर कर्फ्यू का सख्ती से पालन किया गया । पॉजिटिव पाए गए लोगों को तत्काल आइसोलेट किया गया । क्वारंटाइन किए गए लोगों के घरों के बाहर पुलिस का पहरा लगा दिया, जिससे वे बाहर नहीं निकल सकें। शर्मा ने बताया कि इससे पहले जयपुर के एसएमएस अस्पताल में कोरोना पॉजिटिव मरीजों के इलाज को लेकर यहां के चिकित्सकों ने जो दवाइयां काम में ली थीं, उनके बारे में भी केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने जानकारी मांगी थी । उन दवाइयों के कारण कई मरीज स्वस्थ्य हुए हैं।

किसी को नहीं दिया प्रवेश : भीलवाड़ा में जब हालात बिगड़े तो लॉकडाउन का सख्ती से पालन किया गया। इस दौरान जनप्रतिनिधियों, मीडियाकर्मियों और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों को भी शहर में प्रवेश नहीं दिया गया। जिला प्रशासन और पुलिस के भी कुछ ही अधिकारी शहर में गए। लोगों को शारीरिक दूरी का पालन करवाने पर जोर दिया गया। डॉक्टर्स और पैरामेडिकल स्टाफ ने अपना मनोबल ऊंचा रखा। इसका असर भी दिखा और कई संक्रमित मरीज ठीक हो गए ।

अनुराग श्रीवास्तव ने विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता का प्रभार संभाला

नई दिल्ली, प्रेट्र : वरिष्ठ राजनयिक अनुराग श्रीवास्तव ने विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता का प्रभार संभाल लिया है। उन्होंने रवीश कुमार की जगह ली है। भारतीय विदेश सेवा में 1999 बैच के अधिकारी इससे पहले इथोपिया में भारत के राजदूत थे।

अनुराग श्रीवास्तव। फाइल

प्रभार संभालने के बाद अनुराग ने ट्वीट किया, 'एटएमईएंडिया के अधिकृत प्रवक्ता का प्रभार संभाल कर सम्मान और गौरव का अनुभव कर रहा हूं। इस नई भूमिका में अपनी सभी जिम्मेदारी पूरी करने के लिए काम करने की इच्छा रखता हूं।' इथोपिया में भारतीय राजदूत नियुक्त होने से पहले अनुराग विदेश मंत्रालय के वित्त डिवीजन के प्रबंधन का काम कर रहे थे। इसी विभाग पर करोड़ों रुपये के सालाना बजट के प्रशासन का भार है। अनुराग जेनेवा में संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी दूत की भी भूमिका निभा चुके हैं। वहां उन्होंने मानवाधिकार से संबंधित काम, शरणार्थी मुद्दे और व्यापार नीति पर काम किया।

बदलाव

प्रतिवर्ष चयनित स्वयंसेवकों के लिए लगता है प्रशिक्षण शिविर, इस बार पूरे देश में 92 से अधिक स्थानों पर लगना था शिविर, कोरोना संक्रमण को केंद्र में रख जून तक नहीं होंगे सामूहिक कार्यक्रम

आरएसएस ने पहली बार अपने संघ शिक्षा वर्ग को किया स्थगित

संजय कुमार, रांची

कोरोना वायरस जैसी महामारी से निपटने में प्रशासन और समाज का सहयोग कर रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जून तक अपने सभी कार्यक्रमों को स्थगित कर दिया हैं। यह पहली बार है कि प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष के संघ शिक्षा वर्ग को स्थगित कर दिया गया है। 20 से 25 दिनों तक चलने वाले इस प्रशिक्षण शिविर का आयोजन इस बार 92 से अधिक स्थानों पर होना था। 23 हजार से अधिक स्वयंसेवक इसमें भाग लेने वाले थे।

आरएसएस के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेंद्र ठाकुर ने दैनिक जागरण से कहा कि अभी अधिकतर स्वयंसेवक पूरे देश में राहत कार्य चलाने में लगे हैं। आगे कैसी परिस्थिति बनेगी, कहा नहीं जा सकता है। इसलिए इस बार प्रशिक्षण शिविर, योजना बैठक सहित सभी कार्यक्रम स्थगित कर दिए गए हैं। बताते चलें कि संघ अपने स्वयंसेवकों को शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक दृष्टि से प्रशिक्षित करने के लिए प्रतिवर्ष संघ शिक्षा वर्ग लगाता है। पिछले बार 19000 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया था। यह काम 1929 से चल रहा है।

तृतीय वर्ष के समापन समारोह में पूर्व राष्ट्रपति भी हुए थे शामिल : एक सप्ताह का प्राथमिक शिक्षा वर्ग करने वाले स्वयंसेवकों को प्रथम वर्ष के शिविर में भेजा जाता है, जो सभी प्रांतों में लगता है। प्रथम वर्ष प्रशिक्षित को द्वितीय वर्ष के शिविर में भेजा जाता है जिसमें दो से तीन राज्य से स्वयंसेवक भाग लेते हैं। द्वितीय वर्ष प्रशिक्षित स्वयंसेवक को तृतीय वर्ष में भेजा जाता है जो केवल आरएसएस के मुख्यालय नागपुर में ही लगता है। इसमें पूरे देश के स्वयंसेवक भाग लेते हैं। 2018 के तृतीय वर्ष के प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी भी शामिल हुए थे।

अप्रैल से शुरू होकर जून तक चलता है शिविर : संघ शिक्षा वर्ग का आयोजन सभी राज्य अपने यहां के मौसम को ध्यान में रखते हुए करते हैं। जहां मॉनसून पहले आता है वहां पहले इसका आयोजन किया जाता है। केरल, तमिलनाडु जैसे राज्यों में 15 अप्रैल से ही इसकी शुरुआत होनी थी। वहीं पंजाब में जून में आयोजित किया जाता है। इस शिविर में 20 दिनों तक स्वयंसेवक कड़ी मेहनत करते हैं। सुबह 4 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक उनका प्रशिक्षण चलता है।

25 सेवा कार्य चला रहा संघ

प्रथम पृष्ठ से आगे

सह सरकार्यवाह मनमोहन वैद्य ने कहा कि देश में आई इस विपदा की घड़ी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक रात दिन जरूरतमंदों की मदद को आगे आ रहे हैं। इस समय देश भर में 26 हजार स्थानों पर संघ के दो लाख स्वयंसेवक सेवा कार्यों में लगे हैं। इन सेवा कार्यों से अबतक 25 लाख से अधिक परिवारों को लाभ मिला है। इसके तहत 25 प्रकार के सेवा कार्य चल रहे हैं। कई स्थानों पर हेल्पलाइन नंबर जारी किए गए हैं। इन सेवा कार्यों में लोगों को भोजन, चिकित्सा सुविधा और दूसरी तरह की सेवाएं मुहैया कराई जा रही हैं।

वैद्य ने कहा कि भोजन कराने के साथ-साथ देश में कई जगहों पर कोरोना से बचाव के लिए सेफ्टी ड्रेस का निर्माण किया जा रहा है। कई स्वयंसेवक परिवार मास्क बनाकर भी दे रहे हैं। लोगों को सुरक्षा के लिए आयुर्वेदिक काढ़ा और होम्योपैथिक दवाइयां भी दी जा रही हैं। अलग-अलग स्थानों पर दूध- सब्जी फल भी उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा, सेवा के इस कार्य में सेवा भारती, राष्ट्र सेविका समिति, विद्या भारती, भारतीय मजदूर संघ, वनवासी कल्याण आश्रम, विद्या भारती, सक्षम, नेशनल मेडिकल आर्गनाइजेशन, भाजपा, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारतीय किसान संघ, आरोग्य भारती, हिंदू जागरण मंच, जैसी संस्थाएं भी सहयोग कर रही हैं।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

4
दैनिक जागरण
मंगलवार 7 अप्रैल 2020
www.jagran.com

बरेली में पुलिस पर हमला, सीओ सहित चार पुलिसकर्मी घायल

करतूत ▶ तब्लीगियों की खोज में गई थी पुलिस, युवक को पकड़ने पर बेकाबू हुई भीड़

प्रधान की अगुआई में चौकी पर हमला कर जलाने का प्रयास

जागरण संवाददाता बरेली

दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी जमात में शामिल लोगों की तलाश में उप्र के बरेली में एक युवक को पकड़ कर लाने पर भीड़ बेकाबू हो गई। प्रधान की अगुआई में चौकी पर हमला कर जलाने का प्रयास किया। पुलिस ने समझाने का प्रयास किया तो ग्रामीण उनसे उलझने लगे और हमला कर दिया। इस घटना में सीओ और चार पुलिसकर्मी घायल हो गए। इसके बाद भीड़ को नियंत्रित करने के लिए लाठीचार्ज किया गया। सात महिलाओं सहित 43 लोगों को पकड़ा गया है। सभी पर मुकदमा दर्ज किया जा रहा है। उन पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत भी कार्रवाई होगी।

बरेली के थाना इज्जतनगर क्षेत्र के गांव करमपुर चौधरी में सोमवार को दो सिपाही तब्लीगी जमात के लोगों की जांच के लिए गए थे। वहां पर एक खेत में कुछ लोग जमा थे, जिन्हें देख पुलिसकर्मियों ने घर जाने को कहा। इनमें से एक युवक ने बहस की तो पुलिसकर्मी उसे थाने ले जाने लगे। बाइक पर बैठाते ही युवक बेहोश हो गया। ग्रामीणों ने उसे छोड़ने की बात कही तो सिपाही युवक को छोड़कर बैरियर वन चौकी पर आ गए। इसके कुछ देर बाद ही ग्राम प्रधान के नेतृत्व में तीन-चार सौ ग्रामीण बैरियर वन चौकी पर पहुंच गए। उन्होंने सिपाही पर युवक को लाठी मारकर बेहोश करने का आरोप लगाया। पुलिस ने सभी से लॉकडाउन का पालन करने और घर जाने के लिए कहा। इस पर ग्रामीण भड़क गए और हंगामा करने लगे। मौके पर पहुंचे सीओ तृतीय अभिषेक वर्मा ने भी लोगों को समझाया लेकिन वे मानने को तैयार नहीं थे। जब पुलिस ने ग्रामीणों पर दबाव बनाया तो वे हमलावर हो गए और चौकी में आग लगाने का प्रयास किया। इसके बाद पुलिस ने वहां मौजूद ग्रामीणों पर लाठियां फटकार कर खदेड़ा। इस दौरान जो हत्थे चढ़ा पुलिस ने उसे जमकर पीटा। बाद में एसपी सिटी रविंद्र कुमार के नेतृत्व में पुलिस ने गांव पहुंचकर हंगामा कर रहे लोगों की तलाश शुरू की। पुलिस करीब 43 लोगों को अब तक पकड़ चुकी है और अन्य की तलाश जारी है। घटनास्थल पर पहुंचे डीआइजी राजेश पांडे ने बताया कि पुलिस पर हमला करने वालों पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (एनएसए) के तहत कार्रवाई की जाएगी। हमले में हेड कांस्टेबल मनोज, अजय और सिपाही राजीव कुमार, अंकित कुमार को चोट आई है।

बरेली में हमला करने वालों को पकड़कर ले जाती पुलिस। हमले में कई पुलिसकर्मी घायल हो गए थे। जागरण

जमातियों के संपर्क में आए 2500 लोगों में संक्रमण का खतरा

जासं, मेरठ : पश्चिमी उप्र के मेरठ व आसपास के जिलों (सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, शामली, बागपत, बिजनौर व बुलंदशहर) में मिले चौबीस सौ से अधिक जमातियों में से 1791 जमातियों के संपर्क में 2500 लोग आ चुके हैं। इनमें 28 जमाती कोरोना पॉजिटिव मिले हैं। जमातियों के संपर्क में आए लोगों में भी संक्रमण का खतरा बना है। एसटीएफ और एटीएस ने जमातियों के घूमने की लोकेशन निकाली तो पुलिस तह तक पहुंच सकी। ज्यादातर लोगों को घरों में क्वारंटाइन किया जा रहा है। कोरोना पॉजिटिव जमातियों के संपर्क में आए लोगों की जांच की जा रही है। दिल्ली के निजामुद्दीन मरकज से लौटे जमातियों ने पूरे प्रदेश की हालत खराब कर दी है। सात जनपदों में कुल 2400 से ज्यादा जमाती पुलिस के रिकार्ड में आ चुके हैं।

कश्मीरियों के संपर्क में आने वालों की तलाश : दिल्ली के निजामुद्दीन में हुए तब्लीगी जमात के कार्यक्रम में शिरकत करने से कोरोना संक्रमण फैलने के बाद हर स्तर से छानबीन हो रही है। इसी सिलसिले में रेल मंत्रालय की ओर से डेढ़ सौ लोगों की सूची सभी राज्यों को भेजी गई है। दरअसल, ये लोग 18 मार्च को दिल्ली से जम्मू जा रही झेलम एक्सप्रेस में सफर कर रहे थे। ये जिस कोच में थे, उसी में कोच नंबर एस-10 में कश्मीर के पुलवामा जिले के राजपोरा क्षेत्र का युवक भी सवार था।

मौलाना साद के मेवात में छिपे होने की जताई जा रही आशंका

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

28 मार्च को मरकज से अन्य छह मौलानाओं के साथ हुआ था फरार

▶ नाकामी छिपाने के लिए पुलिस बना रही कोरोना का बहाना

निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज के प्रमुख मौलाना साद और अन्य की गिरफ्तारी क्राइम ब्रांच के लिए बड़ी चुनौती साबित होने जा रही है। सूत्रों के मुताबिक साद दिल्ली से बाहर निकल गया है। आशंका जताई जा रही है कि अब वह मेवात पहुंच चुका है, जो उसका गढ़ है।

पुलिस की क्राइम ब्रांच ने मौलाना मुहम्मद साद, मुहम्मद अशरफ, मुफ्ती शहजाद, डॉ. जीशान, मुर्शलीन सैफी, मुहम्मद सलमान व यूनुस के खिलाफ आपराधिक षड्यंत्र सहित विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। ये सभी आरोपित 28 मार्च को ही मरकज से फरार हो गए थे। क्राइम ब्रांच लगातार इनके ठिकाने की तलाश में जुटी है, लेकिन कोई खास सफलता नहीं मिली है। इस बीच साद का एक वीडियो वायरल होने के बाद उसके दिल्ली में ही छिपे होने का अनुमान लगाया गया था। पुलिस सूत्रों के अनुसार साद मेवात पहुंच गया है, जो उसका मजबूत गढ़ माना जाता है। यह भी दावा किया जा रहा है कि अपनी विफलता को छिपाने के लिए ही पुलिस कोरोना संक्रमण की वजह से उसको गिरफ्तार नहीं करने की बात कर रही है। हालांकि हकीकत यह है कि एक सप्ताह से अधिक समय बीत जाने के बावजूद पुलिस उसके ठिकाने का ही पता नहीं लगा सकी है और लगातार अंधेरे में ही हाथ पैर मार रही है।

मुस्लिम संगठनों के समझाने के बावजूद साद ने किया कार्यक्रम : मरकज में आयोजित कार्यक्रम को लेकर क्राइम ब्रांच को चौंकाने वाली जानकारी मिली है। सूत्रों के मुताबिक मौलाना साद को मुस्लिम संगठनों ने कार्यक्रम का आयोजित करने से मना किया था। कोरोना के संक्रमण के खतरे से भी आगाह किया गया था। इसके बावजूद उसने एक दिन के कार्यक्रम को न सिर्फ एक दिन और बढ़ाया, बल्कि देश-विदेश से हजारों लोगों को आमंत्रित भी किया। ऐसे में आशंका है कि कहीं किसी बड़ी साजिश के तहत यह कार्यक्रम तो आयोजित नहीं किया गया। हालांकि, अब इस राज से पर्दा तो साद व उसके साथियों की गिरफ्तारी के बाद ही उठ सकेगा।

क्राइम ब्रांच ने दूसरी बार भेजा नोटिस : क्राइम ब्रांच ने सोमवार को मौलाना मुहम्मद साद को दूसरी बार नोटिस भेजकर कुछ सवालों के जवाब मांगे हैं। पांच दिन पूर्व भी क्राइम ब्रांच ने साद व प्रबंधन से जुड़े मौलानाओं को नोटिस भेजा था। इसमें 26 सवालों के जवाब मांगे थे।

दिल्ली पुलिस के निशाने पर मुफ्ती गली

जागरण संवाददाता, सहारनपुर : कोरोना की जंग को कमजोर करने के आरोपों से घिरे तब्लीगी मरकज के प्रमुख मौलाना साद की तलाश में दिल्ली पुलिस तेजी से जुटी है। सहयोग के लिए उत्तर प्रदेश पुलिस को भी लगाया गया है। सहारनपुर के मोहल्ला मुफ्ती में मौलाना साद की ससुराल है। यहां स्थानीय पुलिस गोपनीय ढंग से निगाह बनाए हुए है।

सूत्रों के अनुसार, मौलाना साद के कई करीबियों के मोबाइल फोन भी सर्विलांस पर हैं। यह भी बताया जा रहा है कि सहारनपुर में कई रिश्तेदारियों की वजह से यहां मौलाना की संपत्ति भी हो सकती है। पुलिस गोपनीय तरीके से इसकी भी जांच में जुट गई है।

दिल्ली के निजामुद्दीन मरकज से विभिन्न राज्यों में गए जमातियों की वजह से कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। अकेले उप्र के सहारनपुर में ही करीब 484 जमातियों को क्वारंटाइन किया गया है जो मरकज से आए हैं। कोरोना पॉजिटिव के जो केस सामने आ रहे हैं वे या तो जमाती हैं या फिर उनके संपर्क में आने वाले। इसी वजह से दिल्ली पुलिस सरगर्मी से मौलाना साद की तलाश कर रही है। सूत्र दावा कर रहे हैं कि दिल्ली से क्राइम ब्रांच की टीम वेश बदलकर यहां मोहल्ला मुफ्ती व आसपास डेरा डाले हुए है।

मौलाना साद की सहारनपुर में ससुराल है, जो यहां महीनों पहले आए थे। हाल-फिलहाल में उनके यहां आने की कोई जानकारी नहीं मिली है। अभी दिल्ली पुलिस से कोई संपर्क नहीं हुआ है।

-दिनेश कुमार पी, एसएसपी

मरकज में संक्रमित हुए दो लोगों की द. अफ्रीका व ईरान में मौत

▶ प्रथम पृष्ठ से आगे

ईरान व दक्षिण अफ्रीका में एक-एक व्यक्ति की मौत कोरोना संक्रमण के कारण हुई है। दिल्ली पुलिस को विदेश व गृह मंत्रालय से जानकारी मिली है कि ये दोनों जनता कर्फ्यू से कुछ दिन पहले ही मरकज में आए थे। यहां से जाने के बाद उनकी तबीयत बिगड़ गई और फिर मौत हो गई। इन दोनों लोगों को भी संक्रमण मरकज में जमातियों से ही मिलने की बात सामने आ रही है।

क्वारंटाइन के बाद और कसेगा कानूनी शिकंजा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

▶ विदेशी जमातियों के मददगारों पर भी कार्रवाई तय, आसान नहीं होगी फिर भारत आने की राह

दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात में शामिल हुए लोगों और विदेशी नागरिकों के मददगार भी आने वाले दिनों में कड़ी कानूनी कार्रवाई के दायरे में होंगे। जिन विदेशी नागरिकों के खिलाफ एफआइआर दर्ज कर उनके पासपोर्ट जब्त किए गए हैं, उनके लिए क्वारंटाइन की अवधि पूरी होने के बाद जेल के दरवाजे खुले होंगे। ऐसे विदेशी नागरिकों के लिए फिर भारत आने की राह भी आसान नहीं होगी।

उप्र के डीजीपी हितेश चंद्र अवस्थी ने बताया कि दिल्ली के निजामुद्दीन मरकज (मुख्यालय) में शामिल हुए तब्लीगी जमात के लोगों व उनके संपर्क में आए लोगों की पहचान कर लगातार उन्हें क्वारंटाइन किया जा रहा है। ऐसे कई लोग खुद भी सामने आ रहे हैं, जबकि छिपने वाले या कोरोना संक्रमण के लिए लागू निषेधाज्ञा का उल्लंघन करने वालों पर एफआइआर दर्ज कर कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं। दिल्ली के निजामुद्दीन मरकज में गए उत्तर प्रदेश के 2047 से अधिक लोगों की पहचान की जा चुकी है। डीजीपी ने बताया कि करीब दो सौ लोग ऐसे भी हैं, जो दिल्ली से आए लोगों के संपर्क में आए थे। इस तरह अब तक कुल 1953 लोगों को क्वारंटाइन किया गया है।

अन्य जमातों की मांगी सूचना

डीजीपी मुख्यालय ने जिला स्तर पर हुई तब्लीगी जमातों के बारे में भी ब्योरा मांगा है। आइजी कानून-व्यवस्था ज्योति नारायण का कहना है कि तब्लीगी जमात से जुड़े लोगों में कोरोना संक्रमण पाए जाने के बाद जांच का दायरा बढ़ाया जा रहा है। सभी जिलों से स्थानीय जमात में शामिल हुए लोगों और उनके निजामुद्दीन की जमात में शामिल लोगों के संपर्क में आने को लेकर जांच करने को कहा गया है।

स्थानीय स्तर पर ऐसे लोगों का भी पता लगाया जा रहा है, जो निजामुद्दीन से लौटे लोगों के संपर्क में आए थे। निजामुद्दीन की जमात से लौटे कई लोग चुपचाप अपने घर आ गए थे और किसी को इसकी जानकारी नहीं दी थी। इन जमातियों की छानबीन के दौरान अब तक सामने आए 344 विदेशी नागरिकों को क्वारंटाइन किया गया है। इनमें 295 के खिलाफ पुलिस ने लॉकडाउन के उल्लंघन, एपिडेमिक एक्ट, फॉरेन एक्ट व वीजा नियमों के उल्लंघन के तहत मुकदमे दर्ज किए हैं। इसके अलावा प्रदेश के 20 जिलों में अब तक विदेशी नागरिकों के विरुद्ध 44 एफआइआर भी दर्ज हुई हैं। हालांकि जमातियों व विदेशी नागरिकों के विरुद्ध अब तक जिन धाराओं में केस दर्ज हुए हैं, उनमें सात वर्ष से कम की सजा का प्रावधान है।

इस बीच पुलिस ने 249 विदेशी नागरिकों के पासपोर्ट भी जब्त किए हैं। वे टूरिस्ट वीजा के जरिए आए थे और यहां बिना सूचना के दूसरे आयोजनों में शामिल हो रहे थे। इन विदेशी नागरिकों के लिए फिलहाल क्वारंटाइन के बाद जेल के रास्ते ही खुले होंगे। इन मुकदमों में वे लोग भी हैं, जो इन्हें छिपाने में मददगार थे। उन पर भी जल्द शिकंजा कसेगा। एडीजी कानून-व्यवस्था पीवी रामाशास्त्री ने बताया कि प्रदेश के निवासी करीब 200 लोग ऐसे भी हैं, जो निजामुद्दीन की जमात में गए थे और अब दिल्ली व अन्य राज्यों में हैं। ऐसे लोगों की सूचना संबंधित राज्यों को दी गई है। पुलिस और प्रशासन पहले संक्रमित लोगों को क्वारंटाइन कर रही है। अगली कड़ी में दर्ज मुकदमों की विवेचना कर आरोपितों पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इनकी पड़ताल में खुफिया तंत्र भी सक्रिय है।

उप्र में बढ़ सकती है लॉकडाउन की अवधि

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

दिल्ली के निजामुद्दीन मरकज से लौटे तब्लीगी जमात के लोगों की करतूत से उप्र के बाशिंदों को कुछ दिन की पाबंदियां और झेलनी पड़ सकती हैं। प्रदेश में लगातार बढ़ रहे कोरोना संक्रमित मरीजों में अधिकांश तब्लीगी जमात के ही हैं। ऐसे में बेहद सतर्क सरकार सभी मरीजों को चिन्हित कर लेना चाहती है, जिसके लिए लॉकडाउन की अवधि को कुछ दिन बढ़ाने पर विचार किया जा रहा है। लिहाजा, बहुत कम संभावना है कि 15 अप्रैल को लॉकडाउन खुले।

प्रदेश में कोरोना संक्रमण और लॉकडाउन की स्थिति का जायजा सोमवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वरिष्ठ अधिकारियों से लिया और जरूरी दिशा निर्देश दिए। सोमवार शाम को लोकभवन में पत्रकारों से बातचीत में अपर मुख्य सचिव गृह अवनीश कुमार अवस्थी ने बताया कि मुख्यमंत्री ने कोरोना से बचाव व रोकथाम की समीक्षा की है। उन्होंने बताया कि तीन तरह की श्रेणी बनाकर सर्विलांस की प्रक्रिया निरंतर चल रही है। प्रथम श्रेणी में उन्हें रखा गया है, जो स्वयं संक्रमित हैं, जबकि दूसरी श्रेणी में सीधे उनके संपर्क में आए लोगों को रखा गया है। तीसरी श्रेणी में ऐसे लोगों को शामिल किया गया है, जो दूसरी श्रेणी के लोगों के संपर्क में रहे हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना पॉजिटिव मरीजों के बढ़ने से प्रदेश की स्थिति संवेदनशील हो गई है। जब तक तीनों श्रेणी के लोगों को चिन्हित नहीं कर लिया जाता, तब तक लॉकडाउन खोलने का निर्णय लिया जाना जनहित में उचित नहीं होगा। इन हालात को देखते हुए सरकार लॉकडाउन की अवधि बढ़ाने पर विचार कर रही है। अपर मुख्य सचिव गृह ने बताया कि सोमवार शाम छह बजे तक प्रदेश में तब्लीगी जमात से संबंधित कुल 159 लोगों की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है, जिन्हें क्वारंटाइन कर दिया गया है।

मुख्यमंत्री योगी ने प्रदेशवासियों से अपील की है कि लॉकडाउन के दौरान वे सरकार का सहयोग करें। व्यवस्था बनाए रखने के लिए युवा वर्ग को जोड़ते हुए मोहल्ला वॉरियर बनाने को भी कहा गया है। धर्मगुरुओं ने भी लॉकडाउन को पूर्ण रूप से न खोले जाने का सुझाव दिया है। धर्मगुरुओं ने योगी सरकार को पूरा सहयोग देने का वादा भी किया है।

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में सोमवार को ज्वाइंट पुलिस कमिश्नर नवीन अरोरा ने टीम के साथ कैसरबाग पहुंचकर पड़ताल की। मस्जिद से 12 कोरोना संक्रमित जमाती मिलने के बाद एरिया को पुलिस ने सील कर दिया है। एएनआइ

छत्तीसगढ़ में 17 तब्लीगी जमातियों पर एफआइआर

नईदुनिया, रायपुर

छत्तीसगढ़ में तब्लीगी जमात के 17 लोगों पर जानकारी छिपाने के आरोप में मुकदमा दर्ज किया गया है। इनमें 16 लोग कोरबा जिले की कटघोरा मस्जिद में मिले थे, जबकि एक अंबिकापुर में।

उधर, सरकार ने दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित मरकज से लौटे तब्लीगी जमात और उनसे जुड़े 107 लोगों की जांच कराई थी। इसकी रिपोर्ट सोमवार दोपहर बाद जारी की गई। इसके अनुसार, 83 सैंपल निगेटिव पाए गए हैं, जबकि 23 लोगों की रिपोर्ट आना बाकी है। इसमें कठघोरा की मस्जिद से मिले एक 16 वर्षीय युवक का सैंपल पहले ही पॉजिटिव पाया गया है। उसे एम्स में भर्ती कराया गया है।

विदेशी तब्लीगी जमातियों को भेजेंगे उनके मुल्क

नईदुनिया, भोपाल : मध्य प्रदेश के भोपाल में मौजूद विदेशी तब्लीगी जमातियों की पूरी जानकारी जुटाने के बाद पुलिस अब उन्हें डिपोर्ट (देश से बाहर करना) करने की तैयारी कर रही है। अभी उनकी संख्या करीब 70 है। पुलिस के आलाधिकारियों के मुताबिक मार्च के पहले सप्ताह में बेल्जियम, म्यांमार, कनाडा और आईवरी पोस्ट से तब्लीगी जमाती भोपाल पहुंचे थे। इनमें अधिकांश श्यामला हिल्स, ऐशबाग और जहांगीराबाद की मस्जिदों में रुके थे। सभी 70 लोगों की जांच करवाई गई तो उनमें से 20 में कोरोना संक्रमण की पुष्टि हो चुकी है। सभी विदेशी जमातियों को ताजुल मस्जिद में शिफ्ट कर दिया गया है। उपेंद्र जैन, आइजी भोपाल जोन का कहना है कि जमातियों को बाहर भेजा जाएगा। इससे संबंधित प्रक्रिया शुरू कर दी है।

जमातियों ने बस में यात्रियों को बांटी थी मिठाई

राजेश शर्मा, ऊना

दिल्ली से हिमाचल के नालागढ़ के लिए 18 मार्च की शाम को चली हिमाचल पथ परिवहन निगम नालागढ़ डिपो की बस में सवार तब्लीगी जमात के लोगों ने बस में मिठाई भी बांटी थी। इस बस में यात्रा करने वाले कुछ यात्रियों ने बताया कि जमातियों ने बस में पेठे की मिठाई बांटी थी। इसमें से कई लोगों ने मिठाई का सेवन कर लिया था, जबकि कुछ ने मिठाई ग्रहण नहीं की थी। यह भी जानकारी मिली है कि चालक और परिचालक ने मिठाई नहीं ली थी और अन्य यात्रियों को मिठाई न लेने का इशारा किया था। 37 सीटर बस में करीब 40 यात्री सवार थे।

चालक व परिचालक इस बस को लेकर दिल्ली से 18 मार्च की शाम 7 बजकर 20 मिनट पर चले थे। कुछ घंटे बाद यह बस पिपली स्टेशन में रात्रि भोजन के लिए रुकी थी। कई लोग भोजन करने के लिए बस से नीचे आए। भोजन किया और फिर से बस में सवार हो गए। इस बीच तब्लीगी जमात के लोगों ने पेठा बांटा था। चालक और परिचालक ने मिठाई नहीं ली और तीन नंबर सीट व छह नंबर सीट पर बैठे यात्रियों को भी इशारे से ही मिठाई न लेने को कहा। इस बीच वे लोग मिठाई बांटने पीछे चले गए। परिचालक ने बताया कि बस में दो लोग उत्तर प्रदेश के भी सवार थे। काफी पीछे होने के कारण रात को उनको भी इशारा किया था, लेकिन वे समझे थे या नहीं, इसका उन्हें कोई ज्ञान नहीं है। बता दें कि मुस्लिम समुदाय के 23 लोगों ने दिल्ली में काउंटर से नालागढ़ के लिए टिकट लिए थे। उनके साथ एक बच्चा था जिसका टिकट नहीं लिया था। बाद में बच्चे का आधा टिकट परिचालक ने काटा था।

बस में चालक व परिचालक एहतियात के तौर पर मास्क और सैनिटाइजर का इस्तेमाल कर रहे थे। कुछ यात्री भी मास्क पहने हुए थे जबकि तब्लीगी जमात के लोगों ने मास्क नहीं पहने थे। परिचालक ने बताया कि वह लॉकडाउन से करीब 14 दिन पहले ही पूरी सावधानी बरतने के साथ दूसरों को भी जागरूक कर रहे थे। परिचालक रोजाना दस्ताने पहन रहा था।

कांग्रेस-राकांपा को रास नहीं आ रहा तब्लीगी जमात पर प्रहार

राज्य ब्यूरो, मुंबई

▶ राकांपा नेता ने मीडिया में बार-बार खबरें दिखाए जाने पर जताई नाराजगी

▶ कहा, दिल्ली सरकार को नहीं देनी चाहिए थी कार्यक्रम के आयोजन को मंजूरी

▶ कांग्रेस के हुसैन दलवई बोले, जमात ने कभी देश विरोधी काम नहीं किया

देश में कोरोना महामारी के प्रसार के एक प्रमुख स्रोत के रूप में उभरे तब्लीगी जमात को मीडिया द्वारा कठघरे में खड़े करना राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) और कांग्रेस को रास नहीं आ रहा है। दोनों ही दलों ने मीडिया के इस रुख पर नाराजगी जताई है। साथ ही तब्लीगी जमात का बचाव करते हुए कार्यक्रम के आयोजन को लेकर दिल्ली सरकार पर ही सवाल उठाए हैं।

राकांपा प्रमुख शरद पवार ने दिल्ली के मरकज की घटना का उल्लेख करते हुए सवाल उठाया है कि क्या हजरत निजामुद्दीन मरकज की घटना को खबरों में बार-बार दिखाना जरूरी है? सोमवार को पवार फेसबुक लाइव के जरिए राज्य के लोगों को संबोधित कर रहे थे। खासतौर से टीवी समाचार चैनलों की ओर इशारा करते हुए पवार ने कहा कि यदि दिल्ली सरकार ने सावधानी बरती होती, तो समाचार चैनलों को एक वर्ग विशेष के बारे में ऐसी छवि प्रस्तुत करने का मौका न मिलता। पवार का मानना है कि देश में कोरोना का बढ़ता प्रभाव देखते हुए दिल्ली सरकार को हजरत निजामुद्दीन मरकज में तब्लीगी जमात के कार्यक्रम की अनुमति नहीं देनी चाहिए थी, जैसे महाराष्ट्र सरकार ने जमात के कार्यक्रम को अनुमति नहीं दी थी।

पवार का कहना है कि अब यदि यह घटना हो भी गई है, तो इसे रोज-रोज दिखाने की जरूरत है क्या? ऐसा करके आप किस तरह की परिस्थिति का निर्माण कर रहे हैं, इसका विचार करने की जरूरत है। पवार ने सलाह दी है कि हमें इस बात की चिंता करनी चाहिए कि समाज में कटुता बढ़ने के बजाय सामाजिक सौहार्द्र किस तरह बढ़े। इसके साथ ही पवार ने सोशल मीडिया पर फैलाए जा रहे जहरीले संदेशों पर भी नाराजगी जाहिर की है।

वहीं, महाराष्ट्र के कांग्रेस नेता व पूर्व राज्यसभा सदस्य हुसैन दलवई ने भी तब्लीगी जमात के खिलाफ चल रही खबरों पर नाराजगी जताते हुए कहा है कि बेवजह एक संगठन को निशाना बनाकर मुस्लिमों को बदनाम करने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने खुलकर जमात का पक्ष लेते हुए कहा कि तब्लीगी जमात ने कभी देश विरोधी काम नहीं किया है।

शरद पवार फाइल

हुसैन दलवई फाइल

विश्व हिंदू परिषद पर लगे पाबंदी

दलवई ने कहा कि तब्लीगी जमात से पहले विश्व हिंदू परिषद पर प्रतिबंध लगना चाहिए। बता दें कि एक दिन पहले विश्व हिंदू परिषद ने ही तब्लीगी जमात पर प्रतिबंध लगाने की मांग की थी। इसका जवाब देते हुए दलवई ने कहा कि विहिप का एकमात्र उद्देश्य हमें हिंदुत्व की ओर ले जाना है। साथ ही हुसैन दलवई ने माना कि तब्लीगी जमात ने गलती की है, और वह उसका समर्थन नहीं करते।

सतर्कता

मस्जिद को रखना होगा जमातियों व धर्म प्रचार के लिए आने वालों का ब्योरा, नाम-पता के साथ दर्ज होगा स्थान व मोबाइल नंबर भी, लापरवाही पर होगी कार्रवाई

शामली में अब तब्लीगियों का रखा जाएगा हिसाब-किताब

लोकेश पंडित, शामली

देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान कोरोना संक्रमण को लेकर चर्चा में चल रहे दिल्ली के निजामुद्दीन मरकज प्रकरण के बाद, तब्लीगी जमात को नियम-कायदों की जद में लाया जा रहा है। जिस तेजी से जमाती कोरोना वायरस से संक्रमित मिल रहे हैं, उसके बाद पुलिस-प्रशासन ने हर मरकज-मस्जिद पर नजरें जमा दी हैं। यहां आने-जाने वालों की निशानदेही व उसका पूरा रिकार्ड रखने का आदेश दिया गया है। मस्जिद या मरकज के बाहर सीसीटीवी कैमरे भी लगाने होंगे। मुतवल्लियों से कहा गया है कि हर जमाती के आने-जाने का स्पष्ट विवरण दर्ज करें। लापरवाही पर मुतवल्ली कार्रवाई की जद में होंगे। इस आदेश के बाद शामली में हर निर्देशित जगह रजिस्टर संजोया जाने लगा है।

उप्र के शामली जिले में दिसंबर से मार्च तक 18 जमातें आई हैं। इनमें से कुछ जमात वापस चली गईं, जबकि वर्तमान में बंगाल, ओडिशा, त्रिपुरा, राजस्थान, बांदा, हरियाणा, लखनऊ, बुलंदशहर, गाजियाबाद व मध्य प्रदेश के 236 जमाती यहां मौजूद हैं। इनमें 37 विदेशी हैं। दरअसल, लॉकडाउन के दौरान अधिकांश जमाती उन शहरों या गांवों में ही रह गए जहां उन्हें मरकज से भेजा गया था लेकिन निजामुद्दीन मरकज प्रकरण सामने आने पर हड़कंप मच गया। इसके बाद इनकी खोजबीन के क्रम में जब शामली जिले में भी आने वाली जमात व जमातियों को चिह्नित करने का सिलसिला शुरू हुआ तो काफी प्रयास के बाद भी संतोषजनक कामयाबी नहीं मिली। जमात भेजने वाली मरकजों द्वारा बताया गया कि वे केवल अपने यहां आने वाली जमात की आमद दर्ज करते हैं। इससे यह पता नहीं लगाया जा सका कि कितने जमाती कहां हैं। बहरहाल, इसके बाद जिलेभर की मरकज व मस्जिदों के मुतवल्ली को संबंधित थानों द्वारा कह दिया गया है कि निजामुद्दीन मरकज से आने वाले जमातियों की पूरी जानकारी अपने यहां एक रजिस्टर में स्थान व फोन नंबर समेत दर्ज करेंगे। इसमें उनके आने-जाने के साथ ही यह भी दर्ज करना होगा कि उन्हें किस-किस मस्जिद में भेजा गया। सभी मस्जिदों को अपने यहां आने वाले जमातियों का रिकार्ड रखते हुए यह भी दर्ज करना होगा कि वह किस-किस क्षेत्र में जाकर प्रचार कर रहे हैं।

कांधला व जमात से जुड़े लोगों को किया जा रहा सूचीबद्ध

तब्लीगी जमात के तार कांधला व शामली से गहराई तक जुड़े हैं। इसी क्रम में अमीर मौलाना साद व निजामुद्दीन मरकज से जिले के अनेक मौलाना व उलमा जुड़े हैं। ऐसे सभी लोगों को सूचीबद्ध करने में खुफिया विभाग जुटा है। इन लोगों की आय के साधनों के साथ ही धार्मिक गतिविधियों व जमात में उनकी भूमिका की भी जांच की जा रही है। शामली में मान्यता प्राप्त 48 मदरसे हैं, 15 दीनी मदरसे भी सूचीबद्ध हैं। यहां 110 मस्जिदों से जमात व दीन का प्रचार होता है। ऐसी सभी मस्जिदों व जमात के मरकज को दैनिक रिकॉर्ड रखने के निर्देश दिए गए हैं।

शामली में जमात के मरकज व मस्जिदों में आने वाले जमातियों का रिकार्ड रखने का आदेश दिया गया है। ये लोग कहां आते-जाते हैं, इसका पूरा रिकार्ड रखने को कहा गया है। यह डाटा रखना हर सूरत में जरूरी है। इसकी समय-समय पर जांच भी की जाएगी।

- विनीत जायसवाल, एसपी, शामली

तीमारशाह मरकज में आने वाले जमातियों के नाम-पते का रिकार्ड रखा जाता है। हालांकि मोबाइल नंबर व स्थान दर्ज नहीं होता था। एसपी के आदेश पर अब निर्देशानुसार सभी जानकारियां दर्ज करने का काम शुरू कर दिया गया है।

- मौलाना शौकीन इमाम, बड़ा बाजार मस्जिद।

एक दिन में 14 मौतें, 400 से ज्यादा नए मामले

चिंताजनक ▶ देश में अब तक 142 लोगों की मौत, 4,602 संक्रमित

महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा 120 नए मामले, सात लोगों की गई जान

नई दिल्ली, एजेंसियां : देश में कोरोना वायरस से संक्रमण का मामला तेजी से बढ़ते जा रहा है। सोमवार को भी चार सौ से ज्यादा नए मामले सामने आए और संक्रमितों का आंकड़ा साढ़े चार हजार को पार कर गया। त्रिपुरा में पहला मामला सामने आया है और 44 साल की एक महिला को संक्रमित पाया गया है। जबकि, 14 लोगों ने दम तोड़ दिया है और मरने वालों की कुल संख्या भी 142 हो गई है। करीब साढ़े तीन सौ लोग अब तक पूरी तरह से ठीक भी हुए हैं और उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। हालांकि, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक इस महामारी से देश में अभी तक 111 लोगों की जान गई है, 4281 लोग संक्रमित हुए हैं और 318 लोग पूरी तरह स्वस्थ भी हो चुके हैं।

कोरोना वायरस पर नियंत्रण के लिए जारी राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के बीच मुंबई के एक कैंप में आराम करते प्रवासी श्रमिक। यहां शीरिक दूरी बनाए रखने का समुचित ख्याल रखा गया है। श्रमिकों के बिस्तर दूर-दूर लगाए गए हैं। एएनआइ

राज्य	नए मामले	तब्लीगी
तमिलनाडु	50	48
उत्तर प्रदेश	33	29
दिल्ली	20	10
गुजरात	16	10
राजस्थान	35	6
उत्तराखंड	4	4
केरल	13	3
झारखंड	1	1

उत्तर प्रदेश में 29 नए संक्रमित तब्लीगी

मध्य प्रदेश में 23 नए मामले मिले हैं, इनमें एक जमाती है। कुल संक्रमित 251 हो गए हैं। उत्तर प्रदेश में 33 नए मामले सामने आए हैं, जिनमें 29 तब्लीगी हैं। राज्य में संक्रमितों की संख्या 317 हो गई है।

देश में कुल संक्रमित	
राज्य	संक्रमित
महाराष्ट्र	868
तमिलनाडु	621
दिल्ली	523
केरल	327
उत्तर प्रदेश	317
आंध्र प्रदेश	303
राजस्थान	301
मध्य प्रदेश	251
तेलंगाना	234
कर्नाटक	163
गुजरात	146
जम्मू-कश्मीर	109
हरियाणा	96
पंजाब	79
बंगाल	49
उत्तराखंड	31
बिहार	30
असम	29
ओडिशा	40
चंडीगढ़	18
लद्दाख	14
हिमाचल प्रदेश	14
अंडमान-निकोबार	10
छत्तीसगढ़	10
गोवा	7
पुडुचेरी	4
झारखंड	4
मणिपुर	2
मिजोरम	1

राज्य सरकारों से मिली सूचनाओं के मुताबिक देशभर में मरने वालों की संख्या 142 है। सोमवार को महाराष्ट्र में सात, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में दो-दो और राजस्थान, पंजाब, व तमिलनाडु में एक-एक व्यक्ति की जान चली गई। इस तरह महाराष्ट्र में मरने वालों की संख्या 52 हो गई है। संक्रमण के 413 नए मामले सामने आए हैं और यह आंकड़ा 4602 पर पहुंच गया है। अब तक 344 लोग पूरी तरह स्वस्थ हुए हैं। अगर हम राज्यवार महामारी से संक्रमितों की बात करें तो महाराष्ट्र में एक दिन में सबसे ज्यादा 120 नए मामले सामने आए हैं। इनमें से अकेले मुंबई में 68 और पुणे में 41 मामले शामिल हैं। राज्य में संक्रमितों की संख्या 868 हो गई है। मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के बांद्रा स्थित निजी आवास मातोश्री के पास चाय बेचने वाले एक व्यक्ति को भी संक्रमित पाया गया है। इसके बाद नगर निगम ने पूरे इलाको को सैनिटाइज किया है।

तमिलनाडु में सोमवार को 50 नए मामले सामने आए, इनमें 48 तब्लीगी जमात से जुड़े हैं। राज्य में संक्रमितों की संख्या 621 हो गई है। आंध्र प्रदेश में 37 नए मामले मिले हैं और कुल संक्रमित 303 हो गए हैं। तेलंगाना में भी पिछले चौबीस घंटे में 45 नए मामले सामने आए हैं और संक्रमितों की संख्या 334 हो गई है। जबकि, कर्नाटक में 12 नए केस मिले और संख्या 163 हो गई।

केरल में 13 नए केस मिले हैं, जिसे में दो जमाती हैं। राज्य में संक्रमितों की संख्या 327 हो गई है। गुजरात में 18 नए मामले सामने आए हैं। इनमें 10 तब्लीगी जमात से जुड़े लोग हैं। नए केस में 14 महीने का एक बच्चा भी शामिल है। हाल फिलहाल यह बच्चा कहीं बाहर भी नहीं गया था। राज्य में संक्रमितों की संख्या 146 हो गई है।

राजस्थान में 35 नए केस मिले हैं, जिनमें छह तब्लीगी हैं। कुल संक्रमितों की संख्या 301 हो गई है। हरियाणा में 20 नए मामले मिले हैं जिनमें 12 तब्लीगी हैं। राज्य में कुल 96 संक्रमित हो गए हैं। आठ नए मामलों के साथ पंजाब में संक्रमितों की संख्या 79 हो गई है।

दिल्ली में और 10 तब्लीगी संक्रमित मिले : दिल्ली में 20 केस सामने आएं है। इनमें 10 जमाती हैं और संक्रमितों की संख्या 523 हो गई है। जम्मू-कश्मीर में भी तीन नए केस सामने आए हैं और 109 संक्रमित हो गए हैं। उत्तराखंड में चार नए मामले सामने आए हैं, ये चारों जमाती हैं और संक्रमितों की संख्या 31 हो गई है। झारखंड में एक मामला सामने आया है जो जमाती है कुल चार संक्रमित हो गए हैं।

रांची में एक और महिला मिली कोरोना पॉजिटिव

राज्य ब्यूरो, रांची

▶ जिम्मेदार मुस्लिम भी मान रहे, तब्लीगी जमातियों ने सबको खतरे में डाला

झारखंड में भी कोरोना ने तेजी से पैर पसारना शुरू कर दिया है। सोमवार को लगातार दूसरे दिन इसका एक और पॉजिटिव केस मिला। इसके साथ ही अब झारखंड में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या चार हो गई है। कोरोना की चौथी मरीज रांची के हिंदपीढ़ी की रहने वाली एक 54 वर्षीय महिला है। हिंदपीढ़ी में रह रही एक मलेशियाई महिला भी एक हफ्ते पहले ही कोरोना पॉजिटिव पाई गई है। माना जा रहा है कि दूसरी संक्रमित महिला भी मलेशियाई महिला के संपर्क में आने के बाद ही संक्रमण का शिकार हुई है, क्योंकि इस महिला के घर के पास के ही एक घर से तब्लीगी जमात से जुड़ी मलेशियाई महिला को बरामद किया गया था। हिंदपीढ़ी की जिस महिला में कोरोना का संक्रमण पाया गया है, उसकी दोनों किडनी खराब है। रिम्स में तीन महीने से उसका डायलिसिस भी हो रहा है। अभी उसे रिम्स ट्रामा सेंटर के आइसोलेशन वार्ड में भर्ती किया गया है। जिला प्रशासन व स्वास्थ्य विभाग की टीम ने उसके परिवार के सात सदस्यों को सैंपल जांच के लिए रिम्स भेजा।

कोरोना के कैरियर बन चुके तब्लीगी जमात के लोगों ने झारखंड वासियों की भी चिंता बढ़ा दी है। राज्य के चार कोरोना संक्रमितों में तीन महिलाएं तब्लीगी जमात से ही जुड़ी हैं। वहीं निजामुद्दीन से तब्लीगी जमात में शामिल होकर लौटे दर्जनों लोग अभी भी राज्य के विभिन्न हिस्सों में रह रहे हैं। संक्रमण का खतरा बरकरार है। ऐसे में अब मुस्लिम समाज के जिम्मेदार लोग भी यह मानते हैं कि जमातियों ने अपने साथ-साथ बड़ी संख्या में लोगों को खतरे में डाल दिया। यहां मुस्लिम समाज एक बड़े तबके ने तब्लीगियों के प्रति भी नाराजगी जताते हुए कहा है कि ऐसे लोगों को देश और समाज के बारे में सोचना चाहिए।

तब्लीगी जमात का मूवमेंट गलत

डोरंडा में स्थित बाबा रिसालदार गद्दी मजार कमेटी के अध्यक्ष हाजी रऊफ गद्दी ने कहा कि कोरोना जैसी महामारी के बीच तब्लीगी जमात का मूवमेंट गलत है। ऐसे संकट के समय तब्लीगी जमात में लोगों को नहीं निकलना चाहिए था और शारीरिक दूरी का पालन करना चाहिए था। देश में लागू लॉकडाउन का पालन करना चाहिए था। जिन लोगों पर समाज को जागरूक करने की जिम्मेदारी है, वही नियम तोड़ रहे हैं। रांची के शहर काजी मसूद फरीदी कहते हैं कि अगर किसी मस्जिद में जमात के लिए विदेशी ठहरे हैं तो इसकी जानकारी थाना या प्रशासन को देनी चाहिए थी। इस मामले में स्थानीय लोगों से भी गलती हुई है। अभी भी समय है। इसलिए लोगों से अपील है कि घरों में रहें और सुरक्षित रहें।

भारत में भी बुजुर्गों के लिए घातक साबित हो रहा वायरस

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

दुनिया के अन्य देशों की तरह भारत में भी कोरोना वायरस बुजुर्गों के लिए घातक साबित हो रहा है। कोरोना के कारण देश में अब तक हुई 109 मौतों का विश्लेषण करते हुए स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने कहा कि वैसे तो कुल मरीजों में 60 साल से अधिक उम्र के 19 फीसदी लोग हैं, लेकिन मृतकों में उनकी संख्या 63 फीसदी से अधिक है। 30 फीसदी मौतें 40 से 60 साल के लोगों की हुई है। जबकि इस आयु वर्ग के 34 फीसदी लोग कोरोना से ग्रसित हैं। इस वायरस से सबसे सुरक्षित 40 साल से कम उम्र के युवा हैं।

देश में इससे ग्रसित 40 साल के कम उम्र के युवाओं की संख्या 47 फीसदी है, जबकि मृतकों में इनकी संख्या सात फीसद ही है। यदि युवा भी पहले से किसी गंभीर बीमारी से ग्रसित हैं, तो कोरोना उनके लिए घातक साबित हो सकता है। भारत में अभी तक मृतकों में अभी 86 फीसद ऐसे लोग हैं, जिनमें डायबिटीज, किडनी और दिल से संबंधित बीमारियां पहले से थीं। कोरोना के मरीजों का लैंगिक आधार पर विश्लेषण करें, तो अब तक मिले केस में 76 फीसद पुरुष और 24 फीसद महिलाएं हैं। मृतकों में महिलाओं का अनुपात थोड़ा ज्यादा है। मृतकों में 73 फीसद पुरुष और 27 फीसद महिलाएं हैं। कोरोना के मरीजों की बढ़ती संख्या के साथ ही मृतकों की संख्या भी तेजी से बढ़ी है। अब तक कुल 109 लोगों की कोरोना के कारण मौत हुई है।

उप्र में लॉकडाउन के उल्लंघन पर 32 हजार से ज्यादा गिरफ्तार

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : लॉकडाउन में उप्र शासन के निर्देशों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध लगातार कार्रवाई की जा रही है। अपर मुख्य सचिव गृह अवनीश कुमार अवस्थी ने बताया कि कोरोना संक्रमण के मद्देनजर लॉकडाउन की अवधि में अब तक धारा 188 के तहत 9955 मुकमदे दर्ज कर 32 हजार से ज्यादा आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है।

इसके अलावा सघन चेकिंग के दौरान 17,244 वाहनों को सीज किया गया है, जबकि आवश्यक सेवाओं के लिए करीब डेढ़ लाख वाहनों को परमिट भी जारी किए गए। अवस्थी ने बताया कि कालाबाजारी व जमाखोरी की शिकायतों पर भी कार्रवाई की जा रही है। ऐसे 276 आरोपितों के विरुद्ध 203 एफआइआर दर्ज की गई हैं।

अजमेर के चिश्ती नगर में स्वास्थ्यकर्मियों से अभद्रता

संवाद सूत्र, अजमेर

राजस्थान में अजमेर जिले के सोमलपुर स्थित चिश्ती नगर में स्थानीय लोगों ने स्वास्थ्यकर्मियों से अभद्र व्यवहार किया है। पुलिस ने इस मामले में 19 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। अभद्र व्यवहार को लेकर स्वास्थ्यकर्मियों ने अजमेर के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय के बाहर प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा। गौरतलब है कि इससे पहले इंदौर में भी स्वास्थ्यकर्मियों के साथ दुर्व्यवहार किया गया था।

जानकारी के मुताबिक स्वास्थ्यकर्मी चिश्ती नगर में लोगों के स्वास्थ्य की जानकारी एकत्रित करने गए थे, लेकिन कुछ लोगों ने उनके साथ अभद्र व्यवहार किया। लोगों का कहना है कि स्वास्थ्यकर्मियों के पास जांच का कोई उपकरण नहीं था, इसलिए उन्होंने उनका विरोध किया। उपकरणों के बगैर स्वास्थ्य की जांच कैसे हो सकती है? स्वास्थ्यकर्मियों का कहना था कि यह जांच का पहला चरण है, जिसमें परिवारों के सदस्यों की बारे में जानकारी एकत्रित की जाती है। इसका मकसद यह भी पता लगाना होता है कि कोई बाहर से तो नहीं आया है। इस प्राथमिक जानकारी के बाद ही द्वितीय चरण में लोगों के स्वास्थ्य की जांच चिकित्सा उपकरणों से की जाती है। स्वास्थ्य कर्मियों के प्रतिनिधि विनोद मीणा ने मांग की है कि कर्मचारियों, खासकर महिला स्वास्थ्यकर्मियों की सुरक्षा की व्यवस्था की जाए। चिश्ती नगर मामले में रामगंज थाने की पुलिस ने मौके पर पहुंच कर लोगों को समझाने का प्रयत्न किया लेकिन लोगों ने अनसुना कर दिया। वे पुलिस के साथ भी अच्छी तरह से पेश नहीं आए।

कोरोना के मरीजों का इलाज करने वाली महिला चिकित्सक पर हमला

नई दिल्ली, प्रेट्र : राष्ट्रीय महिला आयोग ने गुजरात पुलिस को निर्देश दिया है कि वह सूरत में कोरोना के मरीजों का इलाज करने वाली महिला चिकित्सक पर पड़ोसियों द्वारा हमले की जांच करे। सूरत सिविल अस्पताल में काम कर रही डॉक्टर को उसके पड़ोसियों द्वारा शारीरिक रूप से प्रताड़ित किए जाने का वीडियो वायरल होने के बाद यह मामला सामने आया। इसकी गंभीरता को देखते हुए महिला आयोग ने गुजरात के पुलिस महानिदेशक शिवानंद झा को इसकी जांच के लिए लिखा है।

महिला आयोग ने एक बयान में कहा कि हम इस घटना की पूरी तरह से जांच करने और महिला चिकित्सक को सुरक्षा प्रदान करने का निर्देश देते हैं। आयोग ने पुलिस महानिदेशक को विस्तृत कार्रवाई रिपोर्ट भेजने के लिए भी कहा है। इसने कहा है कि हम कथित घटना से परेशान और डॉक्टरों की सुरक्षा के बारे में चिंतित हैं, जो कोरोना महामारी के खिलाफ दुनियाभर में अग्रिम मोर्चे पर काम कर रहे हैं।

अब एक घंटे में होगी कोरोना वायरस की जांच, आइसीएमआर ने दी मान्यता

जागरण संवाददाता, जमशेदपुर

▶ मेड इन इंडिया है उपकरण, एक टेस्ट कराने पर खर्च सिर्फ 1350 रुपये

▶ टाटा ट्रस्ट करता है इसे बनाने वाले इंडियन हेल्थ फंड का संचालन

टाटा ट्रस्ट की ओर से संचालित इंडियन हेल्थ फंड की मोल्बियो डायग्नोस्टिक्स प्राइवेट लिमिटेड ने एक टेस्ट किट टूनेटा बीटा कोव तैयार किया है। इससे कोविड-19 (कोरोना वायरस) रोगी की जांच रिपोर्ट मात्र एक घंटे में आएगी। इस जांच में मात्र 1350 रुपये ही खर्च आएगा। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आइसीएमआर) ने इस टेस्टिंग किट को मान्यता दे दी है।

कोविड-19 संक्रमित एक रोगी की ब्लड जांच रिपोर्ट आने में न्यूनतम आठ घंटे लग जाते हैं, जबकि निजी लैब में इस जांच पर 4500 रुपये का खर्च आता है। अब टाटा ट्रस्ट की इंडियन हेल्थ फंड ने अपने किट से थोड़ी राहत दी है।

टीबी जांच में इस किट का हुआ था इस्तेमाल

इस किट का वर्तमान में उत्तर प्रदेश के जिला अस्पतालों व सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में टीबी और रिफैम्पिसिन प्रतिरोध के निदान के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। कोविड-19 की स्क्रीनिंग करने के लिए मोल्बियो डायग्नोस्टिक द्वारा उक्त किट में ट्लेब रियल टाइम क्वांटिटेटिव माइक्रो पीसीआर सिस्टम के रूप में अतिरिक्त फीचर जोड़ा गया है।

जल्द रिपोर्ट आने से तेजी से शुरू हो सकेगी प्रक्रिया : मोल्बियो डायग्नोस्टिक प्राइवेट लिमिटेड के मुख्य तकनीकी अधिकारी डॉ. चंद्रशेखर नायर के अनुसार यह किट समय की जरूरत है जो आवश्यक वित्तीय सहायता के साथ फास्ट ट्रैक मोड में आणविक डायग्नोस्टिक तक पहुंचने में मदद देगी। उन्होंने आगे बताया कि जल्द रिपोर्ट आने से संक्रमित रोगी की रिपोर्टिंग व उसके अलगाव की प्रक्रिया शुरू करने में तेजी आएगी। इससे संक्रमण फैलने का खतरा कम होगा। इसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस किट की मदद से प्रक्रिया में तेजी आएगी और कोविड-19 को नियंत्रित करने में भी मदद मिलेगी।

अमृतसर नगर निगम के पूर्व एडिशनल कमिश्नर की मौत

जेएनएन, जालंधर : पंजाब में कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण सोमवार को आठवीं मौत हो गई। अमृतसर नगर निगम के पूर्व एडिशनल कमिश्नर ने फोर्टिस अस्पताल में दम तोड़ दिया। रविवार शाम उनकी प्रारंभिक रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी। मौत के बाद सोमवार को उनके फिर से सैंपल लिए गए थे, जिसकी रिपोर्ट भी पॉजिटिव आई।

राज्य में नौ दिनों में यह सातवीं, जबकि बीते दो दिनों में तीसरी मौत है। रविवार को पठानकोट व लुधियाना में दो महिलाओं की जान गई थी। सोमवार को आठ नए पॉजिटिव केस आए, जिसके बाद कुल पॉजिटिव मामलों की संख्या 79 पहुंच गई है। कोरोना का संक्रमण फतेहगढ़ साहिब भी पहुंच गया है। यहां तब्लीगी जमात से संबंधित दो महिलाएं पॉजिटिव पाई गईं। दोनों महाराष्ट्र के औरंगाबाद की रहने वाली हैं और कई लोगों के संपर्क में आ चुकी हैं। विभाग ने 17 के सैंपल लिए हैं।

मुरादाबाद के 129 लोग पासपोर्ट में दर्ज फर्जी पते पर घूम आए विदेश

रितेश द्विवेदी, मुरादाबाद

▶ पासपोर्ट में दर्ज पते की लोकेशन नहीं हो सकी ट्रेस

▶ डीएम ने दोबारा थाना स्तर पर जांच के दिए निर्देश

उप्र के मुरादाबाद में कोरोना संक्रमण से बचाव को लेकर विदेश से आए लोगों की ट्रैवेल हिस्ट्री खंगालने पर 129 ऐसे लोगों का पता चला है जो पासपोर्ट में दर्ज पते पर नहीं मिले हैं। उनकी लोकेशन पुलिस खोज नहीं सकी। सर्विलांस टीम को भी नाकामी हासिल हुई है। पते फर्जी होने की आशंका के चलते दोबारा थाना स्तर से उनकी तलाश हो रही है।

एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया की ओर से भेजी सूची में दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट से 22 मार्च 2020 तक विदेश यात्रा से 1286 लोग लौटकर आए। इनमें से 1138 लोगों का पता लगा लिया गया है। पुलिस उन तक पहुंच गई। सभी घरों पर 14 दिनों के लिए क्वारंटइन हैं। हालांकि प्रशासन ने सेल्फ डिक्लेरेशन की सुविधा भी दी थी लेकिन, इन 129 लोगों ने कोई जानकारी नहीं भेजी। ये लोग एयरपोर्ट से बाहर निकले और प्रशासन और पुलिस के लिए पहेली बन गए। इनका ट्रैवेल रिकार्ड नहीं मिल रहा है। 456 लोगों ने तो ऑनलाइन सेल्फ डिक्लेरेशन भेज दिया था।

मोवीन सरदार (ठाकुरद्वारा) के रहने वाले हैं। 26 जनवरी 2020 को ओमान से लौटे थे। पता तो दूर मोबाइल से भी नहीं ट्रेस हुए। हनी सिंह (न्यू फेंड्स कॉलोनी) 20 मार्च 2020 को लौटने के बाद नहीं मिले। सफी अहमद (बिलारी तहसील के महमूदपुर माफी गांव) की 21 मार्च को ओमान से लौटने के बाद लोकेशन नहीं पता चली है। जांच में पता चला है कि पुलिस सत्यापन में इन सभी लोगों ने स्थायी पते की जानकारी नहीं दी थी। जो फोन नंबर दिए गए थे, वे भी बंद चल रहे हैं। पते फर्जी होने की आशंका के चलते पुलिस इन्हें संदेह की नजर से देख रही है।

जनपद से जो भी लोग विदेश या दूसरे राज्यों में गए थे, लगभग सभी को सर्विलांस के माध्यम से ट्रैक कर लिया गया है। 129 लोग ऐसे हैं, जिनका पासपोर्ट तो मुरादाबाद जिले के नाम से जारी हुआ लेकिन, ये लोग दर्ज पते पर नहीं मिले हैं। पुलिस की जांच में पता चला है कि अब ये सभी लोग जिले को छोड़कर चले गए हैं। इन लोगों की पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है।

-राकेश कुमार सिंह, जिलाधिकारी

पासपोर्ट में स्थायी और अस्थायी पता देना अनिवार्य है। थाना के साथ ही एलआइयू की रिपोर्ट मांगी जाती है। पासपोर्ट में दर्ज पता दस साल के लिए होता है। अगर प्रशासन के द्वारा जानकारी मांगी जाएगी तो हम उन लोगों के दस्तावेजों की जांच कर सही जानकारी उपलब्ध करा सकते हैं।

-मोहम्मद नसीम, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, बरेली

ड्यूटी से गायब रहने पर बिहार में 198 चिकित्सा पदाधिकारियों को नोटिस

राज्य ब्यूरो, पटना : कोरोना संकट के दौरान बिहार में तमाम अवकाश रद रहने के बाद भी ड्यूटी से गायब रहने एवं अन्य लापरवाही के आरोप में 198 चिकित्सा पदाधिकारियों को कारण बताओ नोटिस दिया गया है। इनमें से 76 पदाधिकारियों से तीन दिन के अंदर जवाब मांगा गया है। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य विभाग ने 16 जिलों में भी नए सिविल सर्जन तैनात किए हैं। नए सिविल सर्जनों को तैनात करने की अधिसूचना जारी कर दी गई है। हाल ही में पहले 60, इसके बाद 62 और अंत में 76 चिकित्सा पदाधिकारी कोरोना संकट के दौरान सेवा से गायब मिले। राज्य सरकार ने इसे घोर लापरवाही माना है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी नोटिस के अनुसार इन अफसरों पर डिजास्टर मैनेजमेंट एक्ट, 2005 एवं एपिडेमिक डिजीज एक्ट, 1897 की धाराओं के तहत कार्रवाई की जा सकती है।

मुंबई के दो निजी अस्पतालों को सील किया गया

मुंबई, प्रेट्र : डॉक्टरों और नर्सों समेत मेडिकल स्टाफ के कोरोना पॉजिटिव पाए जाने के बाद मुंबई के दो निजी अस्पतालों को सील कर दिया गया है। बीएमसी के स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया कि मुंबई सेंट्रल के वॉकहार्ट अस्पताल में 3 डॉक्टरों और 26 नर्सों को कोरोना पॉजिटिव पाया गया है। वायरस का संक्रमण रोकने के लिए सभी सुविधाओं को सील कर दिया गया है। किसी को अंदर जाने या बाहर आने की इजाजत नहीं है।

अस्पताल में कई नर्सें केरल की हैं। राज्य कांग्रेस के नेता रमेश चेन्निथला ने ट्वीट किया कि महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे से बात हुई। उनसे मलयाली नर्सों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का अनुरोध किया।

इसके अलावा जसलोक अस्पताल में कम-से-कम एक कर्मचारी के कोरोना पॉजिटिव पाए जाने के बाद नए मरीजों की भर्ती रोक दी गई है और ओपीडी को बंद कर दिया गया है। हालांकि, अस्पताल में काम करने वाली एक नर्स का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें उसने एक से अधिक कर्मचारी के कोरोना पॉजिटिव होने की बात कही है।

▶ वॉकहार्ट अस्पताल में किसी को अंदर जाने या बाहर आने की इजाजत नहीं

▶ जसलोक अस्पताल में नए मरीजों की भर्ती पर रोक और ओपीडी को बंद किया गया

पुणे में एक अस्पताल के 92 कर्मियों को क्वारंटाइन किया गया

पुणे, प्रेट्र : डीवाई पाटिल अस्पताल के 92 कर्मचारियों को क्वारंटाइन कर दिया गया है। इनमें कई डॉक्टर भी शामिल हैं। एक अधिकारी ने बताया कि दुर्घटना के शिकार एक व्यक्ति का इलाज अस्पताल में किया जा रहा था। उसका कोरोना टेस्ट पॉजिटिव आया। इसके बाद इन कर्मचारियों को क्वारंटाइन करने का फैसला लिया गया। एक अन्य अधिकारी ने दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति का तब्लीगी जमात से प्रत्यक्ष या परोक्ष संबंध होने से इन्कार किया है।

फिल्म निर्माता करीम मोरानी की दोनों बेटियां कोरोना पॉजिटिव

एंटरटेनमेंट ब्यूरो, मुंबई : गायिका कनिका कपूर के बाद अब चेन्नई एक्सप्रेस, दिलवाले, हैप्पी न्यू ईयर और रा.वन जैसी फिल्मों के सहनिर्माता करीम मोरानी की दोनों बेटियां शजा और जोया मोरानी कोरोना वायरस से संक्रमित पाई गई हैं। इस खबर की पुष्टि करीम मोरानी ने खुद की है।

मुंबई के जुहू इलाके में रहने वाले करीम मोरानी का परिवार फिलहाल क्वारंटाइन में है। उस इलाके में कई फिल्मी सितारे रहते हैं। परिवार के बाकी सदस्यों की कोरोना संक्रमण की रिपोर्ट आनी बाकी है। शजा मोरानी को मुंबई के नानावटी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जोया भी वहीं भर्ती हैं। शजा और जोया दोनों को अस्पताल के आइसोलेशन वार्ड में रखा गया है। शाह रुख खान के करीबी करीम मोरानी ने बताया कि जोया की पहली रिपोर्ट निगेटिव आई थी, लेकिन अब उसकी कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। उनका परिवार इस वक्त काफी परेशान है। वह खुद काफी थके हुए हैं। बताया जा रहा है कि जुहू में शगुन नाम की जिस बिल्डिंग में यह परिवार रहता है, उसे सील कर दिया गया है।

एहतियात...

कोरोना वायरस से बचाव के लिए सार्वजनिक स्थलों को सैनिटाइज किया जा रहा है। इसी क्रम में मुंबई में सोमवार को शिवसेना विधायक दिलीप लांडे ने सोमवार को एक शिवमंदिर में भी सैनिटाइजर छिड़का। एएनआइ

शब-ए-बरात में कब्रिस्तान न जाएं, पूर्वजों के लिए घर से करें दुआ

जासं, पटना सिटी : 9 अप्रैल को शब-ए-बरात है। इस दिन मुस्लिम पूर्वजों की मजार पर चादर चढ़ाने और दुआ करने के लिए कब्रिस्तान पहुंचते हैं। कोरोना को लेकर लागू लॉकडाउन के नियम एवं शर्तों का अनुपालन करते हुए कोई मुसलमान इस दिन कब्रिस्तान नहीं जाएंगे। कहीं कोई कार्यक्रम भी आयोजित नहीं होगा।

शाहगंज कब्रिस्तान कमेटी समेत पटना स्थित सभी कब्रिस्तान की कमेटियों ने कहा है कि शब-ए-बरात की रात कब्रिस्तान में ताला लगा होगा। इसी कड़ी में बिहार राज्य सुन्नी और शिया वक्फ बोर्ड के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी ने अपील जारी की है। उन्होंने कहा कि लोग घरों में रहें। घर में ही इबादत कर पूर्वजों के लिए दुआ करें। वहीं आलिम व इस्लामिक शिक्षाविदों ने इबादत के साथ कोरोना को देश-दुनिया से खत्म करने एवं सभी इंसानों की जिंदगी को महफूज करने के लिए अल्लाह से विशेष दुआ मांगने की अपील की है।

कोविड-19 से निपटने में कितना कारगर रैपिड टेस्ट

देश में कोरोना वायरस के संक्रमण के 4000 से ज्यादा मामले अब तक सामने आ चुके हैं। यह वायरस के कम्युनिटी ट्रांसमिशन की आशंका को बढ़ा रहा है। यदि कोरोना वायरस का कम्युनिटी ट्रांसमिशन नहीं रोका गया तो यह बेहद खतरनाक हो सकता है। इससे निपटने के लिए केंद्र सरकार ने घोषणा की है कि देश में कोरोना के ज्यादा टेस्ट होंगे। वहीं केरल सरकार ने रैपिड टेस्ट की घोषणा की है जो कि शीघ्र ही परिणाम सुनिश्चित करेगा और वो भी आधे घंटे में। केरल सरकार को इसके लिए भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) की मंजूरी मिल गई है। राज्य के स्वास्थ्य विभाग ने अपने हालिया जारी बयान में कहा है कि आइसीएमआर और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी पुणे द्वारा स्वीकृत किट का उपयोग करते हुए परीक्षण किया जाएगा।

ऐसे समझिए रैपिड टेस्ट

व्यक्ति के शरीर में किसी भी प्रकार का वायरल संक्रमण हुआ है या नहीं, यह जानने के लिए रैपिड टेस्ट किया जाता है। जब कोई रोगाणु व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करता है तो वायरस की प्रतिक्रियास्वरूप शरीर एंटीबॉडीज जारी करता है। रैपिड टेस्ट इन एंटीबॉडीज को रक्त, सीरम या प्लाज्मा नमूनों में पता लगाकर के संक्रमण की पहचान करता है। आमतौर पर महामारी के दौरान वायरस के कम्युनिटी ट्रांसमिशन की जांच के लिए इस टेस्ट को किया जाता है। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार यह सामान्य टेस्ट है और व्यक्ति के ब्लड सैंपल से किया जा सकता है। साथ ही इसके नतीजे महज 10 से 30 मिनट में आ जाते हैं। यह काफी कम कीमत में हो सकता है।

आइसीएमआर का नजरिया

इस तरह की महामारी में रैपिड टेस्ट बेहद ही कारगर सिद्ध हो सकता है, लेकिन यह सार्स-सीओवी2 संक्रमण की पुष्टि करने वाला टेस्ट नहीं है जो कि कोरोना वायरस संक्रमण का कारक बनता है। आइसीएमआर ने 28 मार्च को जारी अपने दिशा-निर्देशों में साफ कहा है कि कोरोना वायरस के संक्रमण की जांच के लिए रैपिड एंटीबॉडी किट की सिफारिश नहीं की जाती है। यह प्राथमिक स्क्रीनिंग टेस्ट है। यदि टेस्ट पॉजिटिव आता है तो यह सार्स-सीओवी2 का संकेत देता है। वहीं नेगेटिव टेस्ट रिपोर्ट आने पर भी कोविड-19 के संक्रमण से इनकार नहीं किया जा सकता है। व्यक्ति को सार्स-सीओवी2 वायरस की पुष्टि के लिए पॉलिमर चेन रिएक्शन (पीसीआर) टेस्ट करवाना ही चाहिए। रैपिड टेस्ट वायरल संक्रमण के 7-10 दिनों के मध्य ही पॉजिटिव आता है और उसके कई सप्ताह बाद तक पॉजिटिव रहता है।

इसलिए केरल में उपयोग

केरल के स्वास्थ्य विभाग द्वारा रैपिड टेस्ट का उपयोग समुदाय के भीतर तेजी से जांच करने और संदिग्ध संक्रमण वाले लोगों की पहचान के लिए किया जा सकता है। उन्हें निगरानी में रखा जा सकता है और यदि आवश्यकता हो तो कोरोना वायरस की पुष्टि के लिए पीसीआर टेस्ट भी कराया जा सकता है। राज्य का स्वास्थ्य विभाग अधिक तेजी से रैपिड एंटीबॉडी किट हासिल करने की योजना बना रहा है, जिसका उपयोग विशेषरूप से कासरगोड जैसे जिलों में किया जा सकता है, जहां बड़ी संख्या में कोरोना वायरस के मामलों की पुष्टि हुई है। अन्य जिलों की अपेक्षा कासरगोड की स्थिति गंभीर है और यहां पर प्रशासन ने सख्त लॉकडाउन उपाय अपनाए हैं।

ये कर सकते हैं टेस्ट

रैपिड टेस्ट वे सरकारी और निजी लैब कर सकते हैं, जिन्हें आइएमसीआर से अनुमति मिली है। इसके लिए डॉक्टर की पर्ची की भी आवश्यकता होती है।

इन्हें करवाना चाहिए टेस्ट

राज्य के स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, ऐसे लोग जिन्होंने हाल ही में विदेश यात्रा की है, विदेश से आने वालों के संपर्क में आने वाले, कोविड-19 के मरीजों के संपर्क में आने वाले, कोरोना के प्रकोप वाले क्षेत्र में रहने वाले लोग जिन्हें श्वसन संबंधी परेशानी हो और वो जो श्वसन संबंधी बीमारी से गुजर रहे हैं, उन्हें रैपिड टेस्ट जरूर करवाना चाहिए।

(स्रोत : मीडिया रिपोर्ट)

सीएनजी सिलेंडरों से होगी ऑक्सीजन की आपूर्ति

तैयारी ▶ सरकार ने सीएनजी उत्पादकों व सिलेंडर निर्माताओं को दिए निर्देश

देश में उपलब्ध आधे सीएनजी सिलेंडरों व ट्रकों का किया जा सकता है इस्तेमाल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में अस्पतालों में नहीं होने दी जाएगी कमी
- कम्युनिटी संक्रमण की स्थिति से निपटने के लिए हो रही है तैयारी
- पेसो से अनुमति प्रमाणपत्र लेने को भी कहा गया है

प्रतीकात्मक

कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में अस्पतालों के सामने ऑक्सीजन की कमी का संकट न पैदा हो इसके लिए सरकार इसकी सप्लाई सीएनजी सिलेंडरों के मार्फत करने पर विचार कर रही है। इसके लिए सीएनजी गैस सिलेंडर आपूर्तिकर्ताओं को तैयार रहने के लिए कहा गया है।

सरकार का आकलन है कि महामारी के कम्युनिटी संक्रमण की स्थिति में देश में वेंटीलेटरों के साथ-साथ ऑक्सीजन सिलेंडरों की भी कमी हो सकती है। ऐसे में भविष्य के लिए अभी से तैयारी कर लेना बेहतर होगा। इसके मद्देनजर स्वास्थ्य मंत्रालय ने पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के जरिए गैस अथारिटी ऑफ इंडिया (गेल) से देश में उपलब्ध आधे सीएनजी सिलेंडरों को ऑक्सीजन की आपूर्ति के लिए खाली रखने तथा पेट्रोलियम एक्सप्लोसिव एंड सेफ्टी ऑर्गेनाइजेशन-पेसो से अनुमति प्रमाणपत्र लेने को कहा है।

एक सीएनजी सप्लायर के अनुसार देश में सारे सीएनजी स्टेशनों पर सीएनजी की आपूर्ति गेल द्वारा अनुबंधित सप्लायरों द्वारा ट्रकों के माध्यम से की जाती है। इसके लिए प्रत्येक ट्रक में सिलेंडरों के कई क्रेट लादे जाते हैं और सीएनजी स्टेशनों पर इन्हें डिलीवर किया जाता है। बीस किलोग्राम वजन के प्रत्येक खाली सीएनजी सिलेंडर में 32 से 40 किलोग्राम तक गैस होती है। ट्रक में ढुलाई व सुरक्षा के लिहाज से इन्हें क्रेट में रखकर ले जाया जाता है। क्षमता के अनुसार तीन तरह के क्रेट होते हैं, जिनमें सिलेंडरों के आकार के अनुसार 6 टन, 7.5 टन अथवा 9 टन गैस होती। इसी प्रकार तीन तरह के आकार और क्षमता वाले ट्रकों से इन क्रेटों को सीएनजी पंपों तक पहुंचाया जाता है। सबसे छोटे ट्रक में 600 किलो, मीडियम साइज ट्रक में 900 किलो तथा लार्ज ट्रक में 1400 किलोग्राम तक गैस लादी जा सकती है। एक अनुमान के अनुसार इस समय देश के प्रमुख शहरों में तकरीबन 2500 ट्रकों के जरिए सीएनजी की आपूर्ति की जा रही है। सरकार इनमें से आधे यानी लगभग 1200 सीएनजी ट्रकों को ऑक्सीजन आपूर्ति के काम में लगाना चाहती है। इसके लिए इनके सीएनजी सिलेंडरों में ऑक्सीजन भरी जाएगी। ऑक्सीजन के उत्पादन एवं फिलिंग व रीफिलिंग के लिए औद्योगिक गैस निर्माताओं के संगठन इंडस्ट्रियल गैस मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन तथा मेडिकल ऑक्सीजन गैस मैन्युफैक्चर्स, रीफिलर्स तथा सप्लायर्स से संपर्क कर सरकार की मदद को कहा गया है।

ऑक्सीजन सिलेंडरों तथा उपकरणों को सैनिटाइज करने के निर्देश

स्वास्थ्य मंत्रालय ने मेडिकल और लिक्विड ऑक्सीजन की सप्लाई करने वाली कंपनियों तथा अस्पतालों से सिलेंडरों को ऑक्सीजन भरने से पूर्व पूरी तरह सैनिटाइज करने के निर्देश जारी किए हैं। साथ ही इसकी उचित प्रक्रिया भी बताई है। इसके मुताबिक ऑक्सीजन भरने से पूर्व प्रत्येक सिलेंडर को साबुन मिले गर्म पानी (जो 50 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक गर्म न हो) से अच्छी तरह धोया जाना चाहिए अथवा उसे फांगिंग मशीन के जरिए रसायन छिड़क कर सैनिटाइज किया जाना चाहिए।

वायरस से लड़ने के लिए स्मार्ट सिटी कमांड सेंटर बने वार रूम

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- पुणे, सूरत, बेंगलुरु व तुमकुरु के स्मार्ट सिटी प्रबंधन ने की अहम पहल
- बेंगलुरु में कोरोना से संबंधित सूचनाओं की जारी होती है डेली बुलेटिन

स्मार्ट सिटी मिशन के तहत विभिन्न शहरों में स्थापित कमांड एंड कंट्रोल सेंटर को कोविड-19 वायरस के मॉनिटरिंग सेंटर के रूप में तब्दील कर दिया गया है। इसके पहले चरण में पुणे, सूरत, बेंगलुरु और तुमकुरु जैसी विभिन्न स्मार्ट सिटी के कमांड एंड कंट्रोल सेंटर को कोविड-19 वायरस से निपटने के लिए वार रूम बनाया गया है। प्रभावित शहरों को प्रशासनिक तौर पर कई जोनों में बांटा गया है। कमांड एंड कंट्रोल सेंटर में बने वार रूम का उपयोग कोविड-19 से जुड़ी जानकारियों को जुटाने और हर वक्त उसे अपडेट करने के लिए किया जा रहा है।

केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय ने स्मार्ट सिटी के कमांड एंड कंट्रोल सेंटर की इस पहल की सराहना की है। मंत्रालय ने बाकी शहरों में भी वहां की जरूरत के हिसाब से इन स्मार्ट सिटी के कमांड एंड कंट्रोल सेंटर के उपयोग का सुझाव दिया है।

महाराष्ट्र के पुणे स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड ने पुणे नगर निगम के साथ मिलकर कोरोना की महामारी की चुनौती से निपटने की रणनीति बनाई है। इसके लिए इंटीग्रेटेड डाटा डैशबोर्ड बनाया गया है, जहां कोरोना वायरस से जुड़ी सूचनाएं हर समय पहुंचती हैं। मंत्रालय के एक अधिकारी ने बताया कि इन सेंटरों में शहरों की चप्पे-चप्पे की जानकारी रहती है, जिसका उपयोग बफर जोन बनाने में किया जा सकता है। इससे महामारी से प्रभावित रोगियों को चिन्हित करने और उन पर निगरानी करने में ये सेंटर काफी प्रभावी साबित हो रहे हैं। पुणे शहर में नायडू संक्रामक रोग अस्पताल में आने वाले संदिग्ध रोगियों और अन्य हेल्थकेयर सूचनाओं की इस कमांड सेंटर से निगरानी की जा रही है। शहर के विभिन्न हिस्सों में बनाए गए क्वारंटाइन सेंटरों में रखे गए संदिग्ध रोगियों की लगातार मॉनिटरिंग की जाती है।

सूरत म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन भी स्मार्ट कमांड एंड कंट्रोल सेंटर के मार्फत शहर के नागरिकों को पल-पल की जानकारी मुहैया करा रहा है। कोरोना वायरस के प्रकोप से प्रभावित लोगों की संख्या, उम्र, रोजाना टेस्ट कराने वाले संदिग्ध रोगियों की संख्या और शहर के किस हिस्से में कोरोना के पॉजिटिव रोगी मिले हैं, सब जानकारी एकत्र की जा रही है। शहर को जोन में बांट दिया गया है। क्वारंटाइन किए गए इलाकों का ब्योरा भी दिया जाता है। सारी जानकारी इसकी वेबसाइट पर उपलब्ध रहती है।

इसी तर्ज पर बेंगलुरु और तुमकुरु में भी वार रूम बनाया गया है, जहां टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से लोगों पर नजर रखी जा रही है। कोरोना से प्रभावित रोगियों के रहने वाली जगह के आठ किलोमीटर तक की जानकारी दी जाती है। शहर को कई ब्लॉकों में बांटा गया है। वार रूम से डेली बुलेटिन जारी की जाती है। रोगियों, संदिग्धों और चिन्हित इलाकों की जानकारी दी जाती है। इसमें कई तरह के आंकड़े व विश्लेषण दिए जाते हैं।

कमांड एंड कंट्रोल सेंटर में महामारी से लड़ने के लिए खोले गए वार रूम में शहर के हर हिस्से के सार्वजनिक स्थलों पर लगे सीसीटीवी कैमरों और जीआएस मैपिंग से नजर रखी जा रही है। हेल्थ वर्करों की ऑनलाइन ट्रेनिंग, एंबुलेंस और मेडिकल सेवाओं की रियल टाइम जानकारी ली जा सकती है।

सरकार ने ढूंढ़ निकाले आठ सौ विदेशी पर्यटक

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना संक्रमण रोकने के लिए लागू लॉकडाउन के कारण देश के अलग-अलग हिस्सों में फंसे विदेशी पर्यटकों की खोज के लिए केंद्र सरकार ने बड़ी मुहिम छेड़ रखी है। इसके तहत पिछले पांच दिनों में करीब आठ सौ विदशियों को खोज निकाला गया है। कई तक भोजन और दवा पहुंचाने का काम किया गया है। हालांकि सरकार ने यह कदम तब्लीगी जमात के उस घटनाक्रम के बाद उठाया है, जिसमें बड़ी संख्या में कोरोना से पीड़ित पाए गए हैं। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विदेशी नागरिकों ने भी हिस्सा लिया था।

पर्यटन मंत्रालय के मुताबिक, पिछले पांच दिनों में खोज निकाले गए विदेशी पर्यटक अब विदेश मंत्रालय और गृह मंत्रालय के साथ ही अपने-अपने देशों के दूतावासों और उच्चायोगों के संपर्क में हैं। इसके साथ ही अन्य की खोजबीन जारी है। मंत्रालय को यह सफलता उस समय मिली है, जब उन्होंने विदेशी पर्यटकों की तलाश के लिए 'स्ट्रैंडइनइंडिया' नाम से एक ऑनलाइन मुहिम छेड़ रखी है। इसके तहत लॉकडाउन में फंसे ऐसे सभी विदेशी पर्यटकों से तुरंत इस पर अपनी जानकारी साझा करने को कहा गया था। मंत्रालय ने यह पहल देश के विभिन्न भागों में विदेशी नागरिकों के ठहरे हुए होने की खबर के बाद उठाया। मंत्रालय के मुताबिक, इनमें से कई ऐसे विदेशी पर्यटक भी सामने आए हैं, जो डर से होटलों में ही छिपे थे। वैसे भी संक्रमण को फैलाने का सबसे ज्यादा खतरा विदेशियों पर था। इस बीच अहमदाबाद में फंसे एक आस्ट्रेलियाई नागरिक ने पोर्टल के जरिये स्थानीय प्रशासन से मिर्गी की दवा के लिए मदद मांगी, जिसके बाद उसे दवा उपलब्ध करा दी गई।

कोरोना वायरस से लड़ाई में अखबार की भूमिका अहम

अखबार सुरक्षित है

संतोष शर्मा, अलीगढ़

- जागरूकता और सतर्कता ही इससे जंग में कारगर हथियार

प्रोफेसर डॉ. हुसैन एस हैदर मेहंदी फाइल

कोरोना वायरस से जंग में अखबारों का बड़ा योगदान है। अहम बात यह है कि अखबारों में गलत खबरें नहीं होतीं। सोशल मीडिया की खबरों में सही व गलत का भेद करना आसान नहीं होता। ऐसे माहौल में लोगों को इससे सावधान रहने की जरूरत है। ऐसे में अखबार पढ़ना हर तरह से सुरक्षित है। ये बातें अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) के जेएन मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन डिपार्टमेंट में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. हुसैनी एस हैदर मेहंदी ने कहीं।

उन्होंने बताया कि अभी तक इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं मिला है कि अखबार से कोरोना वायरस का संक्रमण फैलता है। इसलिए, लोगों को अखबार पढ़ने से घबराना नहीं चाहिए। यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि खाने-पीने की चीजों से भी संक्रमण नहीं फैलता। यह बात भी गलत है कि शराब पीने से संक्रमण ठीक हो जाता है। उन्होंने बताया कि घर में बने कॉटन के कपड़े का मास्क भी इस वायरस से लड़ने में 70 फीसद सक्षम होता है। लोगों को शारीरिक दूरी बनाए रखने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। हाथों को साफ करते रहना चाहिए। जागरूकता ही इस रोग से जंग में कारगर हथियार है।

बॉलीवुड सिंगर कनिका कपूर ने जीती जंग

जागरण संवाददाता, लखनऊ

- कोरोना की छठवीं रिपोर्ट निगेटिव, 18 दिन बाद अस्पताल से हुई डिस्चार्ज

कनिका कपूर फाइल

बॉलीवुड सिंगर कनिका कपूर कोरोना वायरस (कोविड-19) के संक्रमण से मुक्त हो गई हैं। उनकी छठवीं रिपोर्ट निगेटिव आई है। ऐसे में लखनऊ के संजय गांधी परास्नातक आयुर्विज्ञान संस्थान (एसजीपीजीआइ) से उन्हें डिस्चार्ज कर दिया गया है। इस दौरान उनके हावभाव सामान्य दिखे, मगर अब उन्हें क्वारंटाइन नियमों की धज्जियां उड़ाने पर दर्ज हुए मुकदमों से निपटना होगा।

कनिका लंदन से लौटी थीं। वह 11 मार्च को लखनऊ आईं। यहां आकर उन्होंने क्वारंटाइन नियमों का पालन नहीं किया। राजधानी में हाई प्रोफाइल पार्टियां कीं। इसी बीच उन्हें सर्दी-जुकाम हो गया। चार दिन तक वह इसे छिपाएं रहीं। 18 मार्च को सीएमओ को फोन पर सूचना दी। हेल्थ टीम उनके शालीमार गैलेंट आवास पहुंची। यहां 19 मार्च को घर से उनके स्वैब का कलेक्शन किया गया।

20 मार्च को किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) की जांच में कोरोना वायरस की पुष्टि हुई। दोपहर बाद कनिका को एसजीपीजीआइ में भर्ती कराया गया। खबर फैलते ही शहर से लेकर दिल्ली तक सनसनी फैल गई। कनिका की पार्टियों में शामिल रहे उप्र के स्वास्थ्य मंत्री सहित कई वीवीआइपी होम क्वारंटाइन में चले गए। इधर, पीजीआइ में 18 दिन तक कनिका का इलाज चला। लगातार दो रिपोर्ट निगेटिव आने पर डॉक्टरों ने उनको संक्रमण मुक्त घोषित कर दिया। उन्हें सोमवार को डिस्चार्ज कर दिया गया।

14 दिन तक घर में रहना अनिवार्य : कनिका की कुल छह जांचें हुई हैं। केजीएमयू में पहली जांच हुई, शेष पांच जांचें पीजीआइ में हुईं। कनिका के संक्रमण मुक्त होने पर उनके माता-पिता ने भी राहत की सांस ली। मगर, कनिका के बाहरी मूवमेंट पर रोक होगी। डॉक्टरों ने उन्हें 14 दिन तक होम क्वारंटाइन की सलाह दी है। ऐसे में वह तय अवधि तक घर में ही रहेंगी।

राजधानी में अब तक दो मरीज हुए ठीक : लखनऊ में अब तक 11 मरीजों में कोरोना वायरस की पुष्टि हुई है। इसमें कनाडा से लौटी गोमती नगर निवासी महिला केजीएमयू में इलाज से पहले ही ठीक हो चुकी हैं। वहीं, कनिका को पीजीआइ में भर्ती कराकर इलाज किया गया। यह भी ठीक हो गई हैं।

अस्पताल में भी काटा था बवाल

कनिका 20 मार्च को पीजीआइ में भर्ती हुईं। यहां उनका व्यवहार मरीज के बजाए सेलेब्रिटी की तरह रहा। निदेशक डॉ. आरके धीमान ने कनिका पर डॉक्टर और चिकित्सा कर्मी से सही व्यवहार व इलाज में सहयोग न करने का आरोप लगाया। वहीं, कनिका ने सोशल मीडिया पर अस्पताल की अव्यवस्था पर सवाल उठाते हुए जेल करार दिया था।

हाइड्राक्सी क्लोरोक्विन के लिए सब देख रहे भारत का मुंह

जयप्रकाश रंजन, नई दिल्ली

- घरेलू मांग को देख असमंजस में भारत सरकार, देश में 20 करोड़ टैबलेट बनाने लायक कच्चा माल
- देश में उत्पादन बढ़ाने के लिए चीन से चाहिए ईएमएमई की आपूर्ति जो फिलहाल है स्थगित

दुनिया में जैसे-जैसे यह बात फैलती जा रही है कि मलेरिया में इस्तेमाल होने वाली दवा 'हाइड्राक्सी क्लोरोक्विन' कोरोना वायरस से पीड़ित मरीजों में भी काम करती है, वैसे-वैसे इसकी मांग बढ़ती जा रही है। अभी तक 30 देश भारत सरकार से इसकी आपूर्ति की मांग कर चुके हैं। सामान्य परिस्थितियों में भारत की दो कंपनियां ही इन सभी देशों की मांग पूरी करने के लिए काफी हैं. लेकिन कोरोना वायरस के प्रसार को देखते हुए सरकार कोई जोखिम नहीं उठाना चाहती। पिछले शनिवार भारत सरकार ने इसके निर्यात को पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया है। अमेरिका, ब्राजील, नेपाल जैसे देशों की मांग पर सरकार देश में सभी पक्षों से विचार-विमर्श कर रही है कि क्या कुछ विशेष परिस्थितियों में इसका निर्यात किया जा सकता है या नहीं। सरकारी अधिकारी व दवा बनाने वाली कंपनियां यह स्वीकार कर रही हैं कि आनन-फानन में उत्पादन भी बढ़ाना संभव नहीं है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की दो दिन पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ हुई टेलीफोन बातचीत में क्लोरोक्विन दवा का निर्यात करने का आग्रह किया गया था। बाद में ट्रंप ने बताया भी कि, 'हमने मोदी से मलेरिया के इलाज में काम करने वाली दवा 'हाइड्राक्सी क्लोरोक्विन' का निर्यात खोलने की अपील की है। भारत में यह दवा बड़े पैमाने पर बनती है। यह दवा कोरोना के इलाज में भी कारगर है। मैं जानता हूं कि भारत की बड़ी आबादी को भी इसकी जरूरत है। फिर भी मोदी ने इस पर विचार करने का आश्वासन दिया है।' ट्रंप के इस बयान के कुछ ही घंटे बाद ब्राजील के राष्ट्रपति जेएम बोलसोनारो ने भी ट्वीट कर कहा, 'मेरी भारत के पीएम नरेंद्र मोदी से बात हुई है और भारत से 'हाइड्राक्सी क्लोरोक्विन' की आपूर्ति जारी रखने का आग्रह किया गया है। हम लोगों की जान बचाने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते।' इन देशों के अलावा दूसरे यूरोपीय व एशियाई देशों ने भी इसकी मांग की है। इसमें पड़ोसी देश भी शामिल हैं।

भारत सरकार ने लगाया है निर्यात पर प्रतिबंध : भारत में कोरोना वायरस आने वाले दिनों में किस तरह का रुख दिखाएगा, इसको लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। यही वजह है कि भारत सरकार ने पहले इसके निर्यात पर प्रतिबंध लगाया और उसके बाद 4 अप्रैल, 2020 को एक नई अधिसूचना जारी कर यह सुनिश्चित किया कि किसी भी तरह से इसका निर्यात नहीं हो।

स्पष्ट किया गया कि जिन कंपनियों ने पहले निर्यात के लिए एडवांस ले रखा है, वह भी ऐसा नहीं करें। साथ ही स्पेशल इकोनॉमिक जोन से भी इसका निर्यात नहीं होगा। सरकार की पहली वरीयता यह है कि घरेलू स्टॉक पर्याप्त रहे ताकि समय पर इसकी कमी न हो। सरकार अभी सही तरीके से आकलन करने में जुटी है कि भारत में इस दवा के उत्पादन की क्षमता कितनी है और आपातकालीन हालात में इसे कितना बनाया जा सकता है।

देश में मोटे तौर पर चार कंपनियां बनाती हैं यह दवा

दवा निर्माण से जुड़े उद्योग सूत्रों का कहना है कि भारत में मोटे तौर पर चार कंपनियां इपका, मंगलम, वाइटल हेल्थ केयर और कैडिला इसे बनाती हैं। इसमें मुख्य तौर पर '47 हाइड्राक्सी क्लोरोक्विन' नाम का कच्चा माल लगता है और इसे बनाने के लिए ईएमएमई नाम के एक अलग उत्पाद का उपयोग होता है। ईएमएमई के लिए भारत मुख्य तौर पर चीन पर निर्भर रहता है। चीन से आपूर्ति अभी प्रभावित है और कंपनियां कोरोना वायरस की वजह से चीन से माल मंगवाने को लेकर अभी उत्साहित नहीं हैं। मोटे तौर पर एक बार में भारत में संयुक्त तौर पर क्लोरोक्वीन बनाने के लिए 60-80 टन कच्चा माल स्टॉक में है। इससे इसके 20 करोड़ टैबलेट बनाए जा सकते हैं। आम दिनों में यह भारत के साथ ही दुनिया की जरूरत को भी पूरा करने के लिए काफी है। पर अभी तमाम देशों की मांग पूरी करने में भारत अक्षम है। साथ ही भारतीय नागरिकों और यहां संभावित आपातकालीन स्थिति का भी ख्याल रखना है।

लखनऊ मंडल के विकास कोरोना वॉरियर ऑफ द डे

जासं, गोरखपुर : कोरोना वायरस से जंग में रेलकर्मियों का योगदान बढ़ता ही जा रहा है। वे यांत्रिक कारखाना और मैकेनाइज्ड लाउंड्री में अनवरत मास्क और सैनिटाइजर तैयार कर रहे हैं। उनके उत्साह को देखते हुए रेलवे प्रशासन रोजाना कोरोना वारियर ऑफ द डे घोषित करता है। रेलकर्मियों में इसको लेकर उत्साह देखने को मिल रहा है। मुख्य जनसंपर्क अधिकारी पंकज कुमार सिंह के अनुसार लखनऊ मंडल में पांच अप्रैल का कोरोना वॉरियर ऑफ द डे गोरखपुर लॉबी में तैनात हेल्पर खलासी विकास वर्मा को चुना गया। इन्होंने कम लागत में प्रोटेक्शन किट तैयार कर रेल राजस्व की बचत की है। वाराणसी मंडल का कोरोना वॉरियर ऑफ द डे छपरा स्टेशन पर तैनात गुड्स सुपरवाइजर गणेश कुमार को तथा इज्जतनगर मंडल का कोरोना वॉरियर ऑफ द डे काठगोदाम स्टेशन के मुख्य वाणिज्य निरीक्षक मुकेश कुमार को घोषित किया गया है।

बदलें रुटीन, बच्चों को दें वर्चुअल पढ़ाई का माहौल

कोरोना से कैसे लड़ें
जीवन शैली

डॉ. नियति धवन
मनोवैज्ञानिक व लाइफस्टाइल कोच अवेकनिंग इंडिया फाउंडेशन

लॉकडाउन के चलते बच्चों के समय का सदुपयोग हो और उन्हें बोरियत न हो, इसके लिए बहुत से स्कूलों ने वर्चुअल कक्षाएं शुरू कर दी हैं। ऐसे में बच्चों को घर पर रहते हुए स्कूल का टाइमटेबल फॉलो करना पड़ रहा है। उन्हें शुरुआती दौर में दिक्कतें आ रही हैं क्योंकि उनका ध्यान भटक रहा है। कभी किचन में बरतन खड़क रहे हैं तो कभी पापा फोन पर बात कर रहे हैं। ऐसे में न तो वे ठीक से पढ़ पा रहे हैं और न ही घर पर एंज्वाय कर पा रहे हैं। अवेकनिंग इंडिया फाउंडेशन की मनोवैज्ञानिक व लाइफस्टाइल कोच डॉ. नियति धवन ने बताया कि बच्चों के लिए किस तरह की दिनचर्या अपनाएं, समय को सदुपयोगी बनाएं:

बच्चों को स्कूल की तरह करें तैयार

स्कूल नहीं जाना है तो बच्चे भी देर से उठ रहे हैं और सीधा वर्चुअल कक्षाओं में बैठ जाते हैं। इससे वे पढ़ाई के उस माहौल को महसूस नहीं कर पाते, जिसकी जरूरत है। अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों को समय से उठाकर उन्हें कक्षाओं से पहले तैयार करें, नाश्ता करवाएं। इससे उनमें फूर्ति आएगी और कक्षा में मन लगेगा।

दें अलग स्पेस

कोशिश करें कि बच्चे को अलग से कमरा दें ताकि उसका दिमाग पढ़ाई के समय इधर-उधर न भटके। अगर घर में इतने कमरे नहीं हैं तो अभी मौसम ठीक है, बच्चे को बाहर गार्डन में भी बैठा सकते हैं या फिर एक कमरे के एक हिस्से में पर्दा लगाकर बैठाएं।

कक्षा से पहले करवाएं कसरत

बच्चे के लिए यह बड़ा बदलाव है कि वह घर से कक्षा में मौजूद रहे। वह ध्यान केंद्रित कर पाए इसके लिए कक्षा से पहले थोड़ी स्ट्रेचिंग या फिर सूर्य नमस्कार करवाएं। ऐसा करने से यह आदत में ढल जाएगा और आगे के लिए बच्चा इसे अपनी रुटीन का हिस्सा बना लेगा। ● प्रस्तुति : गुरुग्राम से **प्रियंका दुबे मेहता**

दवा और भोजन की जरूरत हो तो जीआरपी को करें फोन

जासं, गोरखपुर : लॉकडाउन के दौरान जरूरतमंदों को दवा और भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के लिए गोरखपुर जीआरपी (राजकीय रेलवे पुलिस) ने हेल्पलाइन नंबर जारी किया है। फोन करते ही जीआरपी के जवान जरूरतमंद के पास मदद के लिए पहुंचेंगे और निःशुल्क दवा व खाना उपलब्ध कराएंगे।

जीआरपी 29 मार्च से कम्युनिटी किचन चला रही है। एसपी रेलवे पुष्पांजलि देवी की देखरेख में जीआरपी लाइन में प्रतिदिन 300 लोगों का भोजन बनता है। जिसे अधिकारी जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाते हैं। इसी व्यवस्था को आगे बढ़ाते हुए एसपी रेलवे ने भोजन के साथ दवा उपलब्ध करवाने की सुविधा भी शुरू की है। जीआरपी के हेल्पलाइन नंबर 8299789105 पर फोन करने वाले जरूरतमंद के घर जीआरपी के सिपाही पहुंचकर भोजन के साथ निःशुल्क दवा भी उपलब्ध कराएंगे। पुष्पांजलि देवी का कहना है कि लोग कोरोना से लड़ने में प्रशासन का सहयोग करे। सभी लोग घरों में बने रहें, लॉकडाउन का पालन करें। भोजन व दवा की जरूरत होने पर हेल्पलाइन नंबर पर फोन करें।

बुजुर्ग और बेसहारों की ऐसे करें मदद

कोरोना लॉकडाउन के कारण सभी लोग घरों में रहने को मजबूर हैं। परेशान भी हैं। लेकिन बुजुर्ग और बेघर जैसे ज्यादा जोखिम वाले लोगों की परेशानियां सामान्य से बढ़कर हैं। इसलिए ऐसे जरूरतमंद लोगों का खास ध्यान रखा जाना जरूरी है। संक्रमण के प्रसार को रोकने के लिए जरूरी है कि ऐसे लोगों को बाहर निकलने की नौबत नहीं आए। यह सुनिश्चित करने के लिए सक्षम लोगों को कुछ उपाय और प्रयास भी करने होंगे। एज यूके की निदेशक कैरोलिन अब्राहम्स, कुछ अन्य विशेषज्ञ तथा कैंपेन एन्ड लोन्लीनेस के लोग कुछ ऐसे टिप्स बता रहे हैं, जिनसे सक्षम लोग अपने आसपास के बुजुर्गों तथा अन्य जोखिम वाले लोगों की मदद कर उन्हें घर से निकलने को मजबूर नहीं होने दें। ऐसा करने से संक्रमण का खतरा टालने के साथ ही धर्मार्थ काम भी हो जाएगा।

बेघरों की भी करें मदद

लॉकडाउन के कारण काम-धंधा चौपट है। कई लोग बेघर भी हैं। खुले आसमान के नीचे भूखे रहने को मजबूर हुए हैं। ऐसे लोगों के लिए खाने का इंतजाम करने के लिए स्वैच्छिक रूप से फूड बैंक बनाया जा सकता है। इस उपाय से बेघरों को खाने के लिए इधर-उधर भटकने से रोका जा सकेगा।

संवाद के लिए डिजिटल तरीके अपनाएं

सरकार ने शारीरिक दूरी की बात कही है, जिसमें आमने-सामने का संवाद कठिन हो सकता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि सामाजिक तौर पर कट जाएं। खास दिक्कत उन बुजुर्गों के लिए है, जो तकनीक से बहुत ज्यादा वाकिफ नहीं हैं। ऐसे लोगों के लिए कोई ऐसा रचनात्मक उपाय करना चाहिए, जिससे संपर्क बना रहे और उनका मनोबल बना रहे। वैसे तो आमतौर पर फोन, ऑनलाइन या पोस्ट के जरिए संपर्क रखना आसान है। अहम यह है कि कम से कम जोखिम वाले तरीके अपना कर लोगों के संपर्क में रहें और उन्हें संसूचित रखें।

एक्टिविटी और मूवमेंट को प्रोत्साहित करें

घरों में बंद बुजुर्गों के लिए मानसिक परेशानी के साथ ही उनके मूवमेंट और एक्टिविटी में भी कमी आ जाती है। यह उनके शारीरिक स्वास्थ्य पर भी असर डालता है। इसलिए उन्हें शारीरिक तौर पर सक्रिय रहने के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। ऐसे में उनकी रुचि या आदतों के अनुरूप वैसे सामान उपलब्ध करा सकते हैं, जिनसे वे काम में लगे रह कर अपनी एक्टिविटी बनाए रखें और अकेलापन भी महसूस नहीं करें। इसके लिए घरों के अंदर लगे पौधों की देखभाल कर प्रकृति से संवाद बनाना भी एक अच्छा तरीका है।

संभव हो तो समय भी दें

जिन लोगों को पूरी तरह से खुद आइसोलेट रहने की जरूरत नहीं है, वे शारीरिक तौर पर भी मदद कर सकते हैं। इसमें सक्षम संगठनों के स्वयंसेवक शामिल हो सकते हैं। ऐसे लोगों का ग्रुप बनाया जा सकता है, जो दूसरों की मदद के लिए स्वैच्छिक रूप से समय दे सकते हैं। इसके तहत बाजार से सामान लाने, लोगों के लिए खाना बनाने, उनका वितरण जैसे काम किए जा सकते हैं। कई संगठन इन कामों में लगे हैं। आप भी उनसे जुड़कर मदद का हाथ बढ़ा सकते हैं।

खाना, स्वच्छता सामग्री की मदद दें

संपन्न लोग अभी अपने लिए दैनिक जरूरत के सामान को घरों में भर रहे हैं। इस प्रवृत्ति को हतोत्साहित किया जाना चाहिए। ऐसे में फूड बैंक अन्य सामानों के दान में कमी देखी गई है। जरूरत है कि फूड बैंक में अपना सहयोग बढ़ाएं। पता करें कि किस फूड बैंक में किस चीज की कमी है और आप क्या सहयोग कर सकते हैं। कोरोना महामारी की रोकथाम के लिए स्वच्छता भी जरूरी है। बार-बार हाथ धोने, मास्क पहनने आदि की सलाह दी जाती है। इसके लिए जरूरतमंदों को साबून, मास्क और सैनिटाइजर भी दे सकते हैं।

दिल खोलकर करें दान

किसी भी धर्मार्थ कार्य के लिए दान बहुत अहम होता है। इसके बगैर बड़े पैमाने पर मदद का अभियान चलाना मुश्किल होता है। आप कोरोना संकट से निपटने में संसाधनों की तंगी दूर करने के लिए सरकार या स्वयंसेवी संगठनों को दान देकर नेक काम कर सकते हैं। कई सरकारों और संगठनों ने इसके लिए ऑनलाइन दान का भी विकल्प उपलब्ध कराया है, जिससे आप घर बैठे ही सहयोग राशि दे सकते हैं।

पता करें उनकी जरूरतें

यदि आपके पड़ोस में कोई ऐसा परिवार है, जिसमें सिर्फ बुजुर्ग ही हैं तो सबसे पहले उनकी जरूरतों का पता करें। इसके लिए एप या मोबाइल फोन का इस्तेमाल करें। या फिर बुजुर्ग के दरवाजे के बाहर कोई कार्ड भी लगा सकते हैं, जिस पर वे अपनी जरूरत के सामानों के नाम लिख दें। यदि आपको वायरस फैलने का डर हो तो वे सामान दरवाजे पर ही रख दें।

अकेलापन दूर करने की करें कोशिश

बुजुर्गों का अकेलापन दूर करने के लिए वाट्सएप ग्रुप पर नियमित रूप से सूचनाएं शेयर करते रहें। वीडियो कॉल करें, फेसबुक पर पोस्ट भी डालें। यदि आपको पता हो कि पड़ोसी ट्विटर या अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करते हैं तो इनका भी इस्तेमाल करें। जरूरत हो तो एप का भी उपयोग करें।

ऑनलाइन डर न फैलाएं

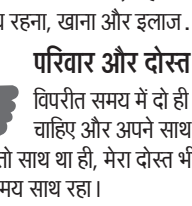

इन दिनों जब हम अपने घरों में बैठे हैं तो जाहिर तौर पर ऑनलाइन ज्यादा समय देते हैं। डिजिटल तरीके से संवाद करते हैं। इसलिए जरूरी है कि किसी को कोई भी सूचना देने से पहले उसका संदर्भ जान लें और उसकी पुष्टि भी कर लें। जब आप सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर रहे हों तो यह ध्यान रखें कि फिलहाल लोग अकेलापन महसूस कर रहे हैं, ऐसे में आपका संदेश किसी के लिए संत्रास या भय पैदा करने वाला नहीं हो। कोई ऐसी अपुष्ट बात या अफवाह नहीं फैलाएं, जो किसी के लिए परेशानी या अनावश्यक डर पैदा करे। (स्रोत : इंडिपेंडेंट)

चार युवाओं का संकल्प, लोगों तक पहुंचे अन्न और जल

कोरोना के योद्धा

विपदा की इस घड़ी में लोग अपने-अपने तरीकों से पीड़ितों की मदद कर रहे हैं। इनमें युवा भी बढ़-चढ़कर शामिल हो रहे हैं। बिहार में मधुबनी के जयनगर में चार युवा भूखे लोगों को भोजन व प्यासों को पानी उपलब्ध करा रहे हैं। प्रतिदिन वे मालवाहक ऑटो में खाना व पानी लेकर जयनगर के विभिन्न इलाकों में जा रहे हैं। इस पर आने वाला खर्च भी वे मिलकर वहन करते हैं। इन युवाओं ने संकल्प लिया है कि लॉकडाउन तक उनका यह अभियान जारी रहेगा।

जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराने के साथ जागरूक करते गोपाल पूर्वे (बाएं)।

इस विचार को बनाया आधार

होटल चलाने वाले गोपाल पूर्वे, मिठाई की दुकान के संचालक सोनू महथा, राकेश कुमार व व्यवसायी शिपू कुमार का काम लॉकडाउन के चलते बंद हो गया। इससे इनके यहां काम करने वाले कारीगर बेरोजगार हो गए। इसे देखते हुए इन लोगों ने निर्णय लिया कि क्यों न इन्हीं कारीगरों से भोजन बनवाकर गरीबों में बांटा जाए। इससे इन कारीगरों की रोजी-रोटी भी चलती रहेगी और गरीब व असहायों की मदद भी होती रहेगी।

नाम दिया 'हम और आप' अभियान

30 मार्च से इसकी शुरुआत हुई। इस मुहिम को इन लोगों ने 'हम और आप' अभियान नाम दिया। प्रशासन की अनुमति से मालवाहक ऑटो में खाना व पानी लेकर चल दिए। पहले दिन 221 लोगों को भोजन कराया। अब यह आंकड़ा प्रतिदिन करीब तीन सौ हो गया है। ये लोग गाड़ी लेकर निकलते हैं तो रास्ते में जो भी भूखा मिलता है उसे खाना व पानी देते हैं।

जारी किए दो मोबाइल नंबर

अभियान के तहत इन युवाओं ने दो मोबाइल नंबर भी जारी किए हैं। जरूरतमंद इस पर फोन करता है तो उस तक भोजन पहुंचाते हैं। इतना ही नहीं इस दौरान ये लोग कोरोना से बचाव के लिए प्रचार भी करते हैं। जरूरतमंदों को हाथ धोने के लिए साबुन देते हैं। खाना बनाने से लेकर इसके वितरण में सफाई व फिजिकल डिस्टेंसिंग का पूरा ख्याल रखते हैं।

मदद सबसे महत्वपूर्ण

गोपाल पूर्वे, सोनू महथा, राकेश कुमार व शिपू कुमार का कहना है कि प्रतिदिन छह से सात हजार रुपये खर्च होते हैं, जिसे हमलोग मिलकर वहन करते हैं। संकट की इस घड़ी गरीबों और जरूरतमंदों की मदद से बड़ा कोई कार्य नहीं।

● प्रस्तुति : मधुबनी से **राघवेंद्र झा**

साथ-साथ लड़ी लड़ाई दोस्ती भी गहराई

कोरोना के विजेता

ये कहानी उन दो अजनबी युवकों की है जो लंदन से लौटते समय फ्लाइट में मिले। सहयात्री-सा संवाद किया फिर अपने-अपने घर पहुंच गए। कुछ दिनों बाद दोनों का स्वास्थ्य गड़बड़ हो गया। जांच कराई तो दोनों की रिपोर्ट में कोरोना पॉजिटिव आया। संयोग ऐसा बना कि दोनों एम्स रायपुर के एक ही वार्ड में भर्ती कराए गए। इसी बीच इनकी दोस्ती गहरी हुई और एक-दूसरे का हौसला बढ़ाते रहे। अब दोनों दोस्त ठीक होकर अपने-अपने घर पहुंच गए हैं। रायपुर के देवेंद्रनगर निवासी 21 साल के दक्ष नथानी की जुबानी सुनिए कोरबा के उनके दोस्त संग कोरोना से जंग की कहानी :

बातें और यादें साथ थीं

लंदन में कोरोना संक्रमण की स्थिति को देखते हुए पढ़ाई बीच में ही छोड़कर 18 मार्च को रायपुर लौटा। फ्लाइट में कोरबा निवासी 21 वर्षीय एक शख्स मिले। थोड़ी बहुत बातचीत हुई। रायपुर एयरपोर्ट पहुंचते ही स्क्रीनिंग के बाद हम लोग अपने-अपने गंतव्य की ओर चल दिए। मोबाइल नंबर भी एक-दूसरे का नहीं ले पाए थे, लेकिन बातें और यादें साथ थीं।

फिर मिलकर कोरोना को हराया

घर लौटने के कुछ ही दिन बाद कोरोना के लक्षण दिखे। इस बीच सैंपल टेस्ट के बाद रिपोर्ट पॉजिटिव आई और 27 मार्च को एम्स में भर्ती हो गया। चिकित्सकों का तो साथ था, लेकिन अकेलापन बर्दाश्त नहीं हो रहा था। दो दिन बाद जैसे ही एक युवक मेरे वार्ड में लाया गया, मेरे चेहरे पर मुस्कान लौट आई। ये वही युवक था, जिससे फ्लाइट में जान-पहचान हुई थी। फिर दिन रात का साथ मिल गया। एक हौसला भी मिला, मिलकर कोरोना को हराने का। वार्ड में एक साथ रहना, खाना और इलाज... पता ही नहीं चला कब ठीक हो कर घर पहुंच गए।

परिवार और दोस्त से मिली हिम्मत

विपरीत समय में दो ही चीजें साथ होती हैं। एक तो खुद पर विश्वास होना चाहिए और अपने साथ होने चाहिए। मेरे लिए इस संघर्ष की घड़ी में मेरा परिवार तो साथ था ही, मेरा दोस्त भी मेरी हिम्मत बना। सारे अनुभव बांटे और अस्पताल में पूरे समय साथ रहा।

● प्रस्तुति : रायपुर से **आकाश शुक्ला**

मोबाइल को बनाएं बच्चों की पाठशाला

सुमिता जायसवाल, पटना

लॉकडाउन के दौरान अभिभावकों की सबसे बड़ी चिंता बच्चों को सकारात्मक कार्यों में व्यस्त रखना और उनकी पढ़ाई जारी रखने को लेकर है। इसके लिए बिहार सरकार ने यूनिसेफ के सहयोग से उन्नयन बिहार एप 'मेरा मोबाइल मेरा विद्यालय' लांच किया है। इसमें छठी से12वीं तक के बच्चे आसानी से घर पर ही अपनी पढ़ाई कर सकते हैं। एप में बच्चे शिक्षकों से आनलाइन सवालों के जवाब भी पूछ सकते हैं। बच्चों को गणित और विज्ञान पढ़ाने के लिए दिल्ली आइआइटी के विद्यार्थी भी जुड़े हैं। बिहार बोर्ड के शिक्षक और और दिल्ली आइआइटी के छात्र निर्धारित शेड्यूल के अनुसार ऑनलाइन उपलब्ध रहेंगे ताकि बच्चे पाठ पढ़ते समय अपनी जिज्ञासा का समाधान भी आसान तरीके से तुरंत पा सके।

बिहार शिक्षा परियोजना परिषद की स्टेट प्रोग्राम ऑफिसर किरण कुमारी ने बताया कि शिक्षकों को हाल ही में ऑनलाइन पढ़ाने के लिए फेसबुक पेज के जरिए ट्रेनिंग भी दी गई है। सभी जिलों के जिला शिक्षा पदाधिकारी और स्कूलों के प्राचार्य को पत्र जारी कर उक्त व्यवस्था की जानकारी दे दी गई है। साथ ही शिक्षकों को शेडयूल के अनुसार ऑनलाइन उपस्थित रहने, अभिभावकों को जानकारी देने और विद्यार्थियों के वाट्सएप ग्रुप बनाने के भी निर्देश भी दिए गए हैं। किरण ने बताया कि इसी सप्ताह दूरदर्शन बिहार से भी बच्चों को पढ़ाने के लिए स्लॉट की मांग की गई है। जैसे ही स्लॉट उपलब्ध होगा पढ़ाई का रूटीन बनाकर टीवी पर भी वीडियों के जरिए पढ़ाई शुरू करा दी जाएगी।

पढ़ाई होगी रोचक और आसान : यूनिसेफ बिहार की शिक्षा विशेषज्ञ प्रमिला मनोहरन ने बताया कि लॉकडाउन के दौरान बच्चे घर में स्वस्थ, सुरक्षित रहने के साथ ही अपनी पढ़ाई भी जारी रखें इसके लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के निर्देश पर बांका उन्नयन को ही विस्तार दिया गया है। इस एप को गूगल (या अन्य संबंधित प्लेटफार्म) प्ले स्टोर से डाउनलोड कर सकते हैं। इस एप के जरिए पढ़ाई करना बेहद आसान और रोचक है। बच्चे किसी सवाल के समाधान के लिए कॉपी में लिखकर उसकी फोटो खींचकर भी शिक्षक से पूछ सकते हैं। इस एप के अलावा भी बच्चे ई-पाठशाला, दीक्षा पोर्टल, कॅरियर काउंसिलिंग पोर्टल एवं लाइव सेशन के जरिए पढ़ाई के साथ अपने सवालों के समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

ऑनलाइन स्टडीज के एप

उन्नयन बिहार एप : मेरा मोबाइल मेरा विद्यालय : बिहार बोर्ड के कक्षा छह से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए अध्ययन सामग्री, मूल्यांकन एवं अभ्यास एवं शिक्षकों से ऑनलाइन सवाल पूछने की सुविधा निशुल्क उपलब्ध ।

दीक्षा पोर्टल : सीबीएसई की कक्षा पहली से12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए सभी विषयों के अध्ययन सामग्री, वीडियो आलेख एवं निशुल्क इंटरैक्टिव सेशन की सुविधा ।

कॅरियर काउंसिलिंग पोर्टल एवं लाइव सेशन : कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए कॅरियर संबंधी सलाह दी जाती है। प्रत्येक गुरुवार को शाम चार से पांच बजे तक लाइव कॅरियर काउंसिलिंग सेशन । आगामी 9 अप्रैल को होगा लाइव सेशन ।

ई-पाठशाला : सभी कक्षाओं की डिजिटल पुस्तकें और अन्य अध्ययन सामग्री से पढ़ाई की सुविधा।

मास्क के साथ प्रति मर्श नस्य भी करें, मिलेगी दोहरी सुरक्षा

कोरोना से कैसे लड़ें आयुर्वेदाचार्य

अनिल भारद्वाज, गुरुग्राम

माना जा रहा है कि कोरोना वायरस का संक्रमण ड्रॉपलेट से हो रहा है। इसलिए हर व्यक्ति को मास्क पहनने की सलाह दी जा रही है, लेकिन इसके साथ अगर आयुर्वेदिक विधि अपनाई जाए तो दोहरी सुरक्षा मिल सकती है।

प्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. परमेश्वर अरोड़ा का कहना है कि किसी भी महामारी के फैलने को चरक संहिता, सुश्रुत संहिता एवं आचार्य वागभट्ट रचित अष्टांग संग्रह आदि आयुर्वेद के ग्रंथों में जनपदोधवंस बताया गया है। ऐसे समय में वातावरण में उपस्थित वायु में रोग उत्पन करने वाले विषाणु और जीवाणुओं के रहने की संभावना रहती है। इनसे बचने के लिए नाक में तेल लगाने का विधान है, जिसे प्रति मर्श नस्य भी कहा जाता है।

ऐसे तैयार करें तेल : 500 ग्राम सरसों के तेल में पीपल, आम या पान का एक हरा पत्ता डालकर तेल को इतना उबालें कि पत्ता फ्राई हो जाए। अब इस तेल को छानकर ठंडा करके रख लें।

इस तरह करें उपयोग : दिन में तीन बार या कम से कम बाहर जाते समय इस तेल की कुछ बूंदों को हथेली पर रख लें और उंगली से अपने होठों पर बाहर और अंदर दोनों ओर से लगाएं। छोटी उंगली की सहायता से नाक के अंदर भी यह तेल लगाएं। इससे सुरक्षा मिलेगी।

सरसों के तेल में पीपल, आम या पान का पत्ता उबाल कर बनाएं सुरक्षा कवच

डॉ. परमेश्वर अरोड़ा। जागरण

आंतरिक सुरक्षा कवच

चूंकि कोरोना का वायरस मुख्य रूप से नाक या मुंह के रास्ते से ही शरीर में प्रवेश करता है, ऐसे में यह तेल एक बायोलॉजिकल बैरियर यानी नाक और मुंह की म्यूकस सतह के ऊपर एक आंतरिक सुरक्षा कवच की तरह काम करता है और वायरस को शरीर में प्रवेश करने से रोकता है। अगर मास्क के साथ इस तरह से तैयार तेल को भी नाक और मुंह में लगाया जाए यह निश्चित ही भी दोहरी सुरक्षा मिलेगी, घातक वायरस से बचने के लिए काफी कारगर होगा।

दो संस्थाएं प्रतिदिन सवा लाख लोगों को करा रहीं भोजन

राज्य ब्यूरो, जयपुर : लॉकडाउन के दौरान जरूरतमंद परिवारों को जयपुर में दो संस्थाएं भोजन कराने में अहम भूमिका अदा कर रही हैं। राधास्वामी सत्संग और अक्षयपात्र फाउंडेशन दोनों मिलाकर सवा लाख लोगों से ज्यादा के लिए भोजन तैयार कर रही हैं। राधास्वामी सत्संग की रसोई में एक दिन में औसतन 80 से 90 हजार लोगों का खाना तैयार हो रहा है, वहीं अक्षयपात्र में करीब 44 हजार लोगों के लिए। लॉकडाउन के चलते हजारों परिवारों के लिए दो समय की रोटी जुटाना भी मुश्किल हो रहा है। दरअसल, जयपुर के बड़े हिस्से में कर्फ्यू भी लगा है, जिससे स्थितियां और गंभीर हैं। यही कारण है कि शहर की विभिन्न संस्थाएं और व्यक्ति अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार जरूरतमंदों तक भोजन पहुंचाने में जुटे हैं। इसी कड़ी में जयपुर से कुछ दूरी पर स्थित बीलवा में राधास्वामी सत्संग में सबसे बड़ी रसोई चल रही है। यहां सोमवार को 91 हजार लोगों का खाना बनाया गया है। यहां के सेवादार बताते हैं कि शुरुआत में 10-15 हजार लोगों का खाना बना था और अब यह संख्या बढ़ कर 90 हजार तक पहुंच गई है। इस रसोई घर में एक वक्त का खाना पकाने के लिए लगभग 200 लोग एक साथ सुबह चार बजे से काम शुरू करते हैं। भोजन में रोटी, सब्जी और चावल के साथ ही पानी का पाउच भी दिया जाता है।

दूसरी बड़ी रसोई अक्षय पात्र फाउंडेशन की है। अक्षयपात्र राजस्थान के 13 जिलों में मिड डे मील तैयार करता है। जयपुर के जगतपुरा में इसकी ऑटोमेटिक रसोई है। इसी में प्रतिदिन करीब 44 हजार लोगों के लिए खाना तैयार हो रहा है। अन्य जिलों में भी इसी तरह खाना तैयार किया जाता है। इस तरह पूरे प्रदेश में करीब 80 हजार लोगों के लिए संस्था द्वारा खाना तैयार हो रहा है। संस्थान की इस रसोई में रोजाना लगभग दो लाख रोटियां बनाई जा रही हैं।

दूसरा पहलू

मनोवैज्ञानिकों को उम्मीद, साफ सफाई की आदत सिखा जाएगी महामारी, हाथों की सफाई हमारी आदत में शुमार हो जाए तो बने बात

बुरी यादें तो अच्छी आदतें भी दे जाएगा कोरोना

रूमा सिन्हा, लखनऊ

हमारी बड़ी खासियत यही है कि किसी काम को यदि लगातार कुछ समय तक करते रहें तो वह हमारी आदत में शुमार हो जाता है। जैसे कुछ लोगों की आदत सुबह उठकर चाय पीने की होती है। इसी तरह सुबह टहलने जाने वाले अपनी आदत को नहीं छोड़ते, भले ही कितना भी ठंड हो या गर्मी। दरअसल, हम कोई भी काम लंबे समय तक निरंतर करते हैं तो उसके आदी हो जाते हैं।

कोरोना के डर के बहाने ही सही बार-बार हाथ धोने, मास्क पहनने, दूसरों से हाथ न मिलाने और साफ-सफाई रखने जैसी कई चीजों का हम पालन कर रहे हैं। डर के कारण ही सही, लेकिन स्वास्थ्य के लिए इन अच्छी आदतों को हमें यूं ही भविष्य में भी जारी रखना होगा। यह कहना है किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय (केजीएमयू) के मनोरोग विभाग के हेड डॉ. पीके दलाल व नेशनल पीजी कॉलेज की साइकोलॉजिस्ट डॉ. नेहाश्री श्रीवास्तव का।

कोरोना वायरस के डर के बहाने ही सही बार-बार हाथ धो रहे हैं लोग। प्रतीकात्मक

डॉ. दलाल कहते हैं कि अच्छा तो तब होगा जब संकट समाप्त होने के बाद भी हम इन्हें अपने व्यवहार में अमल में लाते रहें। उन्होंने कहा कि इस बात की चर्चा हो रही है कि जापान में कोरोना का वह प्रभाव नहीं दिख रहा है जो अन्य देशों में है। कारण यह माना जा रहा है कि जापान ने 1918 में एशियन फ्लू के समय से मास्क पहनना शुरू किया था। जापानी आज भी मास्क का प्रयोग करते हैं।

यही वजह है कि जापान को कोरोना वायरस उस तरह से नुकसान नहीं पहुंचा पाया, जैसे उसने अन्य देशों को प्रभावित किया है। डॉक्टर दलाल कहते हैं कि हमें भी कुछ ऐसा ही करने की जरूरत है। कोरोना के डर के बहाने ही सही इधर-उधर थूकने की गंदी आदत को भी खत्म करना होगा, जिसे स्वच्छ भारत अभियान के तहत कई कोशिशें के बावजूद भी हम अब तक सुधार नहीं पाए हैं। वहीं विश्व स्वास्थ्य संगठन हर साल हैंड हाइजीन डे मनाकर भी लोगों को जागरूक करने में विफल रहा। शायद कोरोना हमारी आदतें बदल सके। अब हमें लोगों को टोकना भी पड़ेगा क्योंकि इससे हम सब का स्वास्थ्य भी जुड़ा है।

नेशनल पीजी कॉलेज की साइकोलॉजिस्ट डॉ. नेहाश्री श्रीवास्तव कहती हैं कि यह समय अपने व्यवहार परिवर्तन का भी है। डॉ. श्रीवास्तव कहती हैं कि कोरोना शायद हमें जिंदगी के लिए एक महत्वपूर्ण सबक भी दे जाए। जो काम स्वच्छ भारत अभियान के तहत नहीं हो पा रहा था, वह कम से कम अब सफल होता दिखाई दे रहा है।

रोबोट किए तैनात...

तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में स्थित स्टेनले अस्पताल के कोरोना आइसोलेशन वार्ड में इंटरेक्टिव रोबोट तैनात किए गए हैं। इस रोबोट का नमा जफी है। सोमवार को मेडिकल स्टाफ ने रोबोट के एक डेमो में हिस्सा लिया। प्रेट्र

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
मंगलवार 7 अप्रैल 2020

दैनिक जागरण

अच्छा स्वास्थ्य सबसे बड़ी संपदा होती है

लॉकडाउन के बाद

कोरोना संकट से बचने के लिए लागू देशव्यापी लॉकडाउन की अवधि खत्म होने में अब जब एक सप्ताह ही बचा है तब फिर यह सही समय है कि उसके बाद के हालात का सामना करने की रूपरेखा बनाई जाए। ऐसा करते समय देश के उन इलाकों को लॉकडाउन में ही रखना जरूरी हो सकता है जहां कोरोना वायरस की चपेट में आए लोगों की संख्या अधिक है या फिर जहां के बारे में यह संदेह है कि वहां कोरोना मरीज हो सकते हैं। दुर्भाग्य से ऐसे कई इलाके हैं और इसकी एक बड़ी वजह तब्लीगी जमात के लोगों की घोर गैर जिम्मेदाराना हरकतें हैं। चूंकि इन जमातियों ने अपनी हरकतों से कोरोना के खिलाफ लड़ाई को कठिन बना दिया है इसलिए उनके प्रति सख्ती बरतने में तनिक भी संकोच नहीं किया जाना चाहिए। उनकी सख्त निगरानी करते हुए ही आर्थिक-व्यापारिक गतिविधियों को गति देने के कदम उठाने का काम किया जाना चाहिए। ऐसे कदम उठाते समय यह सुनिश्चित करना होगा कि हर स्तर पर आवश्यक सावधानी का परिचय दिया जाए।

लॉकडाउन को लागू करने का फैसला यकायक लेना जरूरी भी था और मजबूरी भी, लेकिन उससे बाहर आने का फैसला सुविचारित और सुव्यवस्थित होना चाहिए ताकि कम से कम समस्याओं का सामना करना पड़े। समस्याओं का सामना करते और सतर्कता का परिचय देते हुए आर्थिक-व्यापारिक गतिविधियों को शुरू करने की जरूरत इसलिए है, क्योंकि लोगों की सेहत के साथ ही उनकी रोजी-रोटी की भी चिंता करनी है। निःसंदेह इस चिंता का समाधान तभी होगा जब कारोबार पटरी पर लौटेगा। यदि आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए चुनिंदा कारोबार जारी रह सकता है तो फिर अन्य कारोबारी गतिविधियों को भी जारी किया जा सकता है। यह अच्छी बात है कि इस सिलसिले में प्रधानमंत्री की मुख्यमंत्रियों से चर्चा हो चुकी है, लेकिन आवश्यक यह है कि इसकी कोई कारगर योजना बने। केंद्र और राज्य सरकारों को कारोबारी गतिविधियों को फिर से शुरू करने की कार्ययोजना बनाने के साथ ही फसलों की कटाई और अन्न के भंडारण और वितरण की भी कार्ययोजना को अंतिम रूप देने के लिए सक्रिय होना चाहिए। चूंकि इन सब कार्ययोजनाओं पर अमल के साथ ही परिवहन और आवागमन बढ़ेगा इसलिए इसकी भी कोई प्रभावी रूपरेखा बनानी होगी कि सार्वजनिक स्थलों में भीड़-भाड़ न होने पाए और लोग सेहत, स्वच्छता के साथ सोशल डिस्टेंसिंग को लेकर केवल सतर्क ही नहीं रहें, बल्कि उसका पालन भी करें। स्पष्ट है कि लॉकडाउन के बाद हालात सामान्य करने में जितना चौकस शासन-प्रशासन को रहना होगा उतना ही आम जनता को भी। तब्लीगियों के ओछे आचरण को देखते हुए जोखिम उठाने की गुंजाइश और कम हो गई है।

कोरोना का खतरा

एक सप्ताह पहले तक राहत और सुकून की सांस ले रहे झारखंड में सात दिनों के भीतर कोरोना के चार मरीज सामने आए हैं। जाहिर है एक-एक कर सामने आ रहे कोरोना के बढ़ते मामलों से सरकार से लेकर आम जन तक चिंतित हैं। ऐसे में सावधानी और सतर्कता ही हमें इस वैश्विक महामारी से बचा सकती है। झारखंड में चार कोरोना पॉजिटिव मरीजों में दो सीधे तौर पर तब्लीगी जमात से जुड़े हैं, जबकि सोमवार को संक्रमित पाई गई महिला के बारे में माना जा रहा है कि यह मलेशियाई तब्लीगी महिला के संपर्क में आने से संक्रमित हुई है। भारत में अभी कोरोना तीसरे फेज (कम्युनिटी ट्रांसफर का चरण) में पहुंचा है या नहीं इस पर अभी चारों ओर बहस छिड़ी है, लेकिन सबसे ज्यादा अहम है कम्युनिटी ट्रांसफर की स्थिति को रोकना। बड़े-बड़े शहरों में रोजी-रोजगार के लिए रह रहे लोग बड़ी संख्या में लॉकडाउन के बाद भी आए हैं। इनमें हजारों लोग क्वारंटाइन में रखे गए हैं, लेकिन अभी भी बड़ी तादाद ऐसे लोगों की है जो बाहर से आने के बाद न तो क्वारंटाइन में है न इनकी कोई स्क्रीनिंग हो सकी है। इनमें से अगर कोई कोरोना संक्रमित हुआ तो बड़े पैमाने पर संक्रमण फैला सकता है। इस खतरे को समझना होगा। बड़े पैमाने पर लोगों ने जागरूकता भी दिखाई है और जांच के लिए खुद आगे आए हैं। हम सबको इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। समय रहते लॉकडाउन लागू कर हमारे देश ने काफी हद तक कोरोना के संक्रमण पर काबू पाया, लेकिन लापरवाहियां इस एहतियात पर भारी पड़ रही हैं। लॉकडाउन और क्वारंटाइन के नियम-शर्तों को तोड़ रहे हैं उन्हें बहुत गंभीरता से यह समझ लेना चाहिए कि एक झटके में हजारों-लाखों लोगों को अपनी चपेट में लेने वाली बीमारी साधारण नहीं हो सकती। जरा सी समझदारी से हम खुद को और दूसरों को बचा सकते हैं, वहीं जरा सी नादानी बड़ी आबादी को खतरे में डाल सकती है। सरकार को सीमा क्षेत्रों पर बनाए गए क्वारंटाइन सेंटरों में रखे गए लोगों को सुविधाएं देने के बारे में भी गंभीरता से विचार करना चाहिए। राज्य के कई इलाकों से छन-छन कर ऐसी खबरें आ रही हैं, कि इन सेंटरों में रहने वाले लोग सुविधाओं के अभाव में भाग रहे हैं। उन्हें रोकना सरकार की जिम्मेदारी है।

स्वस्थ पृथ्वी ही करेगी हमारी सुरक्षा

एम. वेंकैया नायडू

हमें धरती को सुरक्षित बनाने की कवायद करनी होगी ताकि पर्यावरण संरक्षण के साथ ही मानव, वनस्पति और जीव-जंतुओं की सेहत सुधर सके

अवधेश राजपूत

इस वर्ष विश्व आरोग्य दिवस का पड़ाव ऐसे वक्त पर आया है जब पूरी दुनिया उस कोविड-19 महामारी के खिलाफ संघर्ष कर रही है जो अब तक हजारों जिंदगियां लील चुकी है। यह समय मानव जाति को यह स्मरण कराने का है कि वह न केवल अपने स्तर पर स्वच्छता का ख्याल रखे, बल्कि प्रकृति और उसके पारिस्थितिकी तंत्र के साथ कोई खिलवाड़ न करे। यह सभी स्वास्थ्यकर्मियों के योगदान को सम्मान देने का भी समय है जो कोविड-19 से जूझ रहे मरीजों की देखभाल में लगे हैं, खासतौर से नर्सें जिन पर इस वर्ष डब्ल्यूएचओ ने विशेष फोकस किया है।

स्वास्थ्य के मोर्चे पर खासी प्रगति के बावजूद कोरोना वायरस से उपजी महामारी ने मानव प्रजाति को असहाय कर दिया है। दुनिया भर के दिग्गज दिन-रात इस बीमारी की दवा तलाशने में जुटे हुए हैं। जानलेवा कोरोना वायरस राजा और रंक या किसी देश अथवा धर्म का लिहाज नहीं करता। एक देश के बाद दूसरे देश में पैठ बनाकर इसने पूरी दुनिया को थर्रा दिया है। इससे खौफजदा तमाम देश अपनी सीमाएं बंद करके लॉकडाउन का एलान कर रहे हैं ताकि इसका प्रसार रोका जा सके। यह किसी दुःस्वप्न से कम नहीं कि जहां वर्ल्ड वाइड वेब यानी इंटरनेट ने दुनिया को खोलकर लोगों को आपस में जोड़ दिया था वहीं कोरोना वायरस ने देशों को सीमाएं बंद करने और अपनी जनता को शारीरिक दूरी का पालन करने पर मजबूर कर दिया है।

हम जब इस आपदा से उबरकर आर्थिक मंदी और व्यक्तिगत जीवन में उथल-पुथल जैसी वास्तविकता से दो-चार होंगे तब कई सवाल उठेंगे जिनके केंद्र में यही होगा कि क्या ऐसी विपदाओं को रोका जा सकता है? विकास के हमारे प्रारूप पर भी प्रश्न उठेंगे। कुछ जानकार दलीलें भी दे रहे हैं कि अन्य प्रजातियों के पर्यावास को नष्ट करने की मानवीय तृष्णा ऐसी आपदाओं को आमंत्रण दे रही है। इस महामारी ने पारिस्थितिकीय असंतुलन के विषय को केंद्र में ला दिया है। पारिस्थितिकी में संतुलन की पुनर्स्थापना के लिए प्राचीन भारतीय दर्शन सबसे अहम कड़ी साबित हो सकता है। हमारे प्राचीन वैदिक साहित्य में सभी जीवित प्रजातियों को बराबर सम्मान देने के उदाहरण हैं। ऋग्वैदिक ऋचाओं में सभी के कल्याण की प्रार्थना की गई है। उनमें वनस्पति विशेषकर औषधीय गुणों वाले पौधों के बड़ी संख्या में उगने की कामना की गई है ताकि सभी बीमारियों की देखभाल के साथ हम स्वस्थ जीवन जी सकें। उनमें ईश्वर से विनती है कि सभी प्राणियों के हृदय में शांति का वास हो। उनमें प्रकृति को महत्ता एवं शांतिपूर्ण-सहअस्तित्व का प्राचीन भारतीय दर्शन प्रतिबिंबित होता है। पर्यावरण-पारिस्थितिकीय संतुलन का संरक्षण हमारी प्राचीन परंपरा रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने इसे लेकर उचित ही अनुभव किया था, 'प्रकृति में सौंदर्यभाव और उसके लिए धार्मिक निहितार्थों को जोड़ने की दूरदर्शिता के लिए मैं अपने पूर्वजों के समक्ष शीश नवाता हूं।'

यह समय सभी भारतीयों और प्रत्येक वैश्विक नागरिक के लिए प्रकृति संरक्षण का सक्रिय योद्धा बनने का है ताकि पृथ्वी पर मनुष्य और सभी जीव-जंतु स्वस्थ रहकर सौहार्दपूर्ण सह-अस्तित्व का आनंद ले सकें। हम जिस हवा में सांस लेते हैं और जो पानी पीते हैं, वे साफ होने चाहिए। हमें मिट्टी, पौधे और अन्य प्राकृतिक संसाधनों को सहेजना चाहिए। लॉकडाउन के चलते हवा की गुणवत्ता में चमत्कारिक सुधार और शहरी इलाकों में वन्यजीवों के विचरण की खबरें यही दर्शाती हैं कि मानव ने प्रकृति में किस हद तक हस्तक्षेप किया है। हमारे ग्रंथों में उल्लिखित मंत्रों में पृथ्वी, आकाश एवं अंतरिक्ष के अलावा जल, वनस्पति, देवताओं, अवचेतन एवं बाहरी संसार यानी सभी के लिए शांति की कामना की गई है।

स्वतंत्रता के बाद से भारत ने स्वास्थ्य से जुड़े विभिन्न सूचकांकों में खासी प्रगति की है। इस दौरान हमें स्मॉल पॉक्स जैसी कई संक्रामक बीमारियों के अलावा पोलियो के उन्मूलन में सफलता मिली। भारत में औसत जीवन प्रत्याशा बढ़कर 69 वर्ष हो गई है। 1990 से 2016 के दौरान संक्रामक, मातृ, नवजात शिशु और पोषण संबंधी बीमारियों में भारत का बोझ 61 प्रतिशत से हल्का होकर 33 प्रतिशत रह गया है।

हालांकि बीते कुछ समय से जीवनशैली में हुए परिवर्तन के कारण गैर-संक्रामक रोगों में भारी बढ़ोतरी हुई है। कुछ साल पहले डब्ल्यूएचओ ने भारत में होने वाली मौतों में 61 प्रतिशत के लिए हृदय रोग, कैंसर और मधुमेह आदि को जिम्मेदार बताया था। इस खतरनाक रुझान को पलटने की दरकार है। इसके लिए खानपान में बदलाव लाकर स्वस्थ जीवनचर्या अपनाने को प्रोत्साहन देने वाला राष्ट्रव्यापी जागरूकता अभियान चलाया जाए। युवावस्था से ही स्वस्थ खानपान, योग और ध्यान की आदतें डलवानी होंगी। ये पहलू स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाए जाएं। इसके साथ ही इंडियन मेडिकल एसोसिएशन और अन्य संस्थानों को जागरूकता का प्रसार करना चाहिए। मीडिया को भी जन-जन तक सूचनाएं पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। एक और अहम मसला है वृद्धों की खास देखभाल की आवश्यकता का।

देश के शहरी-ग्रामीण स्वास्थ्य ढांचे में भारी अंतर को देखते हुए कोविड-19 ने इसमें निवेश की आवश्यकता को पुनः रेखांकित किया है। हालांकि आयुष्मान भारत जैसी योजना ने इस समस्या को कुछ हद सुलझाया है जिसके तहत पचास करोड़ लोगों को स्वास्थ्य बीमा के साथ ही 1.5 लाख स्वास्थ्य केंद्रों के माध्यम से व्यापक स्वास्थ्य सेवाएं दी जा रही हैं। फिर भी हमें बीमारी की रोकथाम और उसके उपचार जैसे स्वास्थ्य के दोनों पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए। हमें जीवनशैली से जुड़े मसलों को साधकर व्यापक समाधान तलाशने की दिशा में जुटना होगा।

यह समझना भी आवश्यक है कि हम पृथ्वी को वनस्पति और पशु-पक्षियों के साथ साझा करते हैं। इस जुड़ाव को समझने के साथ ही डब्ल्यूएचओ की 'वन हेल्थ' की उस अवधारणा को भी आत्मसात करने की दरकार है जिसमें मनुष्य, प्राणी, वनस्पति और पर्यावरण की सेहत के लिए बहुस्तरीय दृष्टिकोण अपनाने की बात है। इसे संभव बनाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों को साथ लाने के साथ ही विविध विशेषज्ञों को एकजुट कर नीतियां और कार्यक्रम तैयार करने होंगे।

हमारी दुनिया परस्पर निर्भर है। हमें इसे संतुलित करना ही होगा ताकि हम स्वस्थ जीवन जी सकें। हमें एकजुट होकर पृथ्वी को सुरक्षित बनाना होगा जिसमें पर्यावरण संरक्षण के साथ ही मानव, वनस्पति और जीव-जंतुओं सभी की सेहत सुधर सके।

(लेखक भारत के उप-राष्ट्रपति हैं)

response@jagran.com

सामूहिक संकल्प शक्ति का उद्घोष

अवधेश कुमार

जनता की सामूहिक चेतना को सकारात्मक ऊर्जा और उत्साह से जोड़ना भी कोरोना के खिलाफ लड़ाई है

महामारी कोविड-19 से उपजे भय, निराशा और अकेलेपन के बीच पूरे देश ने दीप जलाकर उत्साह और एकजुटता का जो संदेश दिया वह किसी चमत्कार से कम नहीं, लेकिन यह चमत्कार एक वर्ग को समझ नहीं आ रहा है। कुछ नेता एवं स्वयं को महाज्ञानी मानने वाले कथित लिबरल बुद्धिजीवियों ने प्रधानमंत्री के संबोधन एवं अपील के साथ जिस तरह की नकारात्मक और सच कहें तो ओछी प्रतिक्रियाएं देनी शुरू कर दी थीं वे केवल इसका प्रमाण थीं कि ये भारतीय होते हुए भी भारत के मानस और भारतीय परंपराओं की अंतःशक्ति से अनभिज्ञ हैं। लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने तो तुरंत कह दिया कि हम न दीप जलाएंगे, न मोमबत्ती, न टॉर्च। कुछ बुद्धिजीवी और पत्रकार कहने लगे कि मोदी देश को मदारी बना रहे हैं। उम्मीद थी कि देश भर में दीप जलाए जाने की तस्वीरों को देखकर वे आत्मचिंतन करेंगे। दुर्भाग्य से उनका स्वर वही है। उनकी खीझ भरी प्रतिक्रियाओं से लग रहा है, मानो पूरा देश अज्ञानी और अंधविश्वासी है। जब 22 मार्च को पूरे देश ने प्रधानमंत्री की अपील पर जान जोखिम में डालकर काम करने वालों के सम्मान में ताली, थाली, घंटी और शंख बजाकर अविस्मरणीय दृश्य उत्पन्न कर दिया था तब भी इस समूह की ऐसी ही प्रतिक्रिया थी। इन पर केवल तरस ही खाया जा सकता है, लेकिन यह प्रश्न उठाना जरुरी है कि क्या प्रधानमंत्री ने ऐसा कहा था कि आप लोग कोरोना वायरस से उपजी कोविड-19 महामारी से बचाव के लिए कुछ न करें, बस रविवार 5 अप्रैल रात 9 बजे 9 मिनट घर की लाइट बंद कर मोमबत्ती, टॉर्च, दीये या मोबाइल की फ्लैश लाइट जलाएं? जाहिर है उन्होंने ऐसा नहीं कहा था और न ही उनका ऐसा कोई मंतव्य था कि कोरोना से बचने के लिए और कुछ करने की जरूरत नहीं।

केंद्र और राज्य सरकारों से जितना बन रहा है, युद्धस्तर पर बचाव और इलाज का कार्य चल रहा है। प्रधानमंत्री लगातार समाज के सभी समूहों से अलग-अलग चर्चा कर रहे हैं। उन्होंने मुख्यमंत्रियों से दो बार चर्चा कर यह जाना कि कहां क्या स्थिति है? फिर केंद्र क्या कर सकता है, इसकी घोषणाएं कीं। उन पर अमल भी हो रहा है। उनकी विशेषज्ञों, डॉक्टरों से लगातार बातचीत भी हो रही है। इसी का परिणाम है कि दुनिया के प्रमुख देशों की तरह हमारे यहां अभी

तक त्राहि-त्राहि की स्थिति नहीं है। हां, तब्लीगी जमात की धर्मांधता और जाहिलियत से अवश्य चिंता बढ़ी है। बीते 15-16 दिन में मोदी के तीनों संबोधनों और फिर मन की बात में कोई बात ऐसी नहीं थी जिसकी आलोचना की जाए। देश के नेता की जिम्मेदारी का पालन करते हुए उन्होंने लोगों को सचेत किया, उनकी जिम्मेदारियों का अहसास कराया और सामूहिक निराशा एवं भय का भाव दूर करने की पहल की। इसका प्रत्यक्ष सकारात्मक असर स्वास्थ्यकर्मियों से लेकर आवश्यक सेवा करने वालों पर तो दिखा ही, देश की एकता का आभास भी हुआ, लेकिन इसके अलावा भी कुछ हुआ। उस दिन की आंतरिक अनुभूतियों का वर्णन अनेक लोगों ने सोशल मीडिया पर किया है। उसे जरूर पढ़ना चाहिए। ऐसे लोग जो इन सबमें विश्वास नहीं करते, उन्होंने भी लिखा कि जब पूरा मोहल्ला ताली बजा रहा था तो उनके अंदर एक विशेष अनुभूति हो रही थी। किसी ने लिखा कि हमारे भीतर ऐसी भावुकता उत्पन्न हुई कि आंखें नम हो गईं। ऐसे कदमों के सूक्ष्म प्रभाव भी होते हैं जो हमें प्रत्यक्ष नहीं दिखते।

देश-दुनिया में कोविड-19 का प्रकोप जिस तरह सिर उठाए हुए है उसमें हमें कब तक बंधन में रहना पड़ेगा, कहना कठिन है। यदि देश को कोरोना के खिलाफ संघर्ष से जोड़ना है तो बहुत सोच-समझकर ऐसे सहज देशव्यापी कार्यक्रम देने होंगे जिनसे आपसी जुड़ाव का अनुभव हो, आत्मविश्वास बना रहे और एकजुटता का भाव पैदा हो ताकि नकारात्मकता कम होकर सकारात्मकता का आवेग पैदा हो।

यह मान लेना निरी नासमझी होगी कि प्रधानमंत्री की एक अपील पर नौ मिनट के लिए घर की सारी बत्तियां बंद कर अपने दरवाजों और बालकनी में आकर रोशनी करने वाले अंधभक्त हैं। देश भर से आई खबरें बता रहीं हैं कि इसमें हर वर्ग के लोगों ने पूरे उत्साह से भाग लिया। इनमें किसानों, मजदूरों से लेकर छात्र, शिक्षक, सैनिक, पुलिस, सरकारी अधिकारी, सैन्य बल, न्यायाधीश, उद्यमी, कलाकार, पत्रकार और यहां तक कि डॉक्टर और वैज्ञानिक भी शामिल थे। रोशनी के साथ भारत माता की जय और वंदे मातरम के नारों से आकाश गूंज रहे थे। अनेक जगह लोगों ने इसमें कुछ और पूरक कार्यक्रम जोड़ लिया जिसमें मंत्रोच्चारण से लेकर हवन तक सम्मिलित थे। सबसे बढ़कर लोगों ने लक्ष्मण रेखा का पालन किया। प्रधानमंत्री ने यह कहकर इस पहल का लक्ष्य स्पष्ट किया था कि कोरोना के अंधकार के बीच हमें प्रकाश की ओर जाना है और गरीब भाई-बहनों को निराशा से आशा की ओर लेकर जाना है। उन्होंने यह भी कहा था कि मां भारती का स्मरण करते हुए देशवासियों के बारे में सोचना है। यह माना जा सकता है कि इस प्रतीकात्मक कार्यक्रम से लोगों को महसूस हुआ कि देश साथ खड़ा है। जनता की सामूहिक शक्ति को जागृत करना और उसकी सामूहिक चेतना को सकारात्मक ऊर्जा और उत्साह से जोड़ना भी कोरोना के खिलाफ लड़ाई है।

लोगों को उनकी शक्ति का अहसास कराना एक तरह से उनके विश्वास और उत्साह को संबल देना होता है। उत्साह से बढ़कर कोई बल नहीं। उत्साही पुरुष के लिए संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। कोई कुछ भी कहे, पर सामूहिक भाव के असर को नकारा नहीं जा सकता। ध्यान रहे कि कई बार संकट भी किसी राष्ट्र की सामूहिक मानसिकता और आचरण में व्यापक परिवर्तन का कारण बनता है।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

चलें प्रकृति की ओर

इस दौर को कोरोनायुग कहा जाए तो गलत नहीं होगा। इस संबंध में पर्यावरणविदों की बात पर गंभीरता से सोचने का वक्त आ गया है। पर्यावरणविदों का कहना है कि कोरोना तो क्षुब्ध प्रकृति का सबसे कमजोर अस्त्र है। जिस तरह जंगल नष्ट किए जा रहे हैं और कहीं किसी अन्य स्थान पर कुछेक पेड़ लगा दिए जा रहे हैं, वह प्रकृति को वैसे ही स्वीकार नहीं जैसे किसी व्यक्ति के परिवार को तबाह कर किसी एक को मुआवजा दे दिया जाता है, लेकिन इससे उस व्यक्ति की आंतरिक पीड़ा कम नहीं होती। इसके अतिरिक्त पृथ्वी को भी दूषित किया जा रहा है। कृषि उपज बढ़ाने के लिए अत्यंत हानिप्रद रासायनिक पदार्थ डाले जा रहे हैं। कोई बच्चा जन्म ले और उसके जन्म लेते उस पर प्रहार होने लगे तो उसके स्वाभाविक विकास में बाधा आएगी ही।

जाहिर है मनुष्य मिट्टी से कटता जा रहा है। ऐसे में अभी कोरोना-अस्त्र चला है तो लोग घरों में दुबके हैं। जब इससे आगे प्रकृति और घातक अस्त्र चलाएगी तब क्या होगा। ऐसी स्थिति में धरती पर मनुष्य को बचाने के लिए 'चलो प्रकृति की ओर' सिद्धांत फिर अपनाना होगा। भारतीय ऋषियों ने इसीलिए पेड़ों, पर्वत, नदियों, कुओं, पूरी धरती को माता, सूर्य को प्रत्यक्ष देवता और कहानियों में चंद्रमा को मामा, आकाश को पिता आदि माना।

जब श्रीराम भाई लक्ष्मण और माता सीता के साथ वनवास जाते समय भरद्वाज ऋषि के आश्रम में रुके तो ऋषि ने माता सीता से बरगद वृक्ष से आशीर्वाद लेने के लिए कहा था। ऐसे ही जब कंस ने गोकुल में प्रलंबसुर नामक राक्षस को भेज कर पूरे नंदग्राम में विष फैला दिया तो श्रीकृष्ण ने पूरे गांव वालों को बरगद के पेड़ के नीचे बैठाकर सुरक्षित किया और खुद राक्षस का वध किया। यह भी श्रीकृष्ण का लॉकडाउन जैसा ही कदम था। हमारे ग्रंथों में ऐसे तमाम दृष्टांत हैं जो अच्छाई की सीख देते हैं।

सलिल पांडेय

सकारात्मकता का दामन थामे रहिए

अंशुमाली रस्तोगी

इधर कुछ महीनों में ही पूरी दुनिया का चेहरा बदल-सा गया है। एक अदृश्य वायरस के सामने दुनिया बेबस है। मानव जाति 'शायद' अपने ही बुने जाल में बुरी तरह फंस चुकी है। न आधुनिकता काम आ रही है न विज्ञान के दांव-पेंच। मगर फिर भी न विज्ञान हारा है न मेडिकल साइंस, लेकिन हम सब एक 'डर' की गिरफ्त में तो हैं ही।

यह तो नहीं कहा जा सकता कि इन कुछ महीनों में आपसी संबंधों-रिश्तों में दरारें पड़ी हैं कि नहीं, हां 'शारीरिक दूरी' हमने दूसरों से खुद ही बना ली है, क्योंकि इस वायरस से लड़ने के लिए यह दूरी जरूरी है। अभी चंद रोज पहले एक घर के मेन गेट पर एक लिखा देखा- 'अपनों और बाहर वालों का इस घर में आना मना है। कृपया दूरी बनाए रखें।' हालांकि वह सूचना सावधानीवश ही चिपकाई गई होगी, लेकिन कहीं यह भविष्य का संकेत तो नहीं। इस वायरस की भयावहता ने संबंधों को भी नई परिभाषा गढ़ने पर मजबूर कर दिया है। शायद कभी किसी ने सोचा भी न होगा कि

इस कठिन समय में हमें खुद को उन चीजों में व्यस्त रखना होगा, जिन्हें हम अक्सर समय की कमी के चलते नहीं कर पाते थे

एक दिन ऐसा भी आएगा, जब हम दूरियों में अपना 'हित' देखेंगे। भारतीय संदर्भ में देखें तो शारीरिक दूरी को हमारे यहां सदियों से मान्यता है। पश्चिमी देशों में ऐसा नहीं है। हाथ मिलाना या गले लगाना उनकी संस्कृति का अहम हिस्सा है। अभिवादन के लिए यहां नमस्ते का रिवाज है, लेकिन वायरस ये औपचारिकताएं नहीं देखता-समझता। उसका संक्रमण पलभर में किसी को भी अपने वश में ले सकता है।

ऐसे में केवल हमारी सकारात्मकता ही हमें बचा सकती है। खुद को सकारात्मक बनाए रखने के लिए हमें उन चीजों में व्यस्त होना पड़ेगा, जिसे हम अक्सर समय की कमी के चलते कर नहीं पाते थे। अब हमारे पास समय ही समय है। दुनिया और खुद के बारे में सोचने का समय है। आने वाले बदलावों के बीच खुद को तैयार करने का समय है। कोरोना अर्थव्यवस्था और रोजगार के लिए भी बड़ा संकट बन गया है। बहुत लोगों की नौकरियों पर खतरा मंडरा रहा है, लेकिन अभी हमारे सामने बड़ा मुद्दा है कोरोना की आपदा से निपटने का। अर्थव्यवस्था और रोजगार को तो आगे भी बचाया जा सकता है। अभी जरूरी है जिंदगियां बचाना। जब जिंदगियां ही नहीं रहेंगी, तब अर्थव्यवस्था का क्या करेंगे!

यह सिर्फ भारत के लिए नहीं पूरे विश्व के लिए कड़ी परीक्षा की घड़ी है। यह परीक्षा अभी कितनी लंबी चलेगी, कोई नहीं जानता। हां यह तय है, जो इस कड़ी परीक्षा से पार पा जाएगा, वही अंत तक टिका भी रहेगा। जब और बीमारियों को हरा दिया तो कोरोना पर भी एक दिन विजय पा ही लेंगे, लेकिन यह खुद में सुधार किए बिना नहीं हो सकेगा। जीवन, रहन-सहन, अचार-विचार-व्यवहार, खान-पान के तरीकों को हमें बदलना ही होगा। नकारात्मकता को त्याग सकारात्मकता का दामन थामे रखना होगा। निश्चित ही सब कुछ ठीक होगा।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

बुरे कर्म का बुरा नतीजा

वक्त की मांग है घर से दफ्तर का काम शीर्षक से लिखे अपने लेख में अभिषेक कुमार सिंह ने लिखा है कि वर्क फ्रॉम होम का फायदा सिर्फ लोगों को नहीं होगा, बल्कि इससे हम धरती पर भी कुछ रहम कर पाएंगे। मैं उनके तर्कों से पूरी तरह सहमत नहीं हूं। इस धरती और इसकी आबोहवा की बदहाली इस वजह से नहीं हुई है कि लोग बड़ी संख्या में दफ्तर आते-जाते हैं और इसके लिए परिवहन या अन्य तरह के साधनों का उपयोग करते हैं। देखा जाए तो इससे प्रकृति पर उतना दबाव नहीं बढ़ता है। दरअसल इसका असली कारण मनुष्य का लालच है। ज्यादा से ज्यादा उपभोग और भौतिक सुख-सुविधाओं को जुटाने के लिए वह प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करता जा रहा है। वह अपने स्वार्थ में वशीभूत होकर इतना भी नहीं सोच रहा कि ये संसाधन असीमित नहीं हैं। एक न एक दिन इन्हें खत्म होना ही है। प्रकृति इसे बखूबी समझती है, इसीलिए वह बार-बार इसमें संतुलन लाने की कोशिश करती है। और इस क्रम में वह हम सुधरने का अवसर देती है, लेकिन हर बार हम उसके संकेत को अनदेखा कर उसी गलती को दोहरते जा रहे हैं। संभव है कोरोना वायरस भी प्रकृति से छेड़छाड़ का नतीजा हो। बेहतर होता लेखक इस पहलू का भी लेख में जिक्र करते और मानव जाति को उसकी गलतियों के बारे में बताते।

विवेक श्रीवास्तव, पटना

धैर्य की परीक्षा

देश के लोग इस समय कोरोना वायरस का सामना कर रहे हैं, लेकिन कुछ नासमझ लोग इसे गंभीरता से न लेकर अपनी एवं अपने परिवार की जान को जोखिम में डाल रहे हैं। तब्लीगी जमात के लोग इस महामारी को नजरअंदाज करते रहे और जब सरकार उन्हें इलाज मुहैया करा रही है तो डॉक्टरों से अभद्र व्यवहार कर रहे हैं। सभी को समझना होगा कि पुलिस, डॉक्टर इस समय सबके लिए जीवन रक्षक उपकरण की भांति हैं जो हम सभी की सांसो को बचाने के लिए अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं। इसका कर्ज हम कभी चुका नहीं सकते तो कम से कम उनका सहयोग तो करें।

सौरभ श्रीवास्तव, इंदिरापुरम, गाजियाबाद

इंटरनेट की लें संतुलित खुराक

लॉकडाउन के दौर में इसे नजरंदाज नहीं किया जा सकता कि इंटरनेट के माध्यम से लोग जरूरी सेवाएं ले और दे पा रहे हैं। पर साथ ही हमें स्वस्थ डिजिटल डाइट का पालन करने की जरूरत है जिसका सरलार्थ यह है कि हमें हर समय स्मार्टफोन, लैपटॉप इत्यादि पर अपना समय व्यतीत न कर समझदारी से इनका उपयोग करें। आज के प्रौद्योगिकी संचालित युग में स्वस्थ जीवन के लिए डिजिटल फास्टिंग भी एक लाभदायक उपाय है जिसमें हमें तकनीकी उपकरणों के प्रयोग को कुछ समय का विराम देना चाहिए। यह कुछ सप्ताह, दिन, घंटे, यहां तक की शुरुआत में कुछ मिनटों का भी हो सकता है। इससे निश्चित रूप से न केवल कार्यक्षमता बढ़ेगी, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य और पारिवारिक रिश्ते भी बेहतर होंगे।

डिंपी भाटिया, नई दिल्ली

दुर्व्यवहार करने वालों पर हो कड़ाई

कोरोना वायरस के प्रकोप से बचाने के लिए सबसे पहले जिसने कदम बढ़ाया है वे हैं हमारे डॉक्टर, नर्स, मेडिकल स्टाफ और सफाईकर्मी जो इस मुश्किल घड़ी में हमें बचाने के लिए योद्धा के रूप में खड़े हैं। इन्हें पूरी दुनिया भगवान के रूप में देख रही है, लेकिन कुछ भटके लोग डाक्टरों के साथ दुर्व्यवहार कर रहे हैं। ऐसा करने वालों से सख्ती से निपटा जाना चाहिए।

राजन तिवारी, बदरपुर, नई दिल्ली

कुछ सुकून देने वाले संकेत

संघर्ष के समय कोरोना के अंधकार को मिटाने के लिए जो योद्धा प्रथम पंक्ति में रहकर दिन-रात जान जोखिम में डालकर सेवा में जुटे हैं, उन्हें यह सोचकर हिम्मत मिली है कि उनके पीछे लोग खड़े हैं। पहले ताली और थाली बजाने के बाद रविवार को दीये जलाकर एसे लोगों के प्रति देश ने एकजुटता दिखाई। हालांकि कुछ लोगों ने आतिशबाजी कर रंग में भंग डाल दिया।

mahesh_nenava@yahoo.com

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

75 मेडिकल कॉलेजों को स्वीकृत किया है मोदी सरकार ने 2014 के बाद से नए मॉडल के आधार पर। ऐसे प्रयास और बढ़ाने होंगे, क्योंकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार देश में चार लाख एमबीबीएस डॉक्टरों की कमी है।

डॉ. अजय खेमरिया
स्वतंत्र टिप्पणीकार

विश्व स्वास्थ्य दिवस

एकीकृत स्वास्थ्य नीति की दरकार

जैसे कि हर संकट कोई न कोई सबक सिखाकर जाता है वैसे ही हमें कोरोना आपदा से सीख लेनी चाहिए। राहत की बात है कि फिलहाल देश में इसका विकराल रूप देखने को नहीं मिल रहा है और प्रत्येक स्तर पर इसे काबू करने की कवायद की जा रही है। फिर भी हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठा जा सकता। इस मौजूदा संकट और भविष्य की ऐसी किसी विपदा से निपटने के लिए हमें अपने स्वास्थ्य ढांचे को समय रहते चुस्त-दुरुस्त करना होगा। इसके लिए एक राष्ट्रीय नीति बनानी होगी

समग्र विश्व आज कोरोना की भयावह महामारी से उबरने के लिए संघर्षरत है। भारत भी अपनी पूरी क्षमता के साथ इस आपदा से जूझ रहा है। हालांकि हमारे पास कुछ अन्य विकसित देशों के मुकाबले संसाधन बहुत कम हैं, फिर भी हम अपने मौजूदा स्वास्थ्य ढांचे में किस तरह से बदलाव ला सकते हैं, इस बारे में भी हमें सोचना होगा। फिलहाल राज्यों के स्वास्थ्य मंत्रालय अलग हैं, केंद्र का अलग। दोनों सरकारों के मेडिकल कॉलेज भी अलग हैं। एम्स यानी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान अलग कानून के दायरे में है। ईएसआइसी, सार्वजनिक उपक्रम, पुलिस, आर्मी, पैरा मिलिट्री फोर्स, रेलवे, नेवी व एयर फोर्स समेत विविध नगरीय निकायों के अलग अलग अस्पताल, मेडिकल कॉलेज व शोध संस्थान और परिचालन नियम हैं। इन सबकी स्थापना का उद्देश्य भारतीय नागरिकों को आरोग्य प्रदान करना है। राज्यों के प्रदर्शन को हम राजनीतिक तौर पर टीका-टिप्पणियां करके नही छोड़ सकते हैं। अगर तमिलनाडु और केरल के मानक उच्च हैं तो बिहार और उत्तर प्रदेश को केवल बीमारू तोहमत लगाकर जवाबदेह लोग किनारा कैसे कर सकते हैं?

कोरोना संकट से उबरने के बाद इस बात पर सहमति बनानी होगी जन स्वास्थ्य को केंद्रीय सूची में लाया जाए। लोक स्वास्थ्य, परिवार कल्याण और चिकित्सा शिक्षा को एक किया जाए। मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया, जो अब आयोग बन चुका है, देश में चिकित्सा शिक्षा की नियामक संस्था के रूप में काम कर सकती है तो देश भर में मेडिकल कॉलेजों के संचालन के लिए केंद्रीय निकाय क्यों निर्मित नहीं किया जा सकता है। देश मे कार्डियक डॉक्टर तो बड़ी संख्या में बढ़ रहे हैं, लेकिन कैंसर और नेफ्रोलॉजी के चिकित्सकों की संख्या गिनती की है, क्योंकि इस मामले में न पीजी सीट्स पर्याप्त हैं, न किसी एम्स जैसे संस्थानों में शोध की व्यवस्था, जबकि इनसे जुड़े मरीज करोड़ों में बढ़ रहे हैं। केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत हर जिला अस्पताल में कैंसर और डायलिसिस यूनिट स्थापित कर दी, राज्य सरकारों ने बढ़िया बिल्डिंग और मशीनरी भी उपलब्ध करा दी, लेकिन 80 फीसद केंद्र आज दक्ष स्टाफ और डॉक्टर के अभाव में काम नहीं कर रहे हैं। बेहतर होगा कि देश भर के जिला अस्पतालों को केंद्र सरकार सीधे अपने नियंत्रण में लेकर उन्हें मेडिकल कॉलेजों में तब्दील कर दे। ऐसा करने से देश भर में ग्रामीण इलाकों के लिए डॉक्टर्स की उपलब्धता बढ़ेगी।

इंग्लैंड में पीजी डॉक्टर्स लगभग ढाई साल अस्पतालों में काम करते हैं और एक निर्धारित समय पर मेडिकल कॉलेजों में थ्योरी क्लास लेने के लिए जाते हैं। शेष समय ग्रामीण इलाकों में एमबीबीएस के बाद सेवाएं देते हैं। व्यवहार में मेडिकल कॉलेजों में अधिकतर काम जूनियर डॉक्टर ही करते हैं, इसलिए सबसे पहले जिला अस्पतालों में पांच सौ बिस्तर के हिसाब से मेडिकल कॉलेज स्वीकृत किए जाएं। यहां पहले से पदस्थ विशेषज्ञ चिकित्सकों को फैकल्टी के रूप में अधिमान्य किया जा सकता है।

मोदी सरकार ने 2014 के बाद से 75 नए मेडिकल कॉलेजों को इसी तर्ज पर देश भर में स्वीकृत किया है। फिलहाल देश में विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक के अनुरूप लगभग चार लाख एमबीबीएस डॉक्टर्स की कमी है। इस कमी को दूर करने के लिए नए मेडिकल कॉलेज खोलने के खर्चीले प्रावधान के स्थान पर सभी जिलों के सरकारी अस्पताल को कॉलेजों में तब्दील करने से बेहतर कोई अन्य विकल्प नहीं है। अच्छी बात है केंद्र सरकार ने इस प्रक्रिया को शुरू भी कर दिया है, लेकिन अभी काफी कुछ किए जाने की दरकार है। जैसे चरणबद्ध तरीके से यहां यूजी व पीजी की सीटें बढाई जा सकती हैं। साथ ही दूसरे सरकारी निकायों के सुविधायुक्त अस्पतालों को भी एकीकृत विभाग के अधीन लाकर मेडिकल कॉलेजों में रूपांतरित किया जा सकता है। केंद्र सरकार स्वास्थ्य महकमे का संचालन इसके व्यापक पुनर्गठन के साथ कर सकती है। वैसे भी केंद्र अभी नीट और एमसीआइ के माध्यम से देशव्यापी एकाधिकार तो इस क्षेत्र में रखता ही है। इसलिए व्यापक संवाद के बाद राज्यों को इस नीतिगत बदलाव के लिए राजी किया जा सकता है। राज्य अक्सर केंद्रीय मदद में भेदभाव और अपर्याप्त आवंटन की शिकायतें करते रहते हैं। नई नीति में डॉक्टर्स का अखिल भारतीय सेवा संवर्ग स्थापित कर विशेषज्ञ चिकित्सकों को इंग्लैंड की तर्ज पर ग्रेडिंग सिस्टम देकर फैकल्टी, विशेषज्ञ आदि के रूप में नियुक्त किया जाना चाहिए। पीजी के लिए तीन साल की अवधि में न्यूनतम ढाई साल ग्रामीण और कस्बाई स्वास्थ्य संस्थान में पदस्थापन को अनिवार्य किए जाने से सबको आरोग्य का लक्ष्य भी हासिल होगा।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने छह मार्च को लोकसभा में बताया कि मोदी सरकार ने छह वर्षों के दौरान 29,185 सीटें स्नातक में बढ़ाई हैं। वर्तमान में एमबीबीएस की 80,448 और पीजी की 40,408 सीट देश में उपलब्ध है। भारत सरकार के पास देश में कुल कार्यरत एलोपैथिक डॉक्टरों का आंकड़ा तक उपलब्ध नहीं है। लोकसभा में दिए गए एक जवाब के अनुसार भारतीय चिकित्सा परिषद में केवल 52,666 के पंजीयन हैं। ये कहां काम कर रहे हैं इसकी सूचना सरकार के पास नहीं है। दूसरी तरफ राज्य चिकित्सा परिषदों में मिलाकर कुल पंजीकृत डॉक्टरों की संख्या 12,01,354 है। सरकार भी मानती है कि इनमें से केवल नौ लाख 61 हजार ही सक्रिय हैं। समझा जा सकता है भारत में एकीकृत चिकित्सा निगरानी तंत्र की कितनी आवश्यकता है। बेहतर होगा कि एलोपैथी के साथ होम्योपैथी, आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा पद्धति को भी एकीकृत स्वास्थ्य विभाग के अधीन लाकर सरकार उपलब्धता के आधार पर एक ही परिसर में इन सभी सुविधाओं को सुनिश्चित करे।

विश्वव्यापी त्रासदी से निपटता भारत

डॉ. नरेश कुमार त्यागी
असिस्टेंट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

कोरोना का संकट गहराता जा रहा है। आज पूरा विश्व इस महामारी से मानव जीवन को बचाने की विकट चुनौतियों से जूझ रहा है। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरस ने तो यहां तक कहा है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह दुनिया के लिए सबसे गंभीर संकट का समय है। तमाम विशेषज्ञ आशंका जता रहे हैं कि यह संकट दुनिया की अर्थव्यवस्था को न केवल चौपट करेगा, बल्कि मानव जाति के लिए भी गंभीर खतरा उत्पन्न कर सकता है।

वैश्विक महाशक्ति अमेरिका में तो कोरोना संक्रमण का कहर अन्य देशों के मुकाबले कहीं अधिक है। फिलहाल भारत इस महामारी से प्रभावित देशों की सूची में काफी नीचे है और हम यदि लॉकडाउन के नियमों का पूरी तरह से पालन करें तो यह उम्मीद की जा सकती है कि जल्द ही हमारे देश में कोरोना का असर कम हो सकता है। हमें इस बात को समझना होगा कि हमारा पारंपरिक विचार रहा है-बीमारी से बचाव उसके इलाज से बेहतर है। यह सही है कि विकसित देशों की स्वास्थ्य सेवाओं के आगे हम कहीं नहीं टिकते, ऐसे में जब विकसित देशों में यह महामारी व्यापक आबादी को अपनी चपेट में ले चुकी है, हमारी सरकार ने समय रहते लॉकडाउन का फैसला लिया और बीमारी से बचाव को सुनिश्चित किया। आरंभ में तीन-चार दिनों तक हमें बेहतर कामयाबी भी हासिल हुई थी, लेकिन तब्लीगी जमात की गलती के कारण यह संकट काफी गहरा गया है।

विश्व में सबसे अधिक प्रभावित देश यूरोप, अमेरिका और एशिया के तो सबसे कम अफ्रीकी देश हैं। यहां यह बात गौर करने वाली है कि जहां स्वास्थ्य सुविधाएं बहुत कमजोर हैं, उन देशों में इस महामारी का प्रकोप बहुत कम है और जिन देशों में स्वास्थ्य व्यवस्थाएं बेहतरीन हैं, वे देश इस वायरस से अधिक प्रभावित हैं। हालांकि इसके अलग-अलग कारण हैं जिन पर संबंधित विशेषज्ञ निरंतर कार्य कर रहे हैं। फिलहाल हमारी कोशिश यही होनी चाहिए कि जहां तक संभव हो सके, सरकार के दिशानिर्देशों का पालन करना चाहिए। यह समय सरकार के प्रयासों का विरोध करने का नहीं है, बल्कि सरकार द्वारा उठाए जाने वाले कदमों का समर्थन करने का है। ऐसे में हैरान करने वाली बात यह है कि सरकार पर निरंतर हमला बोलने वाले लोगों की ओर से जरूरतमंदों की मदद करने की खबरें नहीं आ रही हैं। जबकि इस विकट आपदा में देश का छोटे से छोटा आत्मनिर्भर व्यक्ति भी किसी न किसी रूप में अपना अमूल्य योगदान दे रहा है। आज डॉक्टर, नर्स, पुलिस, सेना के जवान, प्रशासनिक अधिकारी-कर्मचारी, जन-प्रतिनिधि, सफाईकर्मी व समाजसेवी, सभी अपनी जिंदगी को जोखिम में डालकर दिन-रात इस खतरनाक कोरोना वायरस के खात्मे के लिए जंग लड़ रहे हैं। हमें उनके प्रति आभार प्रकट करना चाहिए। मीडिया को भी इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहिए कि सोशल मीडिया के जरिये अनाप-शनाप और फेक न्यूज से भ्रमित होने से वह लोगों को बचा रहा है।

आज लॉकडाउन की वजह से असंगठित क्षेत्र पर बड़ी मार पड़ी है। सरकार की ओर से जो राहत पैकेज की घोषणाएं की गई हैं, उनसे इस क्षेत्र के लोगों को कुछ हद तक राहत जरूर मिलेगी, लेकिन अभी इनके लिए बहुत कुछ करने की जरूरत है। सरकारी और निजी संगठनों व अन्य छोटे-बड़े कारोबारी क्षेत्रों में काम करने वाले मजदूरों व कर्मचारियों की नौकरी न छूटे और न ही वेतन कटे इसका भरोसा भी सरकार को देना होगा ताकि कोई इनके बीच भय का माहौल उत्पन्न न कर सके। जमाखोरी और कालाबाजारी करने वालों के खिलाफ प्रशासन द्वारा सख्त कदम के तहत इनके ऊपर रासुका जैसे कानून का इस्तेमाल करने से सरकार को गुरेज नहीं करना चाहिए।

खरी-खरी

जनता की अदालत में हाजिर कोरोना

जगदीश ज्वलंत

आज हमने 'जनता की अदालत' में जिसे आमंत्रित किया है, उसे आप जानते हैं, पहचानते हैं, किंतु देख नहीं पाते। सूक्ष्म से सूक्ष्मतम बहुत ही बौना, नाम है कोरोना। जनता की अदालत में आप पर पहला इल्जाम यह है...

'आप जिस प्रकार बिना सांस लिए, सांसें छीन रहे हैं। इससे क्या मिलेगा?'

- 'देखिए, मेरे मुल्क ने जानबूझकर या भूल से, गलती तो की कि मुझ जिन्न को चिराग से बाहर निकाला। न निकलने तक उनकी मर्जी थी, अब मेरी। सारा विश्व मेरा है। विस्तार मेरा मकसद है।'

'आप पर अगला इल्जाम यह है कि आपने पलायन करती भीड़ को छोड़ एक विशेष जमात को ही क्यों चुना?'

-'किसने किसे चुना, यह सब भलीभांति जानते हैं। जो मुझे आमंत्रित करता है, मैं वहीं जाता हूं। यह बात और है कि कुछ मुझे जिज्ञासा से आमंत्रित करते हैं, तो कुछ षड्यंत्र से।'

'हमारे दर्शकों में से एक प्रश्न आया है कि आपने अपने शरीर पर इतने नुकीले कांटे क्यों उगा रखे हैं?

-'ये कांटे नहीं मेरे पैर हैं। मैं मन की गति से भी तेज चलता हूं। मुझे न आकाश मिटा सकता है, न पवन उड़ा सकती है। न पानी बहा सकता है, न अग्नि जला सकती है। यह ज्ञान मुझे गीता से नहीं आइसोलेशन से मिला है।'

'आप पर अगला इल्जाम यह है कि आप मासूमों पर भी रहम नहीं करते!'

-'देखिए आज कोई मासूम नहीं रहा। सभी थालियां-तालियां बजा रहे हैं। दीपक जलाकर मुझे चिढ़ा रहे हैं। सभी साबुन से हाथ धोकर मुझे ठेंगा दिखा रहे हैं। मुझे साबुन ही नहीं, हाथ न मिलाने वालों से भी नफरत है, किंतु कुछ प्रियजन हैं, जो नियमों को तोड़, कड़ियों को जोड़, बाहर निकलने की होड़ में लगे हैं। वे ही मेरे सिर का ताज हैं। मुझे उन पर नाज़ है। वे ही मेरे विजय अभियान को गति देंगे।'

'समय निकाल कर आप हमारे कार्यक्रम में पधारे। इसलिए बता दें कि आपका आभार कैसे व्यक्त करें?'

'बहुत आसान है। मुझ पर खांसिए, छींकिए, थूकिए।'

'लेकिन ये हमारी परंपरा नहीं है।'

'मैं आपसे नहीं उनसे कह रहा हूं जिनकी है। अपमान ही मेरा सम्मान है और धिक्कार ही मेरा आधार। धन्यवाद।'

ट्वीट-ट्वीट

रविवार रात को चेन्नई के आकाश का नजारा तमिलनाडु के उन राजनीतिक दलों के लिए एक संदेश है जो मोदी से बिना वजह नफरत करते हैं।
एस गुरुमूर्ति@sgurumurthy

राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सहित सभी मंत्रियों और सांसदों के वेतन में कटौती कर सरकार ने मिसाल पेश की है। यह पहल स्वागतयोग्य है। इससे बचा एक-एक रुपया कोरोना से लड़ने में काम आएगा और देश को एकजुट करेगा।
मेजर (सेवा.) गौरव आर्या@majorgauravarya

वेतन-भत्तों में एक साल की यह कटौती महज प्रतीकात्मक कदम है। हमें कड़े आर्थिक फैसलों की दरकार है ताकि मौजूदा गतिरोध से उबर सकें अन्यथा लोगों की आजीविका बहुत बुरी तरह से प्रभावित होगी।
मिन्हाज मर्चेंट@MinhazMerchant

कोरोना से प्रभावित इटली-स्पेन जैसे देश संभलने की राह पर हैं, मगर अमेरिका में हाहाकार मचा है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अगर शुरू में एहतियात बरती होती तो हालात बेकाबू नहीं होते। इसलिए हमें सतत सावधानी बरतनी है। थोड़ा और संयम रखें।
संजय निरुपम@sanjaynirupam

देश में इस समय कोरोना वायरस के मरीजों की संख्या 4067 से अधिक हो गई है, इनमें 1445 तब्लीगी जमात से जुड़े है। सोचिए तब्लीगी जमात न होता तो यह आंकड़ा कितना कम होता।
जितेंद्र शर्मा@capt_ivane

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या कोरोना हॉटस्पॉट केंद्रों में लॉकडाउन की अवधि बढ़ाई जानी चाहिए?

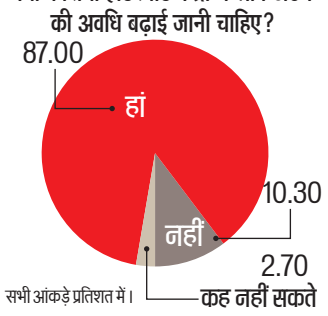

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या तब्लीगी जमात की गतिविधियों ने देश में कोरोना संकट को और बढ़ा दिया है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

सीनाजोरी हो रही अब चोरी के बाद,
अस्पताल में कर रहे भाई लोग फसाद।
भाई लोग फसाद करें नर्सों से झिकझिक,
ज्यों मरकज के बाद मनाने आए पिकनिक।
छोड़ी लाज-लिहाज हरकतें करें छिछोरी,
थूक रहा है देश देख यह सीनाजोरी।
- ओमप्रकाश तिवारी

उत्तराखंड डायरी

कुशल कोठियाल
स्थानीय संपादक, उत्तराखंड

जमात की जहालत ने बिगाड़े हालात

अन्य राज्यों की तरह उत्तराखंड भी कोरोना वायरस के संक्रमण से जूझ रहा है। कोरोना के खिलाफ उत्तराखंड की जीत लगभग तय हो गई थी, लेकिन जमातियों ने इसे बड़ी मुसीबत में तब्दील कर दिया है। पांच दिन पहले तक राज्यभर में इसके कुल सात पॉजिटिव केस थे, जिनमें से चार के स्वस्थ होने के बाद अस्पताल से छुट्टी मिल गई है। आज की तारीख में केवल तीन ही उपचारार्थ रहते, लेकिन पिछले पांच दिनों में जमातियों ने संक्रमण तेजी से फैलाया है। प्रदेश में इस समय अस्पतालों में भर्ती कुल तेईस पॉजिटिव मामलों में से बीस जमाती हैं। जमातियों के आक्रामक एवं नकारात्मक रवैये के कारण इन्हें चिन्हित करना भी मुश्किल हो रहा है। ये लोग खुद छिप रहे हैं और पकड़े जाने पर अपने संपर्क में आए लोगों की पहचान भी छिपा रहे हैं। इनकी अभद्रता पर काबू पाना भी स्वास्थ्यकर्मियों तथा पुलिस के लिए मुश्किल हो रहा है। राज्यवासी यह पूछ रहे हैं कि ये जमाती किस तरह की शिक्षा लेकर आए हैं, जिन्हें न अपनी जान की फिक्र है और न दूसरों की जान लेने से कोई गुरेज। अब जबकि प्रदेश की सरकार ने इन्हें कड़ी चेतावनी दी है तो अब कुछ जमाती आगे आ रहे हैं, लेकिन रवैया बेहद खराब है। कोरोना के खिलाफ सरकार का प्रारंभिक रवैया काफी लचीला रहा, अब जबकि जमातियों की आमद ने संकट गहरा दिया है तब जाकर सरकार कुछ सख्ती दिखा रही है। लोगों का मानना है कि मौजूदा हालात से बाहर निकलने के लिए सरकार को ज्यादा सतर्कता और सख्ती दिखानी होगी।

फोटो खिंचवाने के बहाने : लॉकडाउन का यह दौर प्रदेश के उन नेताओं पर भारी पड़ रहा है, जिन्हें किसी न किसी बहाने मीडिया में छाने की आदत है। भाजपा समेत अन्य दलों के नेता महामारी में भी मीडिया में आने के बहाने तलाश ले रहे हैं। कभी राहत बांटने के बहाने तो कभी मास्क एवं सैनिटाइजर के बहाने फोटो के अवसर बना ले रहे हैं। यह प्रवृत्ति कुछ सामाजिक संगठनों में भी देखी जा रही है। लगता है कि बिना फोटो छपे उनकी समाज सेवा परवान चढ़ने वाली नहीं है। छपास की इस भूख में राहत के लिए सुपात्र खोजने की भी जहमत नहीं उठाई जा रही है। कई गैरजिम्मेदाराना लोग राहत सामग्री से घर भरने की फिराक में हैं तो कई जरूरतमंदों तक राहत पहुंच ही नहीं रही। जिला प्रशासन ने अब सुपात्रों को ही राहत पहुंचाने की पहल की है तथा व्यवस्था भी बनाई है।

चार धाम यात्रा और कुंभ पर भी प्रभाव : लॉकडाउन का असर 26 अप्रैल से शुरू होने जा रही उत्तराखंड की चारधाम यात्रा पर भी पड़ सकता है। मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए सरकार का स्वाभाविक रूप से यह प्रयास रहेगा कि चारधाम बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री में भीड़ न जुटे। इसे देखते हुए चारधाम के कपाट खुलने पर उन्हें सिर्फ पूजा तक सीमित किया जा सकता है। यानी वहां सीमित संख्या में पुजारी पूजा करेंगे। हालांकि सरकार सभी परिस्थितियों पर विचार कर रही है और यात्रा के संबंध में 14 अप्रैल को लॉकडाउन खत्म होने के बाद ही कोई निर्णय लिया जाएगा। फिलहाल सरकार की शीर्ष प्राथमिकता कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम है। पूरा अमला इसमें जुटा हुआ है। इन परिस्थितियों में अभी चारधाम यात्रा की तैयारियां भी नहीं हो पाई हैं। अब तो चारधाम देवस्थानम बोर्ड के अस्तित्व में आने के बाद ये सभी व्यवस्थाएं खुद सरकार को ही करनी हैं। सरकार के प्रवक्ता एवं शहरी विकास मंत्री मदन कौशिक ने कहा है कि चारधाम यात्रा को लेकर सरकार सभी पहलुओं पर गंभीरता से मंथन कर रही है। चारधाम विकास परिषद के उपाध्यक्ष आचार्य शिव प्रसाद ममगाईं ने कहा कि चारधाम गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ एवं बदरीनाथ के कपाट तय समय पर निर्धारित तिथियों को ही खुलेंगे। कपाट खुलने पर चारधाम में पूर्ववत पूजा पद्धति के हिसाब से सभी पूजा होगी। आगे की व्यवस्थाओं के संबंध में परिस्थितियों को देखकर निर्णय लिया जाएगा। कोरोना का असर जनवरी 2021 से हरिद्वार में शुरू होने जा रहे कुंभ की भव्यता पर भी पडना तय है। कुंभ क्षेत्र में पहले ही निर्माण कार्यों में मशीनरी की शिथिलता सामने आ रही थी। इस पर अखाड़ा परिषद ने सरकार के सामने नाराजगी भी जताई थी। मुख्यमंत्री ने तैयारी संबंधी कार्यों में तेजी लाने के लिए मशीनरी के पेच कसे, लेकिन इससे पहले कि विभिन्न कार्यों में प्रगति आती, देश को कोरोना पर काबू पाने के लिए लॉकडाउन में जाना पड़ा। अब कुंभ की तैयारियां अधर में हैं और सरकार मजबूर।

मरकज में शामिल हुए जमातियों को अस्पताल ले जाते स्वास्थ्यकर्मी। फाइल

मंथन

सुचारू चले वन संपदा संग्रह

डॉ. राजाराम त्रिपाठी
राष्ट्रीय संयोजक, अखिल भारतीय किसान महासंघ

देश की एक बड़ी आबादी वनोपज पर आश्रित है जिसके संग्रह के लिए मौजूदा समय सबसे अहम माना जाता है। ऐसे में उन्हें लॉकडाउन के दौरान कुछ छूट दी जाए तो बेहतर होगा

विश्वव्यापी कोरोना संकट से भारत में लॉकडाउन है। यहां एक विचित्र बात देखने में आई कि एक ओर जहां शहरी तथा अर्धशहरी क्षेत्रों के शिक्षित कहे जाने वाले कुछ लोग कोरोना के संकट को पूरी गंभीरता से नहीं ले रहे हैं और जगह-जगह भीड़ लगाने की घटनाएं देखने में आ रही हैं, वहीं गांवों की अपेक्षाकृत अशिक्षित तथा कम जागरूक कही जाने वाली जनसंख्या ने इसके प्रावधानों को कड़ाई से लागू किया है। हमारे गांव आज भी अनुशासित हैं और इन्होंने पूरी तरह से अपने आप को घरों में बंद कर रखा है। जबकि इस बीमारी से पीड़ित अधिकांश मरीज शहरों के हैं।

ऐसे में इस बीमारी को शहरों से गांव की ओर आने से रोकने के लिए बहुत ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता है। इस बीच देश की ग्रामीण जनसंख्या के एक बहुत बड़े हिस्से की रोजी-रोटी के मसले पर हम समुचित विचार करने के मामले में मात खा गए हैं। भारत विश्व के सबसे अधिक वन क्षेत्र वाले 10 देशों में से एक है। भारत के कुल क्षेत्रफल के लगभग 21 प्रतिशत क्षेत्र पर वन स्थित हैं। देश के कई राज्यों में जहां सघन वन क्षेत्र है, वहां जनजातीय समुदाय निवास करता है और इन क्षेत्रों की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या जंगलों से वनोपज एकत्र कर होने वाली आय से ही अपना जीवन-यापन करती है। लगभग 70 प्रतिशत प्रमुख वनोपज इन्हीं दिनों यानी मार्च-अप्रैल में ही एकत्र की जाती है। इन दिनों अगर इन्हें एकत्र नहीं किया गया तो फिर मई-जून की गर्मी में ये सूख कर अनुपयोगी हो जाती हैं।

करीब 16 मार्च से मची देशव्यापी अफरा-तफरी में वनोपज निकासी तथा विपणन कार्य लगभग ठप हैं। कुछ जिलों में स्थानीय अधिकारियों की तत्परता से छिट-पुट वनोपज संग्रहण का कार्य करवाने की कोशिश शुरू हुई है, फिर भी अभी तक महज दस प्रतिशत संग्रहण भी नहीं हो पाया है। आने वाले दिन भी अनिश्चितता से भरे हैं। ऐसे में इन वनोपजों को बचा पाना और उन्हें उपयोग लायक बनाना एक नई चुनौती होगी।

इधर लॉकडाउन के दौरान गांव मे भी लोगों का वनोपज एकत्र हेतु जंगल जाना भी पूरी तरह से प्रतिबंधित हो गया है। गांव पूरी तरह से बंद कर दिए गए हैं अथवा शासन के निर्देशों का पालन करते हुए इन्हें बंद कर दिया गया है। इस कारण वनोपज संग्रहण व भंडारण का कार्य नहीं हो पा रहा है। इससे जहां एक ओर आदिवासी परिवारों को आने वाले साल भर तक अगली वनोपज की फसल आने तक गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। वहीं आवश्यक कच्चे माल के अभाव के कारण देश के उद्योग धंधों को तथा देश से होने वाले निर्यात को भी गंभीर झटका लगेगा। लाख तथा प्राकृतिक गोंद के उत्पादन व निर्यात क्षेत्र में भारत अग्रणी देश है और इन्हें मुख्य रूप से जंगलों से ही एकत्र किया जाता है। भारत की जिस इमली की धाक खाड़ी देशों में बनी हुई है वह इन जनजातीय सामुदायिक क्षेत्रों की प्रमुख वनोपज है। उसे भी एकत्र करने का यही समय है। तेंदूपत्ता संग्रहण से मिले पैसे से साल भर घर चलाने वाले परिवारों की संख्या लाखों में है। कुछ राज्यों में इनकी संख्या सर्वाधिक है। इन्हीं दो महीनों में ही महुआ के फूल तथा उनके बीजों को एकत्र किया जाता है। महुआ का फूल पौष्टिक भोजन होने के साथ कई प्रकार के पारंपरिक पेय पदार्थों के निर्माण में कच्चे माल के तौर पर भी इस्तेमाल में लाया जाता है। महुआ तेल का व्यापक रूप से औद्योगिक इस्तेमाल भी किया जाता है। इससे संबंधित किसानों व आदिवासियों के लिए महुआ से नकदी कमाने का यही अवसर है। कइयों की साल भर की आमदनी का अधिकांश हिस्सा इसी पर आधारित है।

आज भी हमारी जड़ी बूटियों के कुल उत्पादन का 90 प्रतिशत स्रोत हमारे जंगल हैं। दुर्भाग्य से प्राकृतिक बाध्यताओं के कारण ये जड़ी बूटियां इन्हीं दिनों जंगल से एकत्र की जा सकती हैं। आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, यूनानी तथा सिद्ध की समस्त औषधियों का कच्चा माल जंगलों से इन्हीं दिनों ही निकलता है। इस सबके अलावा देश के लिए बहुमूल्य विदेशी मुद्रा अर्जित करने में भी इन वनोपजों की महत्वपूर्ण भूमिका है। जंगलों से लगे जिन गांवों में बाहर से शहरों से महीनों से कोई भी व्यक्ति नहीं आया है, कम से कम ऐसे गांवों की पहचान कर, वहां के वनवासियों के लिए वन विभाग के द्वारा संबंधित वन समितियों को सुरक्षा तथा बचाव का उचित प्रशिक्षण देकर, जरूरी पास देकर वनोपज संग्रहण कार्य को सुचारू रूप से संचालित किया जाना अथवा अन्य कोई और बेहतर समाधान दिया जाना उचित होगा। ऐसा करते हुए वनोपजों का निर्बाध रूप से संग्रहण किया जा सकता है।

भारत सरकार से निवेदन है कि हमारे वन क्षेत्रों के वनवासी भाइयों तथा वहां के अन्य आश्रित परिवारों को कोरोना वायरस से सुरक्षा के सभी जरूरी उपाय अपनाते हुए, उनके गांवों से लगे वन क्षेत्रों के वनोपज को एकत्र करने तथा उनका निर्बाध विपणन करने हेतु उचित छूट प्रदान करे। वनोपज संग्रहण के बहुमूल्य दो माह में से एक माह से भी अधिक समय अनुपयोगी रूप से व्यतीत हो चुका है। अब जरूरत है कि राज्य सरकारें, स्थानीय प्रशासन तथा स्वयंसेवी संस्थाएं, ग्राम पंचायतों के साथ मिलकर कम से कम वन ग्रामों तथा वन-समितियों के सहयोग से जैव विविधता का संरक्षण सुनिश्चित करते हुए वनोपजों का संग्रहण, भंडारण तथा विपणन कार्य को सुनिश्चित करें।

सोने का आयात 73 प्रतिशत घटा

मुंबई, रायटर : कोरोना भारत में सोने का आयात इस साल मार्च में 73 फीसद से ज्यादा घटकर महज 25 टन रह गया। यह साढ़े छह वर्ष में स्वर्ण आयात का सबसे कम आंकड़ा है। पिछले वर्ष मार्च में 93.24 टन सोने का आयात किया गया था। मूल्य के हिसाब से मार्च में सोने का आयात लगभग 63 फीसद घटकर 122 करोड़ डॉलर यानी लगभग साढ़े आठ हजार करोड़ रुपये मूल्य का रह गया।

कोरोना से दुनियाभर को होने वाला नुकसान वर्ष 2009 से ज्यादा खतरनाक होगा। लेकिन चीन के प्रदूषण आंकड़े इस महामारी से रिकवरी के शुरुआती संकेत दिखाने लगे हैं।

— गीता गोपीनाथ, मुख्य अर्थशास्त्री, आइएमएफ

कोरोना के कारण 28 फीसद घट गई मुकेश अंबानी की संपत्ति

पिछले दो महीने में 1.44 लाख करोड़ रुपये का हुआ नुकसान, अमीरों की सूची में फिसलकर 17वें स्थान पर आए

मुंबई, प्रेट्र : दुनिया के बड़े से बड़े दिग्गज कोरोना के कहर का सामना कर रहे हैं। इसके लपेटे में भारत के सबसे अमीर व्यक्ति मुकेश अंबानी भी आ गए हैं। पिछले दो महीने में उनकी संपत्ति 28 फीसद कम हो गई है। हुरुन ग्लोबल रिच लिस्ट के मुताबिक, मुकेश अंबानी की संपत्ति में रोजाना 30 करोड़ डॉलर (करीब 2,280 करोड़ रुपये) की दर से गिरावट हुई है। 31 मार्च को उनकी संपत्ति 48 अरब डॉलर (करीब 3.64 लाख करोड़ रुपये) रह गई थी। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर मुकेश की संपत्ति में फरवरी-मार्च में कुल 19 अरब डॉलर (करीब 1.44 लाख करोड़ रुपये) की कमी हुई है। संपत्ति में इस गिरावट के साथ दुनियाभर के अमीरों की सूची में आठ पायदान खिसककर मुकेश अंबानी 17वें स्थान पर आ गए हैं।

संपित्त में गिरावट का सामना करने वाले मुकेश अंबानी अकेले अरबपति नहीं हैं। दो महीने के भीतर उद्योगपति गौतम अडानी की संपत्ति में छह अरब डॉलर यानी करीब 37 फीसद की गिरावट आई। एचसीएल टेक्नोलॉजीज के शिव नादर की संपत्ति में पांच अरब डॉलर यानी 26 फीसद और बैंकर उदय कोटक की संपत्ति में चार अरब डॉलर यानी 28 फीसद की गिरावट आई। संपत्ति में इस बड़ी गिरावट के बाद तीनों का नाम दुनिया के 100 अमीरों की सूची से बाहर हो गया है। अब मुकेश अंबानी इस सूची में अकेले भारतीय बचे हैं।

कोरोना के कारण उपजी परिस्थितियों में पिछले दो महीने में भारतीय शेयर बाजारों में 26 फीसद तक की गिरावट आ चुकी है। हुरुन रिपोर्ट इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर अनस रहमान ने कहा, 'शेयर बाजारों में 26 फीसद की गिरावट और डॉलर की तुलना में रुपये की कीमत में 5.2 फीसद की टूट से भारत के अग्रणी उद्यमियों को झटका लगा है। मुकेश अंबानी के लिए यह एक तूफान जैसा रहा, जिसमें उनकी संपत्ति 28 फीसद गिर गई।' हॉस्पिटेलिटी सेक्टर के समक्ष आई परेशानी के कारण ओयो रूम्स के रितेश अग्रवाल इस सूची के हिसाब से अब अरबपति नहीं रह गए हैं।

बर्नार्ड अर्नाल्ट को सबसे ज्यादा नुकसान : संपत्ति में गिरावट के मामले में मुकेश अंबानी दुनियाभर में दूसरे स्थान पर हैं। सबसे ज्यादा नुकसान फ्रांस की फैशन कंपनी एलवीएमएच के चीफ एक्जीक्यूटिव बर्नार्ड अर्नाल्ट को हुआ है। उनकी संपत्ति 30 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 77 अरब डॉलर रह गई है। बर्कशायर हैथवे के वारेन बफेट की संपत्ति पिछले दो महीने में 19 अरब डॉलर घटकर 83 अरब डॉलर पर आ गई है। वारेन को 19 फीसद का नुकसान हुआ है। संपत्ति गंवाने वालों में कार्लोस स्लिम एंड फैमिली, बिल गेट्स, मार्क जुकरबर्ग, लैरी पेज, सर्जेई ब्रिन और माइकल ब्लूमबर्ग भी शामिल हैं।

जेफ बेजोस अब भी सबसे अमीर

131 अरब डॉलर की संपत्ति के साथ अमेजन के जेफ बेजोस दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बने हुए हैं। उन्हें सिर्फ नौ फीसद का नुकसान हुआ है। 14 फीसद के नुकसान के बाद 91 अरब डॉलर की संपत्ति के साथ बिल गेट्स दूसरे, वारेन बफेट तीसरे और अर्नाल्ट चौथे स्थान पर हैं।

रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी। फाइल

चीन के अरबपतियों की संपत्ति बढ़ी

इस बीच चौंकाने वाली बात है कि बीते दो महीने में चीन के अरबपति फायदे में रहे हैं। यहां वीडियो कांफ्रेंसिंग के प्रमोटरों से लेकर पोर्क मीट उत्पादक कंपनियों तक, सबको फायदा हुआ। जहां दो महीने में भारत के तीन अरबपति सूची से बाहर हुए हैं, वहीं चीन के छह अरबपतियों ने सूची में जगह बना ली है।

संकट को भी कमाई का जरिया बनाने में जुटे नक्काल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

पिछले दिनों में उत्तर प्रदेश पुलिस ने नोएडा में नकली हैंड सैनिटाइजर बनाने वाली कंपनी को पकड़ा, जिसके पास कोई लाइसेंस नहीं था। लेकिन कोरोना वायरस की वजह से बाजार में जिस तरह से सैनिटाइजर की मांग थी उसकी वजह से इसका धंधा ठीक चल रहा था। देश के और भी कई हिस्सों से नकली मास्क, हैंड सैनिटाइजर समेत दूसरे स्वास्थ्य से जुड़े नकदी उत्पादों की बिक्री की खबरें सामने आ रही हैं।

इस समस्या के बढ़ते देख उद्योग चैंबर फिक्की की तरफ से नकली उत्पादों के खिलाफ अभियान चलाने के लिए गठित कमिटी एगेंस्ट स्मगलिंग एंड काउंटफिटिंग एक्टीविटीज डिस्ट्रॉइंग द इकोनॉमी (कासकेड) ने सरकार को आगाह किया है। फिक्की कासकेड के चेयरमैन अनिल राजपूत ने कहा है कि कोरोना वायरस ने जिस तरह की चुनौती देश व समाज के सामने पेश की है उससे निपटने को प्रमुखता से लेने की जरूरत है। यह ना सिर्फ आर्थिक तौर पर नुकसानदायक है बल्कि यह कोरोना को समाप्त करने के अभियान को भारी नुकसान पहुंचा सकता है।

फिक्की कासकेड ने कहा है कि महामारी की आड़ में मची अफरातफरी में आपराधिक प्रवृति के लोगों को मुनाफा कमाने से बचाने के लिए कठोर कार्रवाई करने की जरूरत है। फिक्की कासकेड ने नकली उत्पादों के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय अभियान चलाने वाली एजेंसी ट्रासिट के साथ मिल कर एक बयान जारी किया है जिसमें बताया गया है कि सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में महामारी से उपजे भय को भुनाने के लिए नकली चिकित्सा उपकरण व सामान बनाए जा रहे हैं। ट्रासिट के सेक्रेट्री जेनरल जेफरी हार्डी के मुताबिक एक व्यक्ति गलत व नकली मास्क पहन कर यह समझता है कि वह कोरोना वायरस से बचाव कर सकता है लेकिन वह असलियत में इस बीमारी को फैलाने का काम कर रहा है। इसलिए सभी सरकारों को इस समस्या पर तत्काल ध्यान देना चाहिए।

सर्विस सेक्टर पर भी दिखा कोरोना का बुरा असर

पड़ी मार ▶ बीते माह सर्विस सेक्टर का पीएमआइ घटकर 49.3 पर आ गया

फरवरी में 85 महीनों के ऊंचे स्तर 57.5 पर था सर्विसेज पीएमआइ

नई दिल्ली, प्रेट्र : सेवा क्षेत्र की गतिविधियों पर कोरोना वायरस और इसका तेज संक्रमण रोकने के लिए लागू देशव्यापी लॉकडाउन का गहरा असर हुआ है। एक मासिक सर्वे के मुताबिक मांग घटने के कारण मार्च में सर्विस सेक्टर का बिजनेस घटकर संकुचन की अवस्था में चला गया है। इसके उलट फरवरी में इस सेक्टर ने शानदार प्रदर्शन किया था।

कंपनियों के परचेज मैनजर्स के बीच किए जाने वाले मासिक सर्वेक्षण 'आइएचएस मार्किट इंडिया सर्विसेज बिजनेस एक्टिविटी इंडेक्स' (पीएमआइ) की सोमवार को जारी रिपोर्ट से निराशाजनक आंकड़े सामने आए हैं। इसके मुताबिक मार्च में सर्विस सेक्टर का पीएमआइ 49.3 पर रहा, जो फरवरी में 85 महीनों के ऊंचे स्तर पर 57.5 पर पहुंच गया था। पीएमआई का 50 से नीचे रहना संकुचन यानी गिरावट और ऊपर जाना कारोबार बढ़ने का संकेत होता है।

सर्वेक्षण के लिए आंकड़े 12-27 मार्च के दौरान जुटाए गए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में कोरोना वायरस का संक्रमण फैलने से रोकने के लिए 14 अप्रैल तक 21 दिन के लॉकडाउन (आवाजाही पर पाबंदी) की घोषणा कर रखी है। इस वजह से सर्विस सेक्टर में मांग अचानक घट गई है। इस बीच एकीकृत पीएमआइ उत्पादन सूचकांक मार्च में 50.6 पर रहा, जो फरवरी में 57.6 पर था। इस सूचकांक से संयुक्त रूप से मैन्यूफैक्चरिंग और सर्विस सेक्टर की गतिविधियों का संकेत मिलता है।

प्रतीकात्मक।

और खराब हो सकते हैं हालात

आइएचएस मार्किट के अर्थशास्त्री जो. हाएस ने कहा, 'भारत के सर्विस सेक्टर पर कोरोना वायरस के असर का अब तब पूरा आकलन नहीं किया जा सका है। निश्चित तौर पर हालात अभी और बुरे होंगे। कारण यह है कि लॉकडाउन की वजह से देशभर में दुकानें बंद हैं। इससे सेवा क्षेत्र पर भारी दबाव है।' सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना वायरस की वजह से घरेलू मांग घटने के साथ-साथ सेवाओं का निर्यात भी प्रभावित हुआ है। सितंबर, 2019 के बाद सेवा क्षेत्र की भारतीय कंपनियों की ऑर्डर बुक में मार्च में पहली बार गिरावट देखी गई। हाएस ने कहा कि आर्थिक चुनौती से निपटने का दबाव अब पूरी तरह सरकार पर होगा।

निशंक ने कंपनियों से की अपील, छात्रों के जॉब ऑफर वापस न लें

नई दिल्ली, प्रेट्र : मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने सोमवार को कंपनियों से आग्रह किया है कि वे कोरोना वायरस के कारण पैदा हुई आर्थिक सुस्ती को देखते हुए छात्रों को कैंपस प्लेसमेंट के दौरान दिए गए जॉब ऑफर वापस न लें।

निशंक ने कहा, 'स्नातक की पढ़ाई पूरी करने वाले छात्रों की चिंता को देखते हुए हमने कंपनियों से अपील की है कि वे कैंपस प्लेसमेंट के दौरान दिए गए जॉब ऑफर को वापस न लें। सरकार ऐसा प्रयास कर रही है कि कोरोना संक्रमण की महामारी का अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव न पड़े। उन छात्रों को नौकरी न देना अन्याय होगा जो न केवल मेधावी हैं, बल्कि देश को इन परिस्थितियों से बाहर लाने में योगदान भी दे सकते हैं।'

गत दिनों कुछ कंपनियों ने अनिश्चितता के कारण भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) और भारतीय प्रबंधन संस्थान (आइआइएम) को दिए गए जॉब ऑफर को निरस्त कर दिया था। इसे देखते हुए ही केंद्रीय मंत्री निशंक ने यह अपील की है। उन्होंने पिछले ही हफ्ते 23 आइआइटी के निदेशकों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया था कि मौजूदा माहौल के कारण कैंपस प्लेसमेंट प्रभावित नहीं होना चाहिए।

वायरस से मृत्यु पर परिवार को तुरंत मिलेगा क्लेम

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- जीवन बीमा काउंसिल ने कहा, सभी बीमा कंपनियां देंगी कवर
- इस मामले में अप्रत्याशित घटना का प्रावधान लागू नहीं होगा

कोरोना वायरस की वजह से मौत होने पर हर बीमा कंपनी बीमाधारकों के परिवार को पूरा लाभ देने के लिए बाध्य होगी। जीवन बीमा काउंसिल के मुताबिक, जीवन बीमा देने वाली निजी या सरकारी सभी कंपनियां कोविड-19 से मृत्यु होने पर जल्द से जल्द डेथ क्लेम की प्रक्रिया शुरू करेंगी। बीमा क्षेत्र की नियामक एजेंसी इरडा पहले ही सभी बीमा कंपनियों के लिए दिशानिर्देश लागू कर चुकी है कि उन्हें कोविड-19 से पीड़ित लोगों को दूसरे सामान्य बीमित व्यक्ति की तरह ही सेवाएं देनी हैं।

जीवन बीमा काउंसिल के मुताबिक, जीवन बीमा कंपनियों से काफी संख्या में लोग इस बात की पूछताछ कर रहे हैं कि कोविड-19 से मौत होने पर कंपनी कहीं अप्रत्याशित घटना का नियम तो लागू नहीं करेगी। इसके तहत कंपनी जीवन बीमा का लाभ देने से इन्कार कर सकती है। इन सवालों को देखते हुए लाइफ इंश्योरेंस काउंसिल ने स्पष्ट किया है कि कोरोना से होने वाली मौत के मामले में अप्रत्याशित घटना के नियम लागू नहीं होंगे और इससे जुड़े सभी दावों का त्वरित तौर पर निपटान किया जाएगा। पॉलिसी बाजार के लाइफ इंश्योरेंस विशेषज्ञों के मुताबिक जीवन बीमा के तहत मुख्य रूप से व्यक्ति की मेडिकल हिस्ट्री और सेहत को देखते हुए प्रीमियम तय होता है। हालांकि कुछ जीवन बीमा कंपनियां कुछ विशेष परिस्थितियों में हुई मौत को कवर नहीं देती हैं, लेकिन कोविड-19 महामारी से होने वाली मौत जीवन बीमा की पॉलिसी में कवर होगा। अगर किसी की मौत कोरोना संक्रमण से होती है तो उसके परिजनों को क्लेम के लिए तुरंत जीवन बीमा कंपनी से संपर्क करना चाहिए।

दूसरी तरफ मेडिक्लेम पॉलिसी लेने वाले व्यक्तियों को कोरोना के इलाज का खर्चा भी कंपनी की तरफ से मिल जाएगा। अब तक कोरोना पीड़ितों का इलाज सरकारी अस्पतालों में ही हो रहा है, जहां मेडिक्लेम की जरूरत नहीं है। लेकिन कोरोना के फैलाव को देखते हुए निजी अस्पतालों में भी इसकी जांच एवं इलाज की व्यवस्था की जा रही है। ऐसे में, निजी अस्पताल में भर्ती व्यक्ति के पास अगर पहले से मेडिक्लेम है, तो कोरोना का इलाज उसमें कवर होगा। सभी मेडिक्लेम देने वाली कंपनियों को इस संबंध में नियामक के निर्देश दिए जा चुके हैं।

एनएचएआइ ने बनाया राजमार्ग निर्माण का नया रिकॉर्ड

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना संबंधी खबरों के बीच विकास से जुड़ी एक अच्छी खबर आई है। दरअसल, भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआइ) ने वित्त वर्ष 2019-20 के दौरान 3,979 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण कर नया रिकॉर्ड कायम किया है। उससे पिछले वित्त वर्ष यानी 2018-19 में एनएचएआइ ने 3,380 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण किया था।

एनएचएआइ की स्थापना 1995 में हुई थी। सड़क निर्माण को रफ्तार देने के लिए केंद्र सरकार ने देश में अनेक परियोजनाएं चला रखी हैं। इनमें नवीनतम परियोजना भारतमाला है, जिसके तहत साढ़े सात लाख करोड़ रुपये की लागत से कुल मिलाकर तकरीबन 65 हजार किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण होना है। भारतमाला के पहले चरण के तहत सरकार पांच वर्षों में 34 हजार किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण की मंजूरी पहले ही दे चुकी है। इसमें से 27,500 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण की जिम्मेदारी एनएचएआइ को सौंपी गई है। इस बीच राजमार्ग निर्माण में तेजी लाने के लिए एनएचएआइ प्रबंधन ने अटकी परियोजनाओं को आगे बढ़ाने तथा नई परियोजनाओं को समय पर पूरा करने के लिए अनेक कदम उठाए हैं।

सिडबी ने पीएम-केयर्स में दिए 15 करोड़ रुपये

नई दिल्ली, वि. : भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक यानी सिडबी ने कोरोना से लड़ने के लिए सरकार की तरफ से गठित पीएम केयर्स फंड में 15 करोड़ रुपये दिए हैं। इससे ठीक पहले बैंक ने छोटे उद्योगों के लिए सेफ (सिडबी असिस्टेंस टु फेसिलिटेट इमरजेंसी रिस्पांस अगेंस्ट कोरोना वायरस) प्रोग्राम की शुरुआत की है। इसके तहत वह छोटे उद्योगों को 48 घंटों के भीतर सिर्फ पांच प्रतिशत ब्याज दर पर आपात कर्ज मुहैया कराएगा।

बैंक के मुताबिक इस फंड से वैसे छोटे उद्यमियों को मदद दी जाएगी, जो कोरोना से लड़ने के लिए कोई भी प्रोडक्ट या सर्विस मुहैया कराने को तत्पर हैं। सिडबी के एमडी मुहम्मद मुस्तफा ने कहा कि प्रधनमंत्री नरेंद्र मोदी कोरोना की चेन तोड़ने को हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। हम उनके इस प्रयास के साथ हैं। उम्मीद है कि हम जल्द ही कोरोना का हरा देंगे।

वैज्ञानिकों ने दिया मंत्र, लॉकडाउन के दौरान माइक्रोग्रींस की खेती मुफीद

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- सीमित संसाधनों में माइक्रोग्रीन्स की खेती संभव
- शहरी घरों में सीमित जगहों के लिए यह बहुत उपयोगी

कोरोना के लॉकडाउन में घरों तक सिमटे लोगों के लिए कृषि वैज्ञानिकों ने माइक्रोग्रींस का मंत्र दिया है। घरों में एक सप्ताह से दो सप्ताह के सीमित समय में ही पोषक तत्वों से भरपूर माइक्रोग्रींस की खेती की जा सकती है। गांव या शहरी घरों के सीमित जगह में इसकी सफल खेती आसानी से संभव है। माइक्रोग्रींस शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों के लिए बेहद उपयोगी है।

इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च के उपमहानिदेशक डॉक्टर एके सिंह ने बताया कि माइक्रोग्रींस उगाना आसान है। इन्हें लगाने से काटने तक मात्र एक से दो सप्ताह का समय चाहिए। इसे लॉकडाउन की अवधि में उगा सकते हैं। इन्हें स्वयं उगाना रोमांचक और खासकर बच्चों के लिए सीखने के अतिरिक्त एक रोचक खेल भी है। इन्हें उगाना मजेदार और कम मेहनत का काम है। थोड़े दिन के अंतराल पर इन्हें कई बार उगाया जा सकता है। दिलचस्प यह है कि किचन में पूरे साल माइक्रोग्रींस का उत्पादन किया जा सकता है, बशर्ते सूर्य की रोशनी मिलती हो। विटामिन, पोषक तत्वों और बायोएक्टिव कंपाउंड्स के खजाने के रूप मे जाना जाता है। माइक्रोग्रींस को सुपर फूड की श्रेणी में भी रखा जाता है। भारतीय परिवेश में चना, मूंग व मसूर को अंकुरित करके खाना आम है। इसमें माइक्रोग्रींस इनसे थोड़ा सा अलग है। अंकुरित बीजों या स्प्राउट्स में हम जड़, तना एवं बीज-पत्र को खाने में प्रयोग में लाते हैं। लेकिन माइक्रोग्रीन्स में तने, पत्तियों एवं बीज-पत्र का उपयोग किया जाता है।

विदेश से 1.57 करोड़ पीपीई मंगा रहा है भारत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोविड-19 वायरस से लड़ाई में सबसे आगे रहने वाले चिकित्साकर्मियों के पास सबसे अहम हथियार पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट (पीपीई) है और देश के कई हिस्सों से इसकी कमी होने लगी है। पिछले कुछ दिनों से कई विदेशी कंपनियों से डाक्टरों व चिकित्सा कर्मियों के साथ ही प्रशासन से जुड़े लोगों के लिए भी पीपीई मंगवाने के लिए बातचीत चल रही थी। अब सरकार की तरफ से बताया गया है कि जल्द ही विदेश से इसकी आवक शुरू हो जाएगी। चीन से 1.70 लाख पीपीई आ चुका है। सिंगापुर से दो लाख पीपीई 11 अप्रैल को पहुंच जाएगा। इन दोनो देशों से कुल मिलाकर 1.4 करोड़ पीपीई मंगाने की व्यवस्था की जा रही है। सरकार की योजना है कि हर हफ्ते 10 लाख पीपीई देशभर में वितरित किये जाएं।

सोमवार को कुल 1.90 लाख पीपीई अस्पतालों को वितरित किए गए हैं। इनमें 1.70 लाख का आयात चीन से हुआ था और बाकी घरेलू स्तर पर तैयार किए गए थे। देश में पहले से ही 3.87 लाख से ज्यादा पीपीई संबंधित विभागों में वितरित किए जा चुके हैं। इसके अलावा घरेलू स्तर पर तैयार दो लाख मास्क भी विभिन्न अस्पतालों में बांटे गए हैं। अभी तक 20 लाख एन-95 मास्क अस्पतालों में दिए जा चुके हैं। इसके अलावा 16 लाख एन-95 मास्क और उपलब्ध हैं। सरकार की तरफ से दी गई सूचना के मुताबिक जिन राज्यों में तेजी से कोरोना वायरस के फैलने की सूचना आई है, उन्हें पीपीई देने में वरीयता दी जा रही है।

अभी महाराष्ट्र, तमिलनाडु, दिल्ली, केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना व राजस्थान पर ज्यादा फोकस किया जा रहा है। नई दिल्ली में एम्स, सफदरजंग और आरएमएल समेत उत्तर प्रदेश में बीएचयू, एएमयू केअलावा देशभर के कई अस्पतालों को वरीयता के तौर पर उपकरण भेजे गए हैं। सरकार की तरफ से दी गई सूचना के मुताबिक सिंगापुर से 80 लाख पीपीई किट्स लिया जा रहा है। इसमें सर से पांव तक कवर करने वाले सुरक्षा कवच (पहनावा) प्रमुख तौर पर शामिल हैं, जिनकी आपूर्ति 11 अप्रैल से शुरू हो जाएगी। उसके अगले हफ्ते आठ लाख किट्स सिंगापुर की कंपनी भारत को देगी। जबकि चीन की एक दूसरी कंपनी से 60 लाख कंप्लीट पीपीई किट्स मंगाने के लिए बातचीत अंतिम चरण में है। वैसे, इसमें एन-95 मास्क भी हैं। लेकिन इनकी ज्यादा मांग होने की वजह से अलग से भी इनके ऑर्डर दिए जा रहे हैं। मास्क के अलावा विशेष किस्म के चश्मे का भी अलग से ऑर्डर किया जा रहा है। घरेलू स्तर पर भी एन-95 मास्क तैयार करने का काम जल्द ही शुरू हो जाएगा। सरकार का कहना है कि रोजाना 80 हजार मास्क बनने लगेंगे। अब सब मिलाकर देखा जाए तो 1.57 करोड़ पीपीई के ऑर्डर दिए जा रहे हैं।

आरईसी ने किया 150 करोड़ रुपये देने का वादा

नई दिल्ली, (वि.) : भारत सरकार की नवरत्न कंपनी आरईसी लिमिटेड ने कोरोना से लड़ने के लिए सरकार गठित पीएम-केयर्स फंड में 150 करोड़ रुपये देने का वादा किया है। भारत की ऊर्जा कंपनियों को कर्ज देने वाली प्रमुख कंपनी आरईसी ने कहा कि इसके अलावा उसके सभी कर्मचारी प्रधानमंत्री राष्ट्रीय आपदा कोष (पीएमएनआरएफ) में एक दिन का वेतन देंगे। कंपनी के मुताबिक वह कोरोना से लड़ने के सरकार और कॉरपोरेट जगत के प्रयासों में अपनी तरफ से पूरा योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध है।

झारखंड में सत्तारूढ़ झामुमो और कांग्रेस के बीच बढ़ने लगी है दूरी

राज्य ब्यूरो, रांची

- चार मंत्रियों ने सीएम हेमंत सोरेन से मुलाकात में रखी अपनी बातें
- निर्णयों में शामिल नहीं होने से हैं निराश, आलम बोले नहीं है कोई परेशानी

कोरोना वायरस में सुरक्षित शारीरिक दूरी की हिदायत तो है, लेकिन इस आपदा की आड़ में झारखंड में सत्तारूढ़ दलों के बीच भी दूरी बढ़ती प्रतीत हो रही है। हालांकि, इसका अहसास तो मंत्रिमंडल गठन के कुछ समय बाद कांग्रेस के मंत्रियों की तीव्र रफ्तार को देखने से ही होने लगा था। अहम निर्णयों में अनदेखी का बहाना बना कांग्रेस के मंत्रियों ने आपस में मिलकर एक प्रेशर ग्रुप का निर्माण कर लिया है और अब इसी के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। दूसरी ओर, राजद कोटे के मंत्री सत्यानंद भोक्ता भी थोड़े कटे-कटे चल रहे थे, लेकिन उन्हें मनाने की कोशिश के तहत जिम्मेदारियां दी गई हैं। भोक्ता को मुख्यमंत्री दीदी किचन योजना को लांच करने की अहम जिम्मेदारी दी गई।

यह बात भी माननी होगी कि सत्तारूढ़ दलों के बीच दरार की बातें दीवारों के भीतर से छनकर जरूर आ रही हैं, लेकिन कोई इस पर अभी खुलकर बोलने को तैयार नहीं है। अलबत्ता, कांग्रेस कोटे के मंत्रियों के समूह का समय-समय पर अलग से बैठकर नीतिगत बातें करना इस ओर से इशारे कर रहा है।

कांग्रेस विधायक दल के नेता और राज्य सरकार में ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम से जुड़ा हालिया प्रकरण भी सर्वविदित है। आलम ने अपने क्षेत्र के लोगों को पहुंचाने के लिए रांची जिला प्रशासन का सहारा लिया। इस पर किरकिरी भी हुई। इस मामले में उपायुक्त से जवाब मांगा गया है।

सूत्रों के मुताबिक चारों मंत्रियों ने सोमवार को इस मुद्दे पर एक साथ मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से बात भी की और उन्हें इस तरह का निर्णय लेने से पहले व्यक्तिगत रूप से बातचीत कर लेने का भी आग्रह किया है। यह भी कहा गया कि विरोधाभास के कारण गलत मैसेज जा रहा है। हालांकि, मंत्री आलमगीर आलम ने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा के साथ बेहतर समन्वय से काम हो रहा है। किसी प्रकार की परेशानी नहीं है। पार्टी की नीतियों के तहत दल से जुड़े मंत्री आपस में बैठकर योजनाएं बनाते हैं, ताकि इसे धरातल पर उतारा जा सके। यह सरकार पर दबाव बनाने के लिए नहीं है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार मिलकर हर मुद्दे पर चर्चा करती है।

बंगाल की एडवाइजरी कमेटी में नोबेल विजेता अभिजीत भी

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : कोरोना संकट और 21 दिनों के देशव्यापी लॉकडॉउन से उपजे आर्थिक संकट से निपटने के लिए बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोमवार को एक वैश्विक एडवाइजरी कमेटी बनाने की घोषणा की। यह कमेटी मौजूदा आर्थिक संकट से उबरने के उपाय व भविष्य की रणनीति तैयार करेगी।

ममता ने कहा कि ग्लोबल एडवाइजरी बोर्ड फॉर कोविड रिस्पांस पॉलिसी इन वेस्ट बंगाल नाम से गठित इस कमेटी में नोबेल विजेता अर्थशास्त्री अभिजीत बनर्जी सहित अन्य दिग्गज शामिल होंगे, जिन्होंने पूरी दुनिया में नाम कमाया है। ममता ने कहा- लॉकडॉउन के चलते सब बंद होने से राजस्व नहीं आ रहा है। अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इसलिए भविष्य की रणनीति बनाना जरूरी है। माना जा रहा है कि अभिजीत के इस कमेटी में शामिल होने से बड़ा फायदा हो सकता है।

गांव वालों के लिए होगा ग्रामीण ई-स्टोर

राजीव कुमार, नई दिल्ली

- सीएससी को अनिवार्य सेवा में लाने से ग्रामीणों की जिंदगी हो जाएगी आसान

लॉकडाउन के दौरान गांवों में आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई को आसान बनाने के लिए सरकार ग्रामीण ई-स्टोर लांच करने जा रही है। ग्रामीण ई-स्टोर एक एप होगा जिसकी मदद से गांवों में रहने वाले अपनी जरूरत के सामान अपने घर तक मंगा सकेंगे। इस काम में कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) से जुड़े विलेज लेवल एंट्रेप्रेन्योर्स (वीएलई) की सहायता ली जाएगी। सीएससी भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी मंत्रालय के अधीन काम करता है।

सीएससी स्कीम के सीईओ डीसी त्यागी ने बताया कि लॉकडाउन के दौरान गांवों में आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई को सुगम बनाने के लिए अगले दो-तीन दिनों में सीएससी ग्रामीण ई-स्टोर नामक एप लांच किया जा रहा है। यह एप हर स्मार्टफोन में गूगल प्लेस्टोर पर उपलब्ध होगा। त्यागी ने बताया कि ग्रामीण ई-स्टोर से मुख्य रूप से किराना सामान के ऑर्डर हो पाएंगे। ग्रामीणों के ऑर्डर के अनुसार माल मंगाने और उसे उनके घर तक पहुंचाने की जिम्मेदारी वीएलई की होगी। एप पर सामान की कीमतों को भी दर्शाया जाएगा। आरंभ में 10,000 वीएलई के ग्रामीण ई-स्टोर से जुड़ने की संभावना है। इसके सफल होने पर और लॉकडाउन लंबा चलने की स्थिति में वीएलई की संख्या बढ़ सकती है। अगर यह प्रयोग सफल रहता है तो गांवों में अमेजन और फ्लिपकार्ट जैसी सुविधा शुरू हो जाएगी। आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के गांवों में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर ग्रामीण ई-स्टोर की शुरुआत की गई है, लेकिन यहां यह सेवा फोन के जरिये दी जा रही है। वहां ग्रामीणों के बीच इस प्रकार की सेवा को लेकर उत्साह देखते हुए एप लांच किया जा रहा है।

त्यागी ने बताया कि आधार से लिंक्ड सीएससी को अनिवार्य सेवा में लाने से लॉकडाउन में ग्रामीण इलाके की जिंदगी आसान हो जाएगी। अभी लगभग 2.6 लाख आधार लिंक्ड सीएससी हैं जहां जाकर ग्रामीण अपने इंश्योरेंस के किस्त जमा करने से लेकर अपने खाते में आने वाले पैसे को निकाल सकता है। अभी 18,000 बैंकिंग कोरेस्पांडेंट ग्रामीण इलाके में जाकर लोगों तक उनके खाते में सरकार की तरफ से भेजे गए पैसे को पहुंचाने का काम कर रहे हैं। आधार लिंक्ड सीएससी को अनिवार्य सेवा का दर्जा मिलने से ये सेंटर भी कार्यरत हो जाएंगे और देश का हर पंचायत कवर हो जाएगा। इन सेंटरों के चालू हो जाने पर ग्रामीणों के लिए सहायता राशि को प्राप्त करना आसान हो जाएगा।

प्रतीकात्मक।

न्यूज गैलरी

हॉलीवुड के दो कलाकारों की महामारी के संक्रमण से मौत

लॉस एंजिलिस : कोरोना वायरस ने हॉलीवुड के दो बुजुर्ग कलाकारों को अपना अपना शिकार बनाया है। स्टीवन स्पीलबर्ग की चर्चित फिल्म 'जॉ' में मिसेज किंटर की भूमिका निभाने वालीं 91 वर्षीय ली फिएरो का अमेरिका के ओहायो में निधन हो गया। लंबे समय तक मैसाच्युसेट्स के मार्था विनयार्ड द्वीप पर रहने वाली फिएरो अभिनय के अलावा शिक्षक के तौर पर भी मशहूर थीं। कोरोना की चपेट में आकर जान गंवाने वाले दूसरे कलाकार 94 वर्षीय फॉरेस्ट कांप्टन हैं। 'द एज ऑफ नाइट' टीवी सीरीज से मशहूर हुए कांप्टन की मौत रविवार को इलाज के दौरान हो गई। कांप्टन द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिकी सैनिक के तौर पर फ्रांस में तैनात रहे थे। सेना के बाद अभिनय के क्षेत्र को चुनने वाले कांप्टन ने 'ऐज द वर्ल्ड टर्नस' और 'ऑल माय चिल्ड्रेन' जैसे टीवी सीरियल में काम किया था। (एजेंसियां)

लीबिया में सत्ता संघर्ष तेज, 41 जवानों की जान गई

त्रिपोली : कोरोना संकट के बीच उत्तरी अफ्रीकी मुल्क लीबिया में राजधानी त्रिपोली पर कब्जे को लेकर संघर्ष तेज हो गया है। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) समर्थित लीबियाई सरकार और देश के पूर्वी क्षेत्र पर काबिज सेना के बीच जंग में 41 जवानों की मौत की खबर है। मृत सैनिकों की तस्वीर पोस्ट करते हुए पूर्वी क्षेत्र की सेना ने रविवार को कहा कि ये शव यूएन समर्थित सरकार की सेना के हैं। त्रिपोली पर कब्जे के लिए दोनों गुटों के बीच एक साल से जंग चल रही है। वर्ष 2011 में तानाशाह मुअम्मर गद्दाफी की मौत के बाद से लीबिया में सत्ता संघर्ष जारी है। मुल्क में शांति स्थापित करने के लिए प्रयासरत यूएन मिशन का कहना है कि दोनों गुटों के बीच इस संघर्ष में पिछले एक साल में 356 लोगों की मौत हो चुकी है। (आइएएनएस)

अकेले यूरोप में 50 हजार से ज्यादा लोगों की मौत

कोरोना का कहर ▶ इटली में सर्वाधिक 15,877 संक्रमितों की जान गई

स्पेन में पिछले चौबीस घंटे में 637 और लोगों की गई जान

पेरिस, एजेंसियां : कोरोना महामारी से अब तक पूरी दुनिया में 70 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है, लेकिन यूरोप इससे सर्वाधिक प्रभावित है। अब तक इस बीमारी से महाद्वीप में 50,209 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि 6,75,580 लोग संक्रमित हैं। इटली में सर्वाधिक 15,877 लोगों की मौत हुई है जबकि स्पेन में 13,055 लोगों की जान गई है। वहीं फ्रांस में 8,078 और ब्रिटेन में 4,934 लोगों की मौत हुई है।

स्पेन में पिछले चौबीस घंटों में 637 लोगों की मौत हुई है। लगातार यह चौथा दिन है जब एक दिन में मृतकों की संख्या में कमी आई है। पिछले गुरुवार को एक दिन में सर्वाधिक 950 लोगों की मौत हुई थी। संक्रमण के नए मामलों में भी कमी आई है। अब यह 3.3 फीसद की दर से 1,35,032 हो गए हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय की एक अधिकारी ने बताया कि अभी तक 40 हजार लोगों को अस्पताल से डिस्चार्ज किया जा चुका है। यह कुल संक्रमित लोगों का 30 फीसद है। मृतकों की संख्या के साथ ही संक्रमण के मामलों में कमी आने के बीच स्पेन की सरकार इस बात पर विचार करने लगी है कि लॉकडाउन से जनता को कैसे राहत प्रदान की जाए।

बता दें कि स्पेन में 14 मार्च को लॉकडाउन घोषित किया गया था, जिसे बाद में बढ़ाकर 25 अप्रैल कर दिया गया है। सरकार ऐसे लोगों की पहचान करके उनका टेस्ट कराने की योजना बना रही है, जो संक्रमित तो हैं, लेकिन उनमें लक्षण नहीं दिखाई दे रहे हैं। सरकार ने संक्रमण को रोकने के लिए सभी लोगों से सार्वजनिक जगहों पर फेस मास्क पहनने की अपील की है।

अल्बानिया के तिराना में लोगों को मार्केट में जाने से पहले इस तरह सैनिटाइज किया जा रहा है। रायटर

मंदी के जाल में फंसेगा फ्रांस : फ्रांस के वित्त मंत्री ने इस बात की आशंका जताई है कि कोरोना महामारी के चलते देश भयंकर मंदी के जाल में फंस सकता है। उन्होंने कहा कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 2009 में आई मंदी में आर्थिक वृद्धि का आंकड़ा -2.2 फीसद था, लेकिन इस बार हालात और ज्यादा खराब होंगे। उन्होंने कहा कि यह उस आर्थिक सदमे का संकेत है, जिसका हम सामना कर रहे हैं। सांख्यिकी मंत्रालय ने पिछले महीने कहा था कि एक महीने के लॉकडाउन से जीडीपी में तीन फीसद अंकों की कमी आएगी।

ईरान में 136 और लोगों की मौत : ईरान में पिछले चौबीस घंटों के दौरान 136 और लोगों की मौत हुई है। इस तरह वहां मरने वालों की संख्या 3,739 हो गई है। संक्रमण के 2,274 नए मामले सामने आने के साथ ही कुल संक्रमित लोगों की संख्या 60,500 हो गई है। राहत भरी बात यह है कि लगातार छठे दिन संक्रमित लोगों की संख्या में कमी आई है।

अंतिम संस्कार के लिए इंडोनेशिया ने बनाया पुलिस बल : कोरोना संक्रमित लोगों के अंतिम संस्कार के लिए इंडोनेशिया में एक अलग पुलिस यूनिट बनाई गई है। यह कदम उन खबरों के बाद उठाया गया है, जिसमें आम लोग संक्रमित व्यक्तियों का अंतिम संस्कार करने से उनके परिजनों को रोक रहे हैं। देश में अब तक 209 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि 2500 लोग संक्रमित हैं।

बांग्लादेश में मस्जिदों में नमाज पढ़ने पर रोक : संक्रमण को रोकने के लिए बांग्लादेश ने मस्जिदों में नमाज पढ़ने पर रोक लगा दी है। वहां पिछले चौबीस घंटों के दौरान चार लोगों की मौत हुई है जबकि संक्रमण के 35 नए मामले सामने आए हैं।

देश	मौतें	संक्रमित
इटली	15,887	128,948
स्पेन	13,055	135,032
अमेरिका	9,624	336,907
फ्रांस	8,078	92,839
ब्रिटेन	4,934	47,806
ईरान	3,739	60,500
चीन	3,331	81,708

जर्मनी गए तो होना पड़ेगा क्वारंटाइन

जर्मनी में आने वाले सभी यात्रियों को 14 दिनों तक क्वारंटाइन में रहना होगा। 10 अप्रैल से लागू होने वाले इस नियम से जर्मनी और यूरोपीय यूनियन के देशों के नागरिकों के प्रभावित होंगे। उधर, केंद्रीय कैबिनेट में फैसला लिया गया है कि छोटे और मध्यम उद्योगों के 100 फीसद कर्ज की गारंटी सरकार लेगी।

जर्मनी के वित्त मंत्री पीटर अल्तमईयर ने महामारी से निपटने के लिए पैकेज की घोषणा की और साइकिल से घर की ओर निकल पड़े। एएफपी

बचना है तो घर के अंदर रहें : डोनाल्ड ट्रंप

वाशिंगटन, एजेंसियां : कोरोना महामारी से जूझ रहे अमेरिका में अब तक 16 लाख लोगों की जांच की गई है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को खुद यह जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने देशवासियों से घरों के अंदर ही रहने की अपील की है। देश में कोरोना वायरस से अब तक 10,000 से ज्यादा लोगों की जान जा चुकी है। जो अमेरिका में 9/11 आतंकी हमले में मारे गए लोगों की संख्या से तीन गुना ज्यादा है। देश में तीन लाख 30 हजार से ज्यादा लोग संक्रमण की चपेट में हैं। इनमें एक हजार से ज्यादा सैनिक भी शामिल हैं।

ट्रंप ने कहा, 'अमेरिका में अब तक 16 लाख लोगों की जांच की गई है, जो किसी भी देश के मुकाबले सबसे ज्यादा है। लगभग पूरे देश के लिए बड़ी आपदा की घोषणा कर दी गई है और अमेरिका की 33 करोड़ आबादी में से 95 फीसद से ज्यादा लोग घरों के अंदर रहने को मजबूर हैं।' कोरोना वायरस के खिलाफ अमेरिकी प्रयासों को 'सैन्य अभियान' बताते हुए ट्रंप ने कहा, 'दुनियाभर से लाखों मास्क, दस्ताने, सुरक्षात्मक उपकरण और चिकित्सीय आपूर्ति देश में लाई जा रही है। यह वास्तव में सैन्य अभियान है जो हमने शुरू किया है। साथ ही 50 राज्यों और क्षेत्रों में बड़ी आपदा की घोषणा करने की तैयारी है जो बहुत असामान्य है।'

कोरोना वायरस से मुकाबले के लिए मलेरिया की दवा हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन के इस्तेमाल पर अपने जोर को दोहराते हुए ट्रंप ने कहा कि अमेरिका ने देशभर में बांटने के लिए इसकी करीब 2.9 करोड़ डोज खरीदी हैं। स्वास्थ्य अधिकारियों ने इस सप्ताह मृतकों का आंकड़ा और बढ़ने की आशंका जताई है। इसकी वजह से विभिन्न प्रांतों के गवर्नरों ने व्हाइट हाउस से कोरोना वायरस के खिलाफ राष्ट्रीय रणनीति बनाने की अपील की है। वैश्विक महामारी संकट से उबरने के लिए नीति बना रहे देश के सबसे बड़े संक्रामक रोग विशेषज्ञ डॉ एंथनी फॉसी ने बड़े खतरे को लेकर आगाह किया है। उन्होंने कहा, अमेरिकियों को बुरे हफ्ते के लिए तैयार रहना चाहिए।

बर्खास्त नौसेना कमांडर भी कोरोना पॉजिटिव : कोरोना प्रभावित नौसैनिकों के लिए सार्वजनिक तौर पर मदद मांगने के कारण बर्खास्त किए गए अमेरिकी विमानवाहक युद्धपोत यूएसएस रूजवेल्ट के कमांडर कैप्टन ब्रेट क्रोजियर भी जांच में संक्रमित पाए गए हैं। अमेरिकी रक्षा मंत्री मार्क एस्पर ने कैप्टन की बर्खास्तगी को सही ठहराया है। लेकिन इस फैसले की चौतरफा आलोचना हो रही है और इसे उस सम्मानित अधिकारी को दी गई अनुचित सजा बताया जा रहा है, जो अपने मातहतों की भलाई की बात कर रहा था। गुआम में खड़े युद्धपोत के कमांडर ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों से पोत को जल्द खाली करने की इजाजत देने का अनुरोध किया था। क्रोजियर ने मीडिया में लीक हुए पत्र में लिखा था, 'हम किोई युद्ध नहीं लड़ रहे, ऐसे में नौसैनिकों का मरना जरूरी नहीं है।'

अमेरिका ने चीन को चेताया

अमेरिका ने चीन को सख्त चेतावनी देते हुए कहा कि वह कोरोना वायरस से खराब हुए हालात का फायदा उठाते हुए दक्षिण चीन सागर में दुस्साहसिक कदम न उठाए। वियतनाम ने आरोप लगाया है कि चीन ने उसका एक मालवाहक पोत डुबो दिया है, जिसके बाद अमेरिका ने यह चेतावनी जारी की है।

चीन में कोरोना के नए मामलों का आना जारी

बीजिंग, रायटर : चीन में कोरोना के नए मामलों का सामने आना लगातार जारी है। इसमें लक्षण वाले और बिना लक्षण वाले दोनों तरह के मामले हैं। ताजा जानकारी के अनुसार रविवार को कोरोना के 39 नये मामले सामने आए जबकि शनिवार को 30 मामलों का पता चला था। चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग (एनएचसी) ने सोमवार को बताया कि देश में रविवार को बिना लक्षण वाले 78 कोरोना मामलों का पता चला है। जबकि एक दिन पहले ही इसी तरह के 47 मामले पकड़ में आए थे।

- रविवार को 39 और शनिवार को 30 मामले सामने आए
- रविवार को बिना लक्षण वाले 78 मामले भी पकड़ में आए

चीन के वुहान में मास्क पहनकर गंतव्य की ओर जाती एक युवती। रायटर

कोरोना की रोकथाम के लिए उठाए गए सख्त कदमों के बाद भी बाहर से आने वाले और बिना लक्षण वाले मामलों ने चीन की चिंता बढ़ा दी है। बिना लक्षण वाले मामलों में मरीजों को भले ही परेशानी ज्यादा न होती हो लेकिन वे दूसरे को संक्रमित करने में सक्षम होते हैं। एनएचसी के प्रवक्ता मी फेंग ने एक प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि चीन को सतर्क रहने के साथ इस महामारी की वापसी को हर हाल में रोकना होगा।

चीन में हाल के दिनों में बिना लक्षण वाले मिले 705 मामलों की निगरानी हो रही है। इनमें से आधे मामले कोरोना से सर्वाधिक प्रभावित हुबेई प्रांत के हैं। बिना लक्षण वाले मामले पिछले एक सप्ताह से सामने आने से सरकार की चिंता बढ़ गई है। पिछले दो माह से लॉकडाउन में रह रहे हुबेई के लोगों को आगामी 8 अप्रैल से शहर से बाहर जाने की छूट मिलने जा रही है। हालांकि इस प्रांत ने पिछले माह ही यात्रा संबंधी कुछ नियमों में ढील दी थी।

चीन की समाचार एजेंसी शिन्हुआ के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में मिले बिना लक्षण वाले कोरोना संक्रमितों के कारण 45 आवासीय परिसरों को 'महामारी मुक्त' श्रेणी से हटा लिया गया है। उल्लेखनीय है महामारी मुक्त परिसरों में रह रहे लोगों को दिन में दो घंटे के लिए घर से बाहर निकलने की छूट मिली हुई है। चीन में अब तक इस बीमारी से 81,708 लोग संक्रमित हुए जबकि 3331 लोगों की मौत हुई।

कोरोना संक्रमण के कारण चीन ने अपनी अतंरराष्ट्रीय सीमाएं बंद कर रखी हैं। पहली अप्रैल से विदेश से आने वाले हर आदमी की जांच हो रही है। कोरोना के लक्षण वाले जो नये मामले सामने आये हैं उनमें 38 रविवार को विदेश से आये लोगों के हैं। जबकि शनिवार को इसी तरह के 25 मामले पकड़े गए थे। इनमें से 20 मामले रूस से लगने वाली सीमा से हीलोंगजियांग प्रांत में प्रवेश करने वालों में मिले। ये सभी चीनी नागरिक हैं और मास्को से व्लाडीवोस्तक होते हुए स्वदेश लौटे हैं।

चीन को विदेश में पढ़ रहे अपने 16 लाख छात्रों के जरिये देश में संक्रमण पहुंचने की आशंका सता रही है। हालांकि चीन ने अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर रोक लगा रखी है लेकिन कई संपन्न छात्र चार्टर्ड उड़ानों से घर लौट रहे हैं। इस बीची गुआंडडोंग प्रांत में कोरोना का स्थानीय मामला सामने आया है। यहां पर बीमारी के प्रकोप के दौरान हर दिन पांच मामले तक आ रहे थे। नया मामला सामने आने के बाद प्रांत के गुआंग्झू, शेंझेन व चेंग्सू में सतर्कता बढ़ा दी गई है।

उधर, एक अन्य घटनाक्रम में अमेरिका में चीन के राजदूत कुई तिनाकी ने न्यूयॉर्क टाइम्स को बताया कि वायरस को लेकर दोनों देशों में काफी अप्रिय बातें हुई हैं। लेकिन यह समय एक-दूसरे पर उंगली उठाने का नहीं है। इस समय हम लोगों को एकता, भाईचारा और आपसी सहयोग दिखाना होगा।

संक्रमित ब्रिटिश पीएम बोरिस जॉनसन अस्पताल में भर्ती

लंदन, एजेंसियां : कोरोना वायरस से संक्रमित ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्हें दस दिन पहले कोरोना पॉजिटिव पाया गया था, जिसके बाद वह आइसोलेशन में चले गए थे। लेकिन इसके बावजूद उनमें बीमारी के लक्षण दिखाई देने बंद नहीं हुए, जिसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराने का निर्णय लिया गया।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री के सरकारी कार्यालय 10 डाउनिंग स्ट्रीट के प्रवक्ता ने कहा, 'डॉक्टरों की सलाह पर रविवार रात प्रधानमंत्री को टेस्ट के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यह एहतियाती कदम है क्योंकि दस दिनों के बाद भी उनमें कोरोना के लक्षण दिखाई पड़ रहे हैं।' प्रवक्ता ने बताया कि प्रधानमंत्री ने स्वास्थ्यकर्मियों को उनके कठिन परिश्रम के लिए धन्यवाद देने के साथ ही जनता से घर पर रहने और सरकार के दिशा-निर्देशों का पालन करने को कहा है। अस्पताल से छुट्टी के बारे में पूछे जाने पर गृह मंत्री रॉबर्ट जेनरिक ने कहा, प्रधानमंत्री पूरी तरह ठीक हैं। उनके कुछ टेस्ट होंगे। उनकी सेहत में सुधार हो रहा है और वह जल्द ही कामकाज संभाल लेंगे। उन्होंने हालांकि इसकी कोई समय सीमा नहीं बताई। बीबीसी के अनुसार, फिलहाल जॉनसन ही सरकार के प्रभारी बने हुए हैं। लेकिन उनके स्वस्थ होने तक कैबिनेट बैठक की अध्यक्षता विदेश मंत्री करेंगे। बीते शुक्रवार को सात दिनों के आइसोलेशन के बाद भी जब जॉनसन में बीमारी से जुड़े लक्षण दिखाई देने बंद नहीं हुए तो उन्होंने सोशल मीडिया के जरिये अपने आइसोलेशन की अवधि बढ़ाने का एलान किया था।

बोरिस जॉनसन। फाइल/रायटर

डॉलर के मुकाबले गिरा पौंड : प्रधानमंत्री जॉनसन के अस्पताल में भर्ती होने की खबर जैसे ही सार्वजनिक हुई, डॉलर के मुकाबले पौंड में तेज गिरावट दिखाई दी। स्थिति तब संभली जब गृह मंत्री जेनरिक ने कहा कि पीएम पूरी तरह ठीक हैं और जल्द ही अपना कामकाज संभाल लेंगे।

ट्रंप ने जॉनसन के जल्द ठीक होने की कामना की : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के जल्द ठीक होने की कामना की है। रविवार को व्हाइट हाउस में उन्होंने कहा, अमेरिका के सभी लोगों ने जॉनसन के अच्छे स्वास्थ्य की प्रार्थना की है। वह मेरे अच्छे दोस्त हैं। इसके साथ ही वह सच्जन और महान नेता हैं।

महारानी ने कहा, कोरोना के खिलाफ हम जंग जीतेंगे

ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने कोरोना वायरस के कहर से जूझ रहे देशवासियों को भरोसा दिलाया है कि इस महामारी के खिलाफ युद्ध में हम सफल होंगे। 67 साल के अपने शासन में पांचवीं बार जनता को संबोधित कर रहीं महारानी ने इस दौरान देशवासियों को धन्यवाद भी दिया। उन्होंने कहा, स्व-अनुशासन और संकल्प से हम इस वायरस के खिलाफ लड़ाई को जीतेंगे और देश में अच्छे दिनों की वापसी होगी। महारानी ने द्वितीय विश्व युद्ध की याद दिलाते हुए कहा, हम दोबारा मिलेंगे। महारानी ने देश के डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों को भी धन्यवाद दिया। चार मिनट के इस भाषण को विंडसर पैलेस में रिकॉर्ड किया गया था। भाषण रिकॉर्ड करने के लिए केवल एक कैमरामैन को अनुमति दी गई थी।

जापान में बढ़े मरीज, घोषित हुई आपातस्थिति

टोक्यो, एएफपी : जापान में कोरोना मरीजों की बढ़ती संख्या को देखते हुए सोमवार को प्रधानमंत्री शिंजो एबी ने आपातस्थिति की घोषणा कर दी। साथ ही अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले असर से निपटने के लिए एक ट्रिलियन डॉलर (76 लाख करोड़ रुपये) के प्रोत्साहन पैकेज का एलान किया। जापान में इस समय 3,650 कोरोना मरीज हैं, जो तमाम देशों की तुलना में बहुत कम हैं। जापान दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है।

प्रधानमंत्री एबी के अनुसार आपातस्थिति का प्रभाव मंगलवार से देखने को मिलेगा। ऐसा राजधानी टोक्यो समेत देश के कुछ इलाकों में कोरोना वायरस के मरीजों की बढ़ती संख्या के मद्देनजर किया गया। जापान में कुछ हफ्ते पहले करीब दो हजार मरीज सामने आए थे लेकिन इसके बाद उनकी संख्या में बढ़ोतरी कम हो गई और माना गया कि देश में महामारी नियंत्रित हो गई है। लेकिन कुछ दिन पहले उसने फिर से सिर उठा लिया। नियंत्रण के कुछ उपाय लागू किए गए लेकिन जब वे कारगर साबित नहीं हुए तो अब राष्ट्रीय आपातस्थिति घोषित कर सरकार ने ज्यादा सख्ती का फैसला किया है। इस स्थिति में लॉकडाउन कर लोगों को घर पर रखा जा सकेगा, कारोबार और व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रखे जा सकेंगे और यातायात को नियंत्रित किया जाएगा।

इस दौरान भीड़ एकत्रित नहीं होने दी जाएगी और निजी इमारतों को भी चिकित्सकीय कार्यों के लिए लिया जा सकेगा। लॉकडाउन का उल्लंघन करने वालों पर अर्थदंड भी लगाया जा सकेगा। पीएम ने कहा, एक महीने के लिए लागू की गई व्यवस्था में हम सभी देशवासियों का सहयोग चाहते हैं।

सिंगापुर ने 20 हजार विदेशी कामगारों को क्वारंटाइन किया

सिंगापुर, एपी : कोरोना संक्रमित मामलों की बढ़ती संख्या को देखते हुए सिंगापुर ने करीब बीस हजार विदेशी कामगारों को उनकी डॉरमिटरी (रहने की जगह) में ही क्वारंटाइन कर दिया है। इन कामगारों में ज्यादातर भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश और नेपाल के हैं। सिंगापुर की लगभग 57 लाख की आबादी में 14 लाख विदेशी कामगार हैं। विदेशी कामगारों में दो लाख चौरासी हजार कंस्ट्रक्शन परमिट पर यहां आए हैं। इस परमिट के लिए भारत, बांग्लादेश, श्रीलंका और थाइलैंड समेत 12 देशों के नागरिक ही आवेदन कर सकते हैं।

सिंगापुर के स्वास्थ्य मंत्रालय ने बीते रविवार को विदेशी कामगारों से संबंधित दो डॉरमिटरी को क्वारंटाइन क्षेत्र घोषित कर दिया। इसका आशय यह है कि दोनों स्थानों पर रहने वाले हजारों कर्मचारी 14 दिनों तक अपने कमरे से बाहर नहीं निकल पाएंगे। इन डॉरमिटरी में संक्रमण के 90 से ज्यादा मामले सामने आ चुके हैं।

भारतीय-अमेरिकी अटार्नी ने कहा, कोरोना की सच्चाई सामने रखे चीन

वाशिंगटन, प्रेट्र : कोविड-19 के संक्रमण से ठीक हो चुके प्रख्यात भारतीय-अमेरिकी अटार्नी रवि बत्रा का कहना है कि चीन को इस संक्रामक वायरस की 'संपूर्ण सच्चाई' दुनिया के सामने रखनी चाहिए। ताकि वैज्ञानिक और डॉक्टर नोवल कोरोना वायरस के संक्रमण का इलाज ढूंढ सकें। उन्होंने कहा कि जब तक इस वैश्विक महामारी का वैक्सीन तैयार नहीं हो जाता, सभी लोगों को अपने घरों की चारदीवारी में ही रहना होगा।

- कोविड-19 के संक्रमण से उबरे हैं रवि बत्रा, बोले-वैक्सीन बनने तक लोगों को घरों में ही रहना होगा

न्यूयॉर्क में बसे अटार्नी रवि बत्रा ने सोमवार को कहा कि इस बेहद संक्रामक कोरोना वायरस के चंगुल से मानवता सुरक्षित बाहर निकल आए। वह चाहते हैं कि चीन अब इस महामारी से जुड़ी हर सच्चाई को दुनिया के सामने रखे। ताकि विभिन्न देशों के वैज्ञानिक और डॉक्टर इससे बचाव के लिए वैक्सीन तैयार कर सकें। बत्ता ने कहा कि केवल अमेरिकी हीरो डॉ. एंथनी फौसी ही इस विकराल बीमारी के इलाज के लिए बीमारी के संबंध में उपलब्ध सार्वजनिक सूचनाओं का इस्तेमाल नहीं कर सकते। बल्कि सभी देशों के वैज्ञानिकों और चिकित्सकों को इस दिशा में अपना योगदान देना है। जल्द से जल्द एक वैक्सीन तैयार करने की जरूरत है। जब तक वैक्सीन नहीं बन जाती, कोई भी बाहर काम पर या स्कूल नहीं जा सकता। अर्थव्यवस्था राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर पूरी तरह से खत्म हो गई है। अब यह वापस नहीं आने वाली है। पिछले हफ्ते ही बत्रा की ट्विटर पर चीन के संयुक्त राष्ट्र के राजदूत झांग जुन से भी बहस हो गई थी। ध्यान रहे कि पिछले साल नवंबर-दिसंबर में चीन के बंदरगाह शहर वुहान से ही इस महामारी की शुरुआत हुई थी जो चंद दिनों में पूरी दुनिया में फैल चुका है। लेकिन अब न्यूयॉर्क कोरोना के संक्रमण का मुख्य केंद्र बन चुका है।

यूक्रेन में चेरनोबिल परमाणु संयंत्र के पास के जंगल में लगी आग

मिंस्क, एपी : परमाणु हादसे का शिकार हो चुके यूक्रेन के चेरनोबिल संयंत्र के पास के जंगल में भीषण आग लग गई है। राजधानी कीव से करीब सौ किलोमीटर दूर 250 एकड़ क्षेत्र में लगी आग पर काबू पाने के लिए यूक्रेन के अग्निशमन दस्ते दिन-रात जूझ रहे हैं।

आपातकालीन सेवा के अधिकारियों ने बताया कि आग प्रभावित क्षेत्र चेरनोबिल परमाणु संयंत्र के एक हजार वर्ग मील के प्रतिबंधित भूभाग में है। वर्ष 1986 में दुनिया के सबसे भीषण परमाणु हादसे के बाद से किसी को भी चेरनोबिल परमाणु संयंत्र के पास जाने की अनुमति नहीं है। 1986 में तत्कालीन सोवियत संघ के अंतर्गत आने वाले इस संयंत्र में धमाके के बाद खतरनाक रेडियो एक्टिव विकिरण वातावरण में फैल गया था। इस हादसे में संयंत्र के दो कर्मचारियों समेत 42 लोगों की जान गई थी। आसपास रहने वाले हजारों लोगों को बाहर निकाला गया था।

दुनियाभर में बढ़ा महिलाओं का उत्पीड़न

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने कहा, कई देशों में दोगुनी हुईं घरेलू हिंसा की शिकायतें
- ऑनलाइन सेवाओं के साथ सिविल सोसायटी की मजबूती में निवेश बढ़ाने का सुझाव

कोरोना महामारी के चलते दुनिया के कई देशों में जारी लॉकडाउन ने बेशक पर्यावरण से लेकर दिल को छू लेने वाले अनगिनत पहलुओं को उजागर किया है। मगर एक दूसरा पहलू महिलाओं के उत्पीड़न की घटनाओं में विश्वव्यापी उछाल भी है। जाहिर तौर पर यह लोगों पर बढ़ रहे दबाव के कारण है।

महामारी से लड़ती दुनिया में महिलाओं पर अत्याचार की बढ़ी इस प्रवृत्ति पर खुद संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुतेरस की ओर से कहा गया है कि बड़ी संख्या में महिलाओं और बच्चियों के लिए उनका घर ही प्रताड़ना का केंद्र बन गया है। संयुक्त राष्ट्र प्रमुख के अनुसार कोरोना वैश्विक महामारी के चलते पूरी दुनिया निर्विवाद रूप से गहरे संकट और विनाशकारी चुनौती का सामना कर रही है। खासकर स्वास्थ्य और आर्थिक चुनौतियों का संकट ज्यादा गहरा है।

एंटोनियो गुतेरस। फाइल

मगर हकीकत यह भी है कि हिंसा केवल युद्ध के मैदान तक ही नहीं सीमित रह गई। कोरोना लॉकडाउन और क्वारंटाइन के हालत में घरों के भीतर महिलाओं और बच्चियों के साथ उत्पीड़न के मामलों में बढ़ोतरी हुई है। महासचिव की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि हम जानते हैं कि लॉकडाउन कोरोना से मुकाबले के लिए अपरिहार्य है। मगर इसके चलते महिलाओं को प्रताड़ित करने वाले अपने हिंसक पार्टनर के साथ रहने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है। कुछ देशों में तो पुलिस और कानून-व्यवस्था संभालने वाली एजेंसियों के पास ऐसी शिकायतों की संख्या दोगुनी हो गई है। इसमें चुनौती यह भी है कि कोरोना संकट के चलते पुलिस और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने वाले लोगों पर पहले से ही काम का ज्यादा दबाव है। स्थानीय संस्थाएं मौजूदा लॉकडाउन की चुनौती और फंड खत्म होने के कारण लगभग पंगु बन गई हैं। उत्पीड़न की शिकार महिलाओं को आश्रय देने वाले शेल्टर होम भी बंद पड़े हैं। ऐसे में समय आ गया है कि ऑनलाइन सेवाओं के साथ सिविल सोसायटी की मजबूती में निवेश बढ़ाया जाए। संयुक्त राष्ट्र ने दुनियाभर में घरेलू हिंसा पीड़ित महिलाओं के शेल्टर होम को आवश्यक सेवाओं की श्रेणी में डालने का अनुरोध भी किया है।

पाक में इलाज कर रहे डॉक्टरों पर बरसीं पुलिस की लाठियां

करांची, प्रेट्र : पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में सुरक्षा के संसाधनों की मांग करना डॉक्टरों को भारी पड़ा है। विरोध प्रदर्शित कर रहे डॉक्टरों पर पुलिस ने पहले लाठियां बरसाईं, इसके बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया। ये डॉक्टर कोरोना वायरस से पीड़ित मरीजों के इलाज में लगे थे।

पाकिस्तान के ज्यादातर सरकारी अस्पतालों के डॉक्टरों और नर्सों के पास अपनी सुरक्षा के लिए कोई उपकरण और पोशाक नहीं हैं। वहां पर साधारण फेस मास्क और ग्लव्स का भी टोटा है। कोरोना वायरस से पीड़ित मरीजों के इलाज में यह अभाव भारी पड़ रहा है। 13 डॉक्टरों और कई नर्सों के वायरस से संक्रमित होने पर मेडिकल स्टाफ विरोध पर उतर आया। प्रदर्शन कर रहे मेडिकल स्टाफ की मांग थी कि उन्हें सुरक्षा के लिए साधन मुहैया कराए जाएं, तब वे काम करेंगे।

राजधानी क्वेटा के पुलिस प्रमुख अब्दुल रजाक चीमा ने कुछ डॉक्टरों और अन्य स्वास्थ्यकर्मियों की गिरफ्तारी की पुष्टि की है। कहा है कि प्रदर्शनकारियों के हिंसक होने पर उन्हें गिरफ्तार किया गया। लेकिन उन्होंने गिरफ्तार किए गए डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों की संख्या बताने से इन्कार कर दिया। बलूचिस्तान की यंग डॉक्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष यासिर अचकजई ने बताया है कि प्रदर्शनकारी सिविल अस्पताल से मुख्यमंत्री सचिवालय तक जुलूस की शक्ल में जा रहे थे। वह मुख्यमंत्री से मिल उन्हें हालात बताने और सुरक्षा उपकरणों की मांग करने जा रहे थे। इसी दौरान पुलिस ने उन पर लाठीचार्ज कर दिया और दर्जनों लोगों को गिरफ्तार कर लिया।

पाकिस्तान में सोमवार को डॉक्टरों ने सुरक्षात्मक उपकरण और वस्त्र की मांग को लेकर क्वेटा जिले में प्रदर्शन किया। रायटर

सुरक्षा किट मांगने पर 150 स्वास्थ्यकर्मी गिरफ्तार

बलूचिस्तान, एएनआइ : पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में कोरोना मरीजों के इलाज में जरूरी मेडिकल सुरक्षा किट की मांग करने पर कुछ डॉक्टरों समेत 150 स्वास्थ्यकर्मियों को गिरफ्तार कर लिया गया। ये लोग सोमवार को मुख्यमंत्री के आवास के बाहर पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्यूपमेंट (पीपीई) किट की मांग करते हुए विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। प्रदर्शन में शामिल यंग डॉक्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष यासिर खान ने कहा कि अपनी जायज मांग को लेकर पहुंचे स्वास्थ्यकर्मियों पर पुलिस ने डंडे बरसाए। गिरफ्तारी के बाद चिकित्सकों ने विरोध के तहत मरीजों को देखना बंद कर दिया है। उनका कहना है कि पीपीई किट नहीं मिलने के कारण एक दर्जन से ज्यादा चिकित्सक संक्रमित हो चुके हैं।

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
स्पोर्ट्स
मंगलवार 7 अप्रैल 2020
www.jagran.com

रोहित शर्मा इस वक्त दुनिया के सर्वश्रेष्ठ वनडे ओपनर हैं।
— हनुमा विहारी, भारतीय क्रिकेटर

फंड के लिए ऑनलाइन शतरंज खेलेंगे आनंद

दुबई, आइएएनएस : पूर्व विश्व चैंपियन विश्वनाथन आनंद सहित छह भारतीय खिलाड़ी कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में फंड इकट्ठा करने के लिए आगामी 11 अप्रैल को प्रशंसकों के साथ ऑनलाइन शतरंज खेलेंगे। कोरोना वायरस के कारण इस समय दुनिया के अधिकतर देशों ने अपनी सीमाएं सील कर रखी है और इसी कारण आनंद अभी जर्मनी में फंसे हुए हैं।

एक नजर में

खराब गेंद होगी तो मैं उस पर शॉट खेलूंगी : शेफाली

नई दिल्ली : महिला टी-20 विश्व कप में कमाल की बल्लेबाजी करने वाली भारतीय युवा बल्लेबाज शेफाली वर्मा ने कहा है कि अगर खराब गेंद होगी तो वह उस पर शॉट जरूर खेलेंगी। 16 वर्षीय बल्लेबाज ने कहा कि वह भारतीय टीम को दुनिया में किसी भी टीम को हराने वाली टीम बनते देखना चाहती हैं। हम अब हर चुनौती से पार पाना चाहते हैं। हां विश्व कप के फाइनल में हमारा दिन नहीं था, लेकिन खेल जीत और हार पर ही टिका है। क्या हुआ अगर हम नहीं बदल सके, लेकिन आगे पूरी तरह से तैयार रहेंगे। (प्रेट्र)

विजेंदर को फिर से रिंग में लौटने की उम्मीद

नई दिल्ली : भारत के पेशेवर मुक्केबाज विजेंदर सिंह को कोविड-19 के कारण अपनी सारी योजनाएं रद करनी पड़ी लेकिन उन्हें साल के अंतिम छह महीनों में रिंग में उतरने और अपना पेशेवर करियर फिर से शुरू करने की उम्मीद है। विजेंदर अभी सर्किट में अजेय है और उन्होंने अपने सभी 12 मुकाबले जीते हैं। 34 वर्षीय विजेंदर ने कहा कि मुझे मई में मुकाबले में उतरना था लेकिन वर्तमान स्थिति देखते हुए उसे रद कर दिया गया। (प्रेट्र)

जुलाई तक सारे बैडमिंटन टूर्नामेंट स्थगित हुए

नई दिल्ली : विश्व बैडमिंटन महासंघ ने सोमवार को अपने सारे अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट जुलाई तक स्थगित कर दिए जिसमें अधिकांश ग्रेड टू और थ्री टूर्नामेंट हैं जिनमें एचएसबीसी बीडब्ल्यूएफ विश्व टूर, बीडब्ल्यूएफ टूर और बीडब्ल्यूएफ से मान्य अन्य टूर्नामेंट हैं। मेजबान सदस्य संघों और उपमहाद्वीपीय परिसंघों से मशविरे के बाद यह फैसला लिया गया। इस दौरान इंडोनेशिया ओपन 2020 भी स्थगित कर दिया गया। (प्रेट्र)

पंकज आडवाणी ने पांच लाख रुपये दान किए

नई दिल्ली : विश्व चैंपियन पंकज आडवाणी ने कोविड-19 महामारी से लड़ने के लिए सोमवार को पांच लाख रुपये का दान दिया। बिलियर्डस और स्नूकर में 23 बार के इस विश्व चैंपियन ने ट्वीट किया, 'मेरा छोटा सा योगदान। पीएम राहत कोष में पांच लाख रुपये का अनुदान दिया। जय हिंद।' (जेएनएन)

टी-20 विश्व कप तय समय पर

आयोजन समिति के प्रमुख हॉक्ले ने कहा, हम बेहतर स्थिति के लिए प्रयासरत

मेलबर्न, आइएएनएस : दुनिया भर में फैली कोरोना वायरस महामारी के बावजूद टी-20 क्रिकेट विश्व कप के आयोजनकर्ताओं को उम्मीद है कि ऑस्ट्रेलिया में इस साल अक्टूबर-नवंबरमें होने वाला यह टूर्नामेंट अपने तय समय पर होगा। कोरोना वायरस के कारण पूरी दुनिया में सभी खेल गतिविधियां रुकी हुई हैं। इस महामारी के कारण कई टूर्नामेंट या तो रद कर दिए गए हैं या फिर स्थगित कर दिए हैं। ऐसे में 18 अक्टूबर से 15 नवंबर तक होने वाले टी-20 विश्व कप पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं।

ऑस्ट्रेलिया में होने वाली ऑस्ट्रेलियाई फुटबॉल लीग (एएफएल) और नेशनल रग्बी लीग सत्र को कोरोना वायरस के कारण पहले ही निलंबित किया जा चुका है। इन लीग की तारीखें टी-20 विश्व कप की तारीखों से टकरा सकती हैं।

टी-20 विश्व कप आयोजन समिति के मुख्य कार्यकारी अधिकारी निक हॉक्ले ने कहा कि हम खुद को उस सर्वश्रेष्ठ स्थिति में लाना चाहते हैं, जहां से हम तय कार्यक्रम के अनुसार इस टूर्नामेंट का सफल आयोजन कर सकें। हमें उम्मीद है कि यह कार्यक्रम के अनुसार होगा। हम सभी पहलुओं से इस पर गौर कर रहे हैं। हम आयोजन समिति, आइसीसी और सभी सदस्यों के साथ बातचीत कर रहे हैं। अगर कुछ बदलाव होता है तो हम सबको इससे अवगत कराएंगे, लेकिन अभी के लिए केवल सात महीने ही बचे हैं और हमारे पास थोड़ा ही समय है। ऑस्ट्रेलिया में एएफल और रग्बी लीग अगर शुरू होती है तो यह सितंबर के बाद ही शुरू होगी।

हॉक्ले ने कहा कि खेल आयोजन के कई टूर्नामेंट के सत्र काफी लंबे हो गए हैं। हमारा अब भी मानना है कि टी-20 विश्व कप आयोजित होने के लिए मजबूत स्थिति में हैं क्योंकि यह अब अगले 10-20 साल बाद ही यहां दोबारा आने वाला है। टिकट बिक्री को लेकर हम पहले ही उत्साहित हैं।

आइसीसी पहले ही यह स्पष्ट कर चुकी है कि टी-20 विश्व कप के स्थगित होने का कोई सवाल ही नहीं है और यह अपने तय कार्यक्रम के अनुसार ही होगा।

वकार बोले, ऑस्ट्रेलिया में ही होना चाहिए विश्व कप : पाकिस्तान के गेंदबाजी कोच वकार यूनुस ने साफ किया कि टी-20 विश्व कप का आयोजन ऑस्ट्रेलिया में ही होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब भी मैं एक खिलाड़ी के रूप में या कोच के तौर पर पाकिस्तान से जुड़ा रहता हूं तो मेरी इच्छा किसी बड़े आइसीसी खिताब को जीतने की होती है। यही कारण है कि यह टी-20 विश्व कप मेरे और टीम के लिए इतना महत्वपूर्ण है। कोरोना के कारण अगर इस टूर्नामेंट में कुछ विलंब होता है तब भी इसका आयोजन ऑस्ट्रेलिया में ही होना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि अभी किसी भी तरह के क्रिकेट का आयोजन नहीं होना चाहिए। मुझे लगता है कि पांच छह महीने में जब दुनिया भर में चीजें नियंत्रित हो और जिंदगी सामान्य तरीके से पटरी पर आ जाए तब हम बिना दर्शकों के मैच के बारे में सोच सकते है। कुछ समय के बाद इस तरह के विकल्प के बारे में सोच सकते है लेकिन अभी या अगले महीने नहीं। यह स्थिति क्रिकेट गतिविधियों के लिए ठीक नहीं।

आइपीएल नहीं टी-20 विश्व कप प्राथमिकता : पैट कमिंस

मेलबर्न, प्रेट्र : कोविड-19 महामारी के कारण दुनिया भर के अन्य खेलों की तरह क्रिकेट टूर्नामेंटों पर भी अनिश्चितता के बादल मंडरा रहे हैं। ऐसे में ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज पैट कमिंस ने आइपीएल के बजाए टी-20 विश्व कप के आयोजन को अपनी प्राथमिकता में रखा है। कमिंस की दिली इच्छा है कि इस साल के आखिर में उनका देश इस टूर्नामेंट की मेजबानी करे। कमिंस आइपीएल में सबसे महंगे विदेशी खिलाड़ियों में शामिल हैं। पिछली नीलामी में कोलकाता नाइट राइडर्स ने उन्हें 15 .50 करोड़ रुपये की मोटी कीमत देकर खरीदा था। कमिंस ने कहा कि पिछले दो तीन वर्षों में हमने टी-20 विश्व कप को लेकर बात की है। विश्व कप (वनडे) 2015 मेरे करियर में विशेष महत्व रखता है, जबकि मैं फाइनल में भी नहीं खेला था। मैं चाहता हूं कि इस टूर्नामेंट का आयोजन हो। उन्होंने कहा कि यह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में इस साल का संभवत: सबसे बड़ा टूर्नामेंट है। मैं चाहता हूं कि सब कुछ सही हो जाए और इस टूर्नामेंट का आयोजन हो। अगर मैं सच में लालची होता तो मुझे आइपीएल का आयोजन भी अच्छा लगेगा।

पैट कमिंस • फाइल फोटो, एपी

लॉकडाउन में पिता बने प्रशिक्षक : विकास

कोरोना महामारी के चलते टोक्यो ओलंपिक इस वर्ष स्थगित हो चुका है और लॉकडाउन के कारण खिलाड़ी अपने घरों में बंद है। फिर भी कुछ ऐसे खिलाड़ी हैं जो अपने प्रशिक्षण की लय को टूटने नहीं दे रहे हैं और घर पर प्रशिक्षण जारी है। बहुत खिलाड़ियों को ओलंपिक स्थगित होने का दर्द है लेकिन देश के स्टार मुक्केबाज विकास कृष्ण यादव को दुनिया के सबसे बड़े खेले मेले के स्थगित होने का रत्ती भर भी अफसोस नहीं है। **विकास कृष्ण** ने **अनिल भारद्वाज** संग विस्तार से बातचीत की। पेश हैं मुख्य अंश- साक्षात्कार

● टोक्यो ओलंपिक स्थगित होने से पदक जीतने का सपना इस वर्ष पूरा नहीं होगा, अन्य खिलाड़ियों की तरह आपको दुख बहुत हुआ होगा?

-आज लोगों की जान बचाना जरूरी है। अगर आज व्यक्ति की जान चली गई, तो वापस नहीं आएगी लेकिन ओलंपिक आज नहीं, तो फिर आयोजन किया जा सकता है। इस वक्त ओलंपिक जरूरी नहीं था, दुनिया में लोगों को बचाना जरूरी था। ओलंपिक आयोजन टलने का कोई दुख नहीं है। खुशी हैं कि लोगों की जान बचाने में दुनिया लगी है। ओलंपिक के लिए हम फिर से मेहनत करेंगे और देश के लिए पदक जीत करे दिखाएंगे।

● ओलंपिक स्थगित होने से आपको एक वर्ष तैयारी के लिए मिल गया?

-हंसते हुए, आपको लगता है मेरी तैयारी नहीं थी। आप भूल रहे हैं कि मैंने टोक्यो का टिकट पंच के दम पर हासिल किया है और एशियन क्वालीफायर्स में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज खेल रहे थे। मैं पहले ही कहा है कि मुझे टोक्यो का आयोजन स्थगित होने से कोई लाभ व नुकसान नहीं हुआ। मुझे खुशी है कि यह लोगों की जान बचाने के लिए स्थगित किया गया और तैयारियों का अच्छे से मौका मिल गया।

● लॉकडाउन में प्रशिक्षण कैसे जारी रख पा रहे हो ?

-प्रशिक्षण बहुत ज्यादा नहीं हो पा रहा है लेकिन पिता ने प्रशिक्षण की जिम्मेदारी संभाल ली। हर रोज वही प्रशिक्षण करा रहे हैं। लॉकडाउन नहीं होता, तो पता ही नहीं चलता कि पिता भी प्रशिक्षण कराते हैं। यह एक नया अनुभव है। अच्छा लगाता है जब पिता पंच का अभ्यास कराते हैं।

● कुछ खिलाड़ियों ने राहत कोष में दान किया है और कुछ ने नहीं किया। आप भी उनमें एक हैं। दान नहीं करने का कारण?

-कौन कहता है, मैंने अपनी दस प्रतिशत तनख्वाह का राहत कोष में दिया है। हर रोज आस पास उन लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था कर रहा हूं जो दिहाड़ी श्रमिक हैं। मेरा मानना है कि लोगों को इलाज व भोजन कराना बहुत जरूरी है और मैंने भोजन कराने की जिम्मेदारी उठाई है। ऐसे लोगों को हर रोज भोजन कराया जा रहा है।

● खेल जीवन में वर्षों बाद परिवार वालों के साथ लंबे समय रहने को मिला है, कैसे बिता रहे हैं परिवार के साथ समय?

-हां, परिवार की शिकायत रहती थी कि उनके साथ रहने का समय नहीं मिल रहा है लेकिन अब उनके साथ रह रहा हूं और कई बार खेतों में पिता के साथ काम में सहयोग कर रहा हूं। अभी सरसो की कटाई चल रही थी और अब तो गेंहू की कटाई शुरू हो गई।

ओलंपिक की तैयारियों में जुटा हूं : सुशील

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : दिग्गज पहलवान सुशील कुमार उम्र के ऐसे पड़ाव पर हैं जहां ज्यादातर खिलाड़ी संन्यास की घोषणा कर देते हैं। वहीं, ओलंपिक में दो पदक जीतने वाले इस पहलवान ने कहा कि वह 'कौन क्या कह रहा' पर ध्यान देने की जगह टोक्यो में 2021 में होने वाले ओलंपिक की तैयारी कर रहे हैं। सुशील ने कहा कि लोगों को मेरे खेल के खत्म होने के बारे में लिखने की आदत है लेकिन इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।

सुशील हालांकि ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने के मामले में संघर्ष कर रहे थे लेकिन इस खेल के एक साल तक टलने के बाद एक बार फिर से पदक जीतने की उनकी उम्मीद परवान चढ़ रही है। सुशील अगले महीने 37 साल के हो जाएंगे और अगर वह इस साल जुलाई में प्रस्तावित ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करते तो यह उनके और टेनिस के दिग्गज लिएंडर पेस जैसे खिलाड़ियों का आखिरी टूर्नामेंट होता लेकिन इसके एक साल टलने से इन खिलाड़ियों की संन्यास योजना पर संशय बन गया है। सुशील ने हालांकि संन्यास की किसी योजना को खारिज कहा कि वह खेल जारी रखने के लिए रोज अभ्यास कर रहे हैं। उन्होने कहा कि मैं अभी कहीं नहीं जा रहा हूं। मुझे अधिक समय मिला है और अधिक समय का मतलब होता है बेहतर तैयारी। उन्होंने 2019 विश्व चैंपियनशिप में वापसी करते हुए कुछ दमखम दिखाया लेकिन वह शुरुआती दौर से ही बाहर हो गए थे।

उन्होंने कहा कि कुश्ती एक ऐसा खेल है कि अगर आप चोट-मुक्त रहते हैं, अच्छी तरह से अभ्यास करते हैं और लक्ष्य निर्धारित कर उस पर काम करते हैं तो आप उसे हासिल कर सकते हैं। मैं अभी रोजाना दो बार अभ्यास करता हूं। मैं मैट पर नहीं उतर रहा हूं लेकिन खुद को फिट रखने की कोशिश कर रहा है। भगवान ने चाहा तो ओलंपिक के लिए क्वालीफाई जरूर करूंगा।

लक्ष्य

- बोले, लोगों को मेरी दावेदारी खारिज करने की आदत
- लोग क्या कह रहे हैं इस पर नहीं पहलवान का ध्यान

श्रेयस अय्यर को जब मनोचिकित्सक के पास ले गए थे उनके पिता

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारतीय क्रिकेटर श्रेयस अय्यर के पिता संतोष अय्यर ने कहा कि जब उनके बेटे के प्रदर्शन में गिरावट आई तो उन्होंने मनोचिकित्सक से मदद ली जिससे इस क्रिकेटर को खेल में सुधार करने में मदद मिली। संतोष ने कहा कि अय्यर जब 16 साल के थे और उनके खेल में गिरावट आई थी तब उन्हें डांट से ज्यादा मनोचिकित्सक की सलाह की जरूरत महसूस हुई। जब वह चार साल का था तब वह घर में प्लास्टिक की गेंद से खेलता था। उस समय भी वह गेंद को बल्ले के बीचों बीच से मारता था। हम उसकी उस प्रतिभा को निखारने के लिए जो भी संभव था वह करने की कोशिश कर रहे थे। जब एक कोच ने कहा कि आपके बेटे के पास प्रतिभा की कोई कमी नहीं है लेकिन उसका ध्यान भटक रहा है। मैं चिंतित हो गया ।

उमरीगर-सलीम का जुझारूपन

आज ही के दिन 1964 में शुरू हुआ था विंडीज के खिलाफ यादगार टेस्ट

क्रिकेट में कुछ कहानियां बड़ी रोचक होती हैं। कई खिलाड़ी ऐसा प्रदर्शन कर जाते हैं जो उस खेल का रुख ही बदल देते हैं। भारतीय क्रिकेट के लिए वर्ष 2001 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ कोलकाता टेस्ट में वीवीएस लक्ष्मण और राहुल द्रविड़ ने भी कुछ ऐसा ही किया था। यह पारियां आज भी सर्वश्रेष्ठ पारियों में गिनी जाती हैं, लेकिन आज ही के दिन 1964 में एक ऐसा टेस्ट हुआ था, जिसमें भारत के दो खिलाड़ी पॉली उमरीगर व सलीम दुरानी यह कारनामा करने के बेहद करीब पहुंच गए थे।

दरअसल, 1964 में भारतीय टीम मंसूर अली खान पटौदी के नेतृत्व में कैरेबियाई दौरे पर थी। 0-3 से पिछड़ चुकी भारतीय टीम के पास लांस गिब्स, गैरी सोबर्स, वेस हॉल्स और चार्ली स्टेयर्स जैसे उम्दा गेंदबाजों का कोई जवाब नहीं था। फिर सात अप्रैल 1964 को चौथा टेस्ट शुरू हुआ। पहले बल्लेबाजी करते हुए विंडीज ने नौ विकेट पर 444 रनों पर पारी घोषित की। जवाब में भारतीय टीम 197 रन पर पवेलियन लौट फॉलोऑन के लिए मजबूर हो गई।

उमरीगर और सलीम का कमाल : फॉलोऑन खेलने उतरी भारतीय टीम को पहले सलीम दुरानी ने संभाला। दुरानी ने 104 रन की बेहतरीन पारी खेली, उसके बाद उमरीगर ने 248 गेंद में नाबाद 172 रन बनाए। उन्होंने बापू नादकरनी के साथ नौवें विकेट के लिए 93 रन की अहम साझेदारी की। भारतीय टीम दूसरी पारी में 422 रन बनाने में सफल रही। विंडीज को जीत के लिए 176 रनों का लक्ष्य मिला। विंडीज यह मैच सात विकेट से जीता, लेकिन यह टेस्ट उमरीगर-सलीम के जुझारूपन के लिए याद किया जाता है। प्रस्तुति : निखिल शर्मा

कश्मीरी फुटबॉलरों के लिए नया नहीं लॉकडाउन

नई दिल्ली, प्रेट्र : लॉकडाउन कश्मीर के फुटबॉलरों के लिए कोई नई बात नहीं है लेकिन कोरोना वायरस महामारी के कारण हुआ यह 21 दिन का बंद जरूर नया है और आम तौर पर बंद के दौरान कश्मीर में आक्रोश या विरोध देखने को मिलता है जबकि इस बार निराशा पसरी हुई है।

रीयल कश्मीर फुटबॉल क्लब के सदस्य मुहम्मद हमाद ने कहा, 'यह निश्चित तौर पर अतीत के अनुभवों से अलग है। हताशा हालांकि उसी तरह की है। लेकिन क्या हमारे पास कोई विकल्प है, कुछ नहीं। पूरी दुनिया के पास कोई विकल्प नहीं है। सभी को संयम से काम लेना होगा।' टीम के मिडफील्डर खालिद कय्यूम ने कहा, 'यह अतीत की तुलना में अलग तरह का बंद है। लेकिन कश्मीर के लोगों को पता है कि इस तरह के हालात का कैसे सामना करना है। लोग एहतियात बरत रहे हैं।

कोरोना के खतरे को देख लालू को निकालें जेल से : राबड़ी

राज्य ब्यूरो, पटना

लालटेन जलाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील का समर्थन करने वाली बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी ने कोरोना के बढ़ते खतरे के बीच राजद प्रमुख लालू प्रसाद को जेल से रिहा करने की गुजारिश की है। राबड़ी ने कहा है कि जब अन्य राज्यों में कैदियों को छोड़ा जा रहा है तो लालू प्रसाद को क्यों नहीं?

विदित हो कि कोरोना से बचाव के लिए सुप्रीम कोर्ट ने 17 मार्च को राज्यों को आदेश दिया था कि सात साल से कम सजा वाले बंदियों को पैरोल पर छोड़ा जा सकता है। चारा घोटाले के मामले में लालू अभी रांची जेल में बंद हैं। राबड़ी ने सोमवार को कहा कि राजद प्रमुख को जेल से रिहा करने के लिए वह झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से बात करेंगी। 72 साल के लालू को कई तरह की बीमारियां हैं। उनकी किडनी खराब है। शुगर भी अधिक रहती है। कोरोना वायरस के संक्रमण को देखते हुए जब दूसरे राज्यों में उम्रदराज और बीमार कैदियों को राहत दी जा रही है तो

लालू प्रसाद यादव। (फाइल)

लालू पर भी सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि लालू कोरोना से डरे नहीं हैं, लेकिन रांची में जहां उनका इलाज चल रहा है, वहां कोरोना संक्रमित एक मरीज का भी इलाज चल रहा है। ऐसे में बीमार लालू के संदर्भ में अतिरिक्त एहतियात बरतने की जरूरत है। वह 23 दिसंबर, 2017 से ही रांची जेल में बंद हैं। छह जनवरी 2018 को सीबीआइ की विशेष अदालत ने उन्हें चारा घोटाले के एक मामले में सात साल की सजा और जुर्माने की सजा सुनाई थी। इसके बाद से वह जेल में ही हैं। राबड़ी के मुताबिक इससे पहले भी इसी मामले में उनका लंबा समय जेल में बीता है।

भारत लड़ रहा कोरोना से जंग, घुसपैठ में जुटा है पाकिस्तान

गगन कोहली, राजौरी

पूरा विश्व कोरोना वायरस से एकजुट होकर जंग लड़ रहा है। इस मौके का फायदा उठाकर पाकिस्तान आतंकियों की घुसपैठ करवाने की बड़ी साजिश रच रहा है। पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान में भी कोरोना वायरस तेजी से फैल रहा है, लेकिन उसका पूरा ध्यान संक्रमण रोकने के बजाए सीमा पर गोलाबारूद जमा करने पर लगा है। हाल के दिनों में सीमा पर गोलाबारी में तेजी और घुसपैठ की नापाक कोशिशें इसी साजिश का हिस्सा हैं। वहीं, भारतीय सेना पाक की हर नापाक हरकत का मुंहतोड़ जवाब देने को तैयार बैठी है।

सूत्रों की माने तो पिछले कुछ दिनों में पाकिस्तानी सेना ने अपनी चौकियों में भारी मात्रा में गोलाबारूद जमा कर लिया है। हर एक पोस्ट पर दो-दो ट्रक अतिरिक्त गोलाबारूद भेजा जा रहा है, जबकि कुछ में भेजा जा चुका है। सूत्रों के अनुसार, पाक सेना ने अभी तक गोई, रेड कठार, लंजोट, तत्तापानी, नेकयाल, सिंबल गली आदि क्षेत्रों में गोलाबारूद पहुंच दिया है। अब इसे चौकियों तक पहुंचाया जा रहा है। माना जा रहा है कि जैसे ही सारा

● पाकिस्तानी सेना ने सीमा पर अपनी हर चौकी पर जमा किया दो-दो ट्रक अतिरिक्त गोला बारूद

गोलाबारूद चौकियों पर पहुंच जाएगा, पाक सेना एक साथ हर तरफ से भारी गोलाबारी शुरू कर देगी।

आइएसआइ ने बैठक का बनाया साजिश का खाका : सूत्रों की मानें तो पाक सेना व पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आइएसआइ के अधिकारियों ने हाल ही में एक बैठक की है। इसमें साफ कहा गया कि एक साथ हर चौकी से गोलाबारी की जाएगी और इसकी आड़ में ही घुसपैठ होगी। इतना ही नहीं, पिछले कई दिनों से काफी संख्या में प्रशिक्षित आतंकी भी पाक सेना की चौकियों में रुके हुए हैं और घुसपैठ के लिए आदेश का इंतजार कर रहे हैं।

कश्मीर में घटते आतंकियों की संख्या बढ़ाने पर जोर : सीमा पार बैठकों का दौर लगातार जारी है। आतंकी संगठनों के आका, पाक सेना व आइएसआइ के अधिकारी इस बात पर लगातार मंथन कर रहे हैं कि पिछले कुछ माह से घाटी में एक एक करके कई बड़े आतंकी मारे जा चुके हैं और कई गिरफ्तार हो चुके हैं। इससे घाटी में मौजूद आतंकियों का मनोबल गिर चुका है। पहले अनुच्छेद 370 हटने के बाद घुसपैठ के प्रयास पूरी तरह से सफल नहीं हो पाए। इसके बाद पहाड़ों पर बर्फ गिरने के कारण अधिकतर घुसपैठ के मार्ग बंद हो गए। अब बर्फ पिघलने का समय आ गया है और अगर इस बार भी आतंकियों की घुसपैठ न हुई तो कश्मीर में आतंकियों की कमर पूरी तरह टूट जाएगी। इसलिए सीमा को गोलाबारी से सुलगाकर घुसपैठ ही अंतिम विकल्प अपना जा रहा है।

पाकिस्तान ऐसा इसलिए कर रहा है क्योंकि वह जानता है कि भारत में इस समय लॉकडाउन चल रहा है। सरकार, सेना, प्रशासन सभी कोरोना वायरस पर काबू पाने में जुटे हुए हैं। ऐसे में सीमा पर भारी गोलाबारी कर अधिक से अधिक आतंकियों को भारतीय क्षेत्र में दाखिल करवाया जा सके। पाक सेना ने पिछले कुछ दिनों से गोलाबारी में तेजी भी लाई है। मौजूदा समय में जो गोलाबारी हो रही है उसकी आड़ में आतंकी भारतीय सीमा के करीब आकर लौट रहे हैं। इसे ट्रायल माना जा रहा है, ताकि किस क्षेत्र से सुरक्षित घुसपैठ की जा सकती है, इसका खाका तैयार किया जा सके।

पाकिस्तानी सेना ने पुंछ के चार सेक्टरों में की भारी गोलाबारी

जागरण संवाददाता, राजौरी

पाक सेना ने आतंकियों की घुसपैठ करवाने के लिए सोमवार शाम को एक साथ पुंछ जिले के चार सेक्टरों में भारी गोलाबारी शुरू कर दी। भारतीय सेना ने भी पाक सेना को मुंहतोड़ जवाब दिया। देर शाम तक जारी रही गोलाबारी से लोगों में दहशत है।

जानकारी के अनुसार, शाम करीब पांच बजे पाक सेना ने पुंछ के मनकोट, बालाकोट, शाहपुर किरनी व कस्बा सेक्टरों में एक साथ गोलाबारी शुरू कर दी। पाकिस्तान ने पहले सेना की अग्रिम चौकियों को निशाना बनाया, फिर रिहायशी क्षेत्रों पर गोले दागने शुरू कर दिए। इसके बाद भारतीय सेना ने भी पाक सेना को मुंहतोड़ जवाब देना शुरू कर दिया। बावजूद इसके पाक सेना ने गोलाबारी जारी रखी। पाक सेना पिछले कई दिनों से गोलाबारी की आड़ में आतंकियों को भारतीय क्षेत्र में दाखिल करवाने का प्रयास कर रही है, जिसे भारतीय सेना सफल नहीं होने दे रही है।

सेना ने बालाकोट सेक्टर में तीन मोर्टार निष्क्रिय बनाए : बालाकोट सेक्टर में सोमवार को सेना के जवानों ने नियंत्रण रेखा (एलओसी) के नजदीकी गांव से तीन जिंदा मोर्टार खोजकर उन्हें निष्क्रिय बनाया। मेंढर तहसील के कृष्णा घाटी व बालाकोट सेक्टर में सेना के जवानों ने दो दिन में एलओसी के नजदीक गांव से चार जिंदा मोर्टार को निष्क्रिय बनाया है। पाकिस्तानी सेना भारतीय सेना की चौकियों के अलावा रिहायशी क्षेत्रों में कई दिनों से घुसपैठ करवाने के लिए मोर्टार दाग रही है।

हाई कोर्ट ने कहा-सामान्य वर्ग में आवेदन करने पर नहीं मिलेगा एससी कोटे का लाभ

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़

पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट ने एक मामले में साफ कर दिया है कि अगर अनुसूचित जाति का कोई उम्मीदवार सामान्य श्रेणी के लिए आरक्षित सीट पर आवेदन करता है तो वह अनुसूचित जाति (एससी) के तौर पर मिलने वाले लाभ का हकदार नहीं है। चीफ जस्टिस पर आधारित बेंच ने यह फैसला एक व्यक्ति की अपील को खारिज करते हुए सुनाया।

इस मामले में याची ने एकल बेंच के उस आदेश को चुनौती दी थी, जिसमें उसकी याचिका को खारिज कर दिया गया था। याची ने पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट को बताया कि वह अनुसूचित जाति से संबंध रखता है। उसकी आयु

● अनुसूचित जाति श्रेणी के उम्मीदवार ने सामान्य वर्ग में आवेदन कर आयु में छूट का किया था दावा

47 साल है। उसने हरियाणा में सहायक के पद पर आवेदन किया था। हरियाणा सरकार के नियमों के अनुसार नौकरी के लिए अधिकतम आयु 42 साल है, जबकि अनुसूचित जनजाति के लिए 5 साल की छूट है। याची की दलील थी कि उसकी आयु 47 साल है।

उसने एससी वर्ग से होने का लाभ लेते हुए आवेदन किया था, लेकिन याची को इस आधार पर नियुक्ति देने से इनकार कर दिया गया और कहा गया कि वह इस पद के योग्य नहीं है। क्योंकि यह पद सामान्य श्रेणी के लिए आरक्षित है और उसकी आयु 47 साल हो चुकी है। एकल बेंच ने याची की दलील से असहमति जताते हुए सरकार के निर्णय को सही ठहराते हुए उसकी अपील खारिज कर दी थी। इसलिए अब डिविजन बेंच में अपील दायर की गई। डिविजन बेंच ने भी एकल बेंच के फैसले को सही ठहराते हुए कहा कि याची ने सामान्य श्रेणी के लिए आरक्षित सीट पर आवेदन किया है तो वह अनुसूचित जाति को मिलने वाले लाभ का हकदार नहीं है।

एकल बेंच ने कहा कि याची को आयु में तभी छूट मिल सकती थी, अगर वह अपने वर्ग के लिए आरक्षित सीट पर आवेदन करता, लेकिन याची ने सामान्य वर्ग के लिए आरक्षित पद पर आवेदन किया है। ऐसे में वह एससी वर्ग को मिलने वाले लाभ का हकदार नहीं है।

साइबर सेल कश्मीर ने तीन युवकों को पकड़ा

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर : सोशल मीडिया पर सक्रिय राष्ट्रविरोधी तत्वों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए पुलिस के साइबर सेल कश्मीर ने सोमवार को तीन युवकों को गिरफ्तार कर लिया। यह तीनों विभिन्न चैनलों पर उपलब्ध सुरक्षाबलों व आतंकियों के बीच मुठभेड़ों की पुरानी वीडियो फुटेज को अपने तरीके से पेश कर वादी में हालात बिगाड़ने की साजिश में जुटे मॉड्यूल का हिस्सा बताए जाते हैं। एसपी साइबर सेल कश्मीर ताहिर अशरफ ने बताया कि सोशल मीडिया पर हाल ही में कुलगाम में हुई मुठभेड़ को लेकर सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो और भड़काऊ खबरों के मामले में सात एफआइआर दर्ज की गई है। कुलगाम मुठभेड़ के बाद पथराव और दो नागरिकों की मौत की झूठी खबर का वीडियो वायरल करने के मामले में तीन युवकों को पकड़ा गया है।

पिजन पॉक्स बीमारी ने रांची में दी दस्तक

जागरण संवाददाता, रांची

कोरोना महामारी के बीच रांची में पिजन (कबूतर) पॉक्स नाम की बीमारी ने दस्तक दे दी है। इस बीमारी से रांची के अलग-अलग भागों में पिछले दो-तीन दिनों से बड़ी संख्या में कबूतर मरे मिले हैं। कई स्थानों पर बीमारी से पीड़ित कबूतर भी पाए गए हैं। कबूतरों से दूसरे पक्षियों में भी इस बीमारी के फैलने की आशंका जताई जा रही है। रांची के कुछ हिस्सों में पूर्व में बर्ड फ्लू फैलने की पुष्टि हो चुकी है। रांची पशु चिकित्सा महाविद्यालय के डीन डॉ. सुशील प्रसाद बताते हैं कि मौसम की स्थिति में बदलाव से कबूतरों में पिजन पॉक्स बीमारी हो सकती है। यह फाउल पॉक्स नाम के वायरस से होती है। ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि यह मनुष्यों को संक्रमित कर सकता है, इसलिए इससे सार्वजनिक स्वास्थ्य की चिंता नहीं है।

यह है बर्ड फ्लू

बर्ड फ्लू पिजन पॉक्स की तरह ही वायरस से होता है। मगर इन दोनों में काफी अंतर है। बर्ड फ्लू एवियन इंफ्लूएंजा (एच5एन1) वायरस से होता है। यह मुर्गा-मुर्गी सहित किसी भी पक्षी को हो सकता है। इसके बाद इस पक्षी के संपर्क में आने पर उससे किसी दूसरे मनुष्य में जानलेवा बीमारी का रूप ले सकता है। ये अपने प्राइमरी कैरियर से सेकेंडरी कैरियर में ज्यादा खतरनाक हो जाता है।

हालांकि अगर इससे एक पक्षी प्रभावित होता है तो उससे उस झुंड के सारे पक्षी संक्रमित हो जाते हैं। पक्षियों में यह बीमारी 7-10 दिनों तक और झुंड में आम तौर पर 5 से 7 सप्ताह तक रहता है।

यह है उपचार : डॉ एमके गुप्ता बताते हैं कि पौष्टिक पूरक तरल द्रव्य को एजिथ्रोमाइसिन या टेट्रासाइक्लिन को ड्रापर या पाइप के माध्यम से देकर उपचार किया जा सकता है। कबूतर के रहने वाले स्थान पर रात को मच्छर मारने की अगरबत्ती को जलाकर तथा रहने वाली जमीन में सुबह मच्छरदानी लगाकर बीमारी से बचाव किया जा सकता है। साथ ही रहने वाले स्थान को 1 प्रतिशत पोटैशियम हाइड्रोऑक्साइड, 2 प्रतिशत सोडियम हाइड्रोऑक्साइड और 5 प्रतिशत फिनाइल को मिलाकर कबूतर घर/बर्तन की सफाई करनी चाहिए।

यह है पिजन बॉक्स : रांची पशु चिकित्सा महाविद्यालय के पशु रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एमके गुप्ता का कहना है कि यह बीमारी एक खास वायरस के कारण होती है जो मच्छरों और गंदे पानी से फैलता है। इस बीमारी से पक्षी के चेहरे, मुंह और पैरों के चारों ओर पॉक्स के निशान बन जाते हैं। मुंह में चेचक (पॉक्स) दिखने से मृत्यु दर अधिक होगी।

40 हजार से अधिक सीआइएसएफ के जवानों को हवाई और मेट्रो यात्रा शुरू होने के बाद एक बार फिर लाखों लोगों के करीबी संपर्क में आना होगा। इसे देखते हुए सीआइएसएफ अपने जवानों के सुरक्षा उपकरणों को बढ़ाने की तैयारी कर रहा है।

कैलन मोदी जी एलान, सतर्क रहे के हिंदुस्तान...

जागरूकता ▶ बिहार के कटिहार जिले का द्वाशय गांव बता रहा कैसे लड़ी जा रही कोरोना के खिलाफ लड़ाई

अपना देस
खुशबू माटी की

- कोरोना का खौफ है तो कौतूहल भी, लॉकडाउन है, सो घरों के दरवाजे बंद या गलियों में इक्का-दुक्का लोग, लेकिन पूरी तरह सजग
- अपनी भाषा में समझा रहा कोरोना से चल रही लड़ाई का मर्म।

प्रकाश वत्स, कटिहार

कटिहार के भमरैली गांव में बांस की छांव में बैठे ग्रामीण। जागरण

कैलन मोदी जी एलान, सतर्क रहे के हिंदुस्तान...। गांव की गलियों में मस्ती में गीत गाते जा रहे मुक्तिनाथ यादव। कोसी का वह अतीत जैसे फिर से जी उठा हो, जिसे प्रसिद्ध आंचलिक कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु ने 'मैला आंचल' में पिरोया था।

त्रासदी तब भी थी, आज भी। लेकिन कोसी की मिट्टी की जिंदादिली देखते बनती है। यही तो है अपने देश की खासियत, जहां आम आदमी अपनी भाषा में वक्त की नजाकत को पढ़ना जानता है। बिहार के कटिहार जिले के डंडखोरा प्रखंड का द्वाशय गांव। कोरोना का खौफ है तो कौतूहल भी। लॉकडाउन है, सो घरों के दरवाजे बंद या गलियों में इक्का-दुक्का लोग। इसी मिट्टी से कभी रेणु ने 'मैला आंचल' के पात्र चुने थे। आजादी से पहले की बात। हैजा की त्रासदी, बाढ़ की विभीषिका, गरीबी। पढ़ने की कोशिश करें तो वे सारे पात्र और दृश्य जैसे आज फिर सामने हों। बिरंची से लेकर विश्वनाथ प्रसाद तक, जो कथा का नायक था। अभी के पंचायत प्रतिनिधि इसी रूप में। कभी पुलिस की गाड़ी आती है, कभी अफसर गुजर रहे। खिड़की से झांकते लोग साहस बटोरकर दलान तक आते हैं। इस बीच किसी की कड़क आवाज-तुम लोग समझते नहीं हो...। कदम फिर आंगन की ओर सरक जाते हैं।

द्वाशय गांव में शुक्रवार की दोपहर करीब 12 बजे कमंडल में दूध लिए मुक्तिनाथ पड़ोस की काकी के यहां जा रहे हैं। एकदम अलमस्त। गीत गाते हुए- कैलन मोदी जी एलान...। रेणु के मैला आंचल के पात्रों को याद करें, ढोलक पर ताल देता ढोलकिया-ढिक ढिक...। कैलन मोदी जी...ठीक वही दृश्य। गांव ने संदेश समझ लिया है। थोड़ी देर पहले पुलिस की गाड़ी गुजरी है।

जगनी देवी अपनी टुपिया (बकरी) की रास थामे ओट से ही आवाज लगाती है। बगल से परवतिया, सुगनी आदि भी जमा हो जाती हैं। महिलाओं की चौपाल एक-दूसरे से दूरी बनाकर खड़ी है। पूरी तरह सजग। विषय कोरोना ही है। जगनी के कानों में मगरू की आवाज पड़ते ही वह भागती है। चौपाल खत्म। करीब 90 साल के वयोवृद्ध नारायण दरवाजे के पास जमे हैं।

शारीरिक दूरी बनाए कई युवक उन्हें घेरकर बैठे हैं। बूढ़ी आंखें बीते दौर में झांक रही हैं। युवक उत्सुकता से सुन रहे हैं कि किस तरह हैजा फैला था। ऐसा ही माहौल था। गांव के गांव खाली हो गए थे। सबने मिलकर मोर्चा लिया था। कोरोना को भी देख लेंगे। ठहाके लगते हैं। खैनी भी रगड़ी जा रही। गांव की मिट्टी कोरोना को भगाने के उपाय पर कुछ ऐसे ही मंथन कर रही है।

इस गांव में बच्चे हों या बूढ़े, सभी ने इस बात को समझ लिया है कि एकदूसरे से उचित शारीरिक दूरी बनाकर रखना है, एकदूसरे की मदद करना है और खुद को व औरों को कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए सजग करते चलना है।

रिटायरमेंट नजदीक हो तो भी वेतन से निर्धारित होगा मुआवजा

दयानंद शर्मा, चंडीगढ़

बीमा कंपनी द्वारा मृतक व्यक्ति की रिटायरमेंट नजदीक होने के चलते आधा क्लेम वेतन के अनुसार तथा आधा क्लेम पेंशन के अनुसार निर्धारित करने की अपील पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट ने खारिज कर दी। हाई कोर्ट ने याचिका खारिज करते हुए कहा कि भले ही मृतक की रिटायरमेंट नजदीक थी, लेकिन स्प्लिट मल्टीप्लायर इस्तेमाल कर क्लेम को दो हिस्सों में निर्धारित नहीं किया जा सकता। कंपनी को क्लेम वेतन के अनुसार ही देना होगा।

इस मामले में परिजनों ने कोर्ट को बताया कि मृतक को कार ने टक्कर मार दी जिससे उसकी मौके पर मौत हो गई। इसके बाद मुआवजे के लिए मोटर एक्सीडेंट क्लेम ट्रिब्यूनल में याचिका दाखिल की गई। याचिका पर ट्रिब्यूनल ने लगभग 30 लाख रुपये का क्लेम निर्धारित किया।

इसके खिलाफ बीमा कंपनी ने हाई कोर्ट में याचिका दाखिल कर कहा कि जो व्यक्ति मर गया, वह जल्द ही रिटायर होने वाला था। ऐसे में उसकी रिटायरमेंट तक उसके वेतन के अनुसार तथा रिटायरमेंट के बाद उसकी बनने वाली पेंशन के आधार पर मुआवजा दिया जाए। इस पर हाई कोर्ट ने याचिका को खारिज करते हुए कहा कि एक व्यक्ति के जीवन का मूल्य पैसे से नहीं लगाया जा सकता।

हालांकि व्यक्ति के उसके परिवार के प्रति दायित्वों को ध्यान में रखना जरूरी है। घर का मुखिया रिटायरमेंट के बाद भी मुखिया ही रहता है और उसकी जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। रिटायरमेंट के बाद व्यक्ति के पास अनुभव भी होता है और री-इंप्लायमेंट का मौका भी। ऐसे में स्प्लिट मल्टीप्लायर का इस्तेमाल करने की दलील नहीं मानी जा सकती है। रिटायरमेंट होने से व्यक्ति की परिवार के प्रति जिम्मेदारी समाप्त नहीं होती बल्कि वह अपने परिवार के लिए और अधिक करने में सक्षम होता है। ऐसे में हाई कोर्ट ने ट्रिब्यूनल का फैसला बरकरार रखते हुए बीमा कंपनी की याचिका खारिज कर दी।

बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार...

रवि धवन, पानीपत

जागरण विशेष

- बजरंग बली देंगे मानसिक बल, कल हनुमान जयंती पर देश-विदेश में हनुमान चालीसा का पाठ
- मंदिरों में नहीं बल्कि घरों में ही होंगे अनुष्ठान, चालीसा का पाठ
- पानीपत से शुरू हुई विशेष मुहिम में जुड़े देश-विदेश के हजारों श्रद्धालु

दिल्ली स्थित हनुमान प्रतिमा। फाइल फोटो

किसी भी युद्ध को जीतने के लिए शारीरिक बल से कहीं अधिक आत्मबल की आवश्यकता होती है। कोरोना से युद्ध में हमारा आत्मबल मजबूत रहेगा तो जीत तय है। सो, आत्मबल को मजबूती देने लिए पानीपत से शुरू हुआ हनुमान चालीसा पाठ का अभियान, देश के विभिन्न राज्यों से होते हुए ऑस्ट्रेलिया और लंदन तक पहुंच गया है।

कल हनुमान जयंती पर घर-घर में हनुमान चालीसा का पाठ कर संकटमोचन से प्रार्थना की जाएगी कि हे पवनपुत्र कोरोना संकट से मुक्ति दिलाएं। पानीपत से चली इस मुहिम में देश-विदेश के हजारों लोग जुड़ चुके हैं। यहां पहले से ही कुछ हनुमान भक्त मिलकर रोजाना हनुमान चालीसा का पाठ करते थे। कोरोना संकट और लॉकडाउन के बाद इसे टेलीकॉन्फ्रेंस के माध्यम से मिलकर करने लगे। इस ग्रुप का विस्तार एक-दूसरे से होते हुए देश-विदेश में बसे जान-पहचान के लोगों तक होता रहा। फिर सभी ने ठाना कि आठ अप्रैल को हनुमान जयंती पर 108 बार हनुमान चालीसा का पाठ कर कोरोना संकट से मुक्ति की प्रार्थना की जाएगी।

विदेश में बसे भारतीय भी वाट्सएप ग्रुप्स के माध्यम से इस अभियान को गति देने में जुट गए। लंदन में डॉ. खुराना, सिडनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर नीतिश जैन के साथ सैकड़ों भारतीय हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं। जनता कर्फ्यू के दिन भी सामूहिक पाठ किया गया था, यह प्रयोग सफल रहा।

लॉकडाउन हुआ तो सभी ने रोजाना ही घर पर बैठकर चालीसा पाठ करने की ठान ली। रोजाना अलग-अलग संगठनों, अलग कॉलोनियों को जोड़कर घर पर रहने का आह्वान करते हुए पाठ किया जाने लगा। पानीपत के हनुमान भक्तों ने तय कर रखा था कि हनुमान जयंती पर रथयात्रा निकालेंगे, लेकिन लॉकडाउन के चलते इसे रद करना पड़ा। तय किया गया कि इसी दिन सभी घरों में सुबह से शाम तक हनुमान चालीसा का पाठ करेंगे। जब ये संदेश वायरल हुआ तो ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, कनाडा और अमेरिका में बसे भारतीयों तक भी पहुंच गया। उन सभी ने भी अपने आसपास यही मुहिम शुरू करने की ठान ली। इसका असर ये हुआ कि वहां भी वाट्सएप ग्रुप बन गए और अब सभी हनुमान चालीसा का पाठ कर आत्मिक और मानसिक बल हासिल कर कोरोना को पराजित करने का संकल्प लेंगे।

पानीपत के वरिष्ठ मनोचिकित्सक सुदेश खुराना से जब हनुमान चालीसा के पाठ के प्रभाव पर चर्चा की गई तो उन्होंने पहला वाक्य यही कहा- मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। यह विज्ञान सम्मत है कि इस तरह के जितने भी पाठ, मंत्र हैं, वे मानसिक मजबूती देते हैं। हनुमान जी की छवि बजरंग बली की है। इसलिए हनुमान चालीसा के पाठ से व्यक्ति के मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। वैसे भी अपने यहां आस्था की बात करें तो जब भी व्यक्ति भयाक्रांत होता है, वह हनुमान जी का ही स्मरण करता है। मानसिक रूप से मजबूत रहें, इसीलिए अखाड़ों में बजरंग बली की मूर्ति होती है। मुझे उम्मीद है कि इससे लोगों में सकारात्मकता का संचार अवश्य होगा।

इस अभियान की परिकल्पना करने वाले पानीपत निवासी विकास गोयल और हरीश बंसल हैं। वह बताते हैं कि यह अभियान, पंजाब, महाराष्ट्र, बिहार, उत्तर प्रदेश के साथ ही विदेश तक पहुंच चुका है। सिडनी में रह रहे सॉफ्टवेयर इंजीनियर नीतिश जैन ने दैनिक जागरण को फोन पर बताया कि वह और कुछ अन्य भारतीय परिवार वहां घर पर प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं।

लंदन में रहने वाले खुराना परिवार के मुखिया डॉ. देवेंद्र ने बताया कि यहां भी लॉकडाउन है। घर पर दिन बिताना बड़ी चुनौती थी। अब दिन में दो बार हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं। बच्चे साथ बैठते हैं। अब उनकी रूचि बढ़ रही है। बच्चों ने भी वाट्सएप और फेसबुक से आसपास की कॉलोनी में रह रहे भारतीयों को हनुमान चालीसा पाठ करने के लिए प्रेरित करना शुरू कर दिया। यहां तक कि विदेशी मित्र भी इसमें रुचि ले रहे हैं।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

प्रकृति ले रही सांस, लौटा मौसम चक्र दुरुस्त होने का विश्वास

लॉकडाउन के फायदे ▶ ग्लेशियरों का पिघलना कम होगा, हिमालय के बढ़ते तापमान में भी आएगी कमी

कोरोना के चलते मानवीय व औद्योगिक गतिविधियां थमने से पर्यावरण को बड़ी राहत

रमेश चंद्रा, नैनीताल

कोरोना इस समय विश्व के लिए स्याह पहलू है तो प्रकृति के लिहाज से लॉकडाउन इसका उजला पक्ष। औद्योगिक एवं मानवीय गतिविधियां थमने से ऐसा लग रहा है मानो प्रकृति को सांस लेने की छूट मिल गई हो। प्रकृति खुद को निखार व संवार रही है। इसी के चलते वैज्ञानिक मान रहे हैं कि लगातार बिगड़ता जा रहा मौसम चक्र भी पटरी पर लौट आएगा। मौसम की दुश्वारियों पर भी ब्रेक लगेगा। कार्बन उत्सर्जन कम होने से हिमालय के बढ़ते तापमान में कमी आएगी। जो ग्लेशियरों के पिघलने की रफ्तार को थामने वाला साबित होगा।

डॉक्टर नरेंद्र सिंह। जागरण आर्काइव

एरीज के वरिष्ठ वायुमंडलीय वैज्ञानिक डॉ. नरेंद्र सिंह के अनुसार लॉकडाउन कोरोना वायरस की रोकथाम के लिहाज से जरूरी तो है ही, लेकिन प्रकृति के सांस लेने के लिहाज से यह वरदान से कम नहीं है। इससे मौसम चक्र को अपने प्राकृतिक अवस्था में लौटने में मदद मिलेगी। कार्बन उत्सर्जन कम रहने से हिमालय के तापमान में होने वाली बढ़ोतरी में अंकुश लगेगा। साथ ही ग्लेशियर भी कम पिघलेंगे।

लॉकडाउन में मानवीय गतिविधियों के अलावा उद्योग व वाहनों के प्रयोग से कार्बन उत्सर्जन वाली समस्त गतिविधियां थमी हैं। इससे पर्यावरण में गजब का सकारात्मक बदलाव आया है। वैज्ञानिकों का मानना है कि इससे आने वाले दिनों में मौसम पर अनुकूल असर पड़ेगा। असमय बाढ़, सूखा, प्राकृतिक आपदाएं रुकेंगी और मौसम काफी हद तक अपने पुराने स्वरूप में लौट आएगा। पर्यावरण के साथ मानवीय छेड़छाड़ से पिछले करीब तीन दशकों में मौसम चक्र में भारी बदलाव आया है। एक्स्ट्रीम वेदर जैसी परिस्थितियों से लगातार बारिश या सूखे जैसी स्थिति उत्पन्न हो रही थी। अब कभी देरी तो कभी जल्दी बदल रहे मौसम चक्र में बदलाव दिखेगा। हिमालयी क्षेत्र में कार्बन की बढ़ती मात्रा में इन दिनों काफी कमी आ गई है। अनुमान है कि यह मात्रा एक माइक्रोग्राम से नीचे पहुंच रही है। यह हिमालय के बढ़ते तापमान और तेजी से पिघलते ग्लेशियरों की रफ्तार में कमी का सुखद संकेत है।

नैनीताल में पीएम 2.5 की मात्रा पहुंची 20 के स्तर पर

आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) नैनीताल से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार नैनीताल क्षेत्र में पार्टिकुलेटेड मैटर यानी पीएम 2.5 की मात्रा 15 से 20 के लेवल पर आ गई है। पिछले साल अप्रैल पहले सप्ताह में यह लेवल 35 से 40 के बीच था। गर्मियों में यह स्तर 50 तक पहुंच जाता था।

डॉक्टर व नर्स से दुर्व्यवहार पर दो के खिलाफ मुकदमा

नईदुनिया, अंबिकापुर : छत्तीसगढ़ के सूरजपुर जिला स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भटगांव में डॉक्टर व स्टाफ नर्स के साथ दुर्व्यवहार करने पर दो लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया है।

जानकारी के अनुसार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भटगांव में जीरजोधन नामक व्यक्ति को उपचार के लिए लाया गया था। डॉ. रतन प्रसाद मिंज व स्टाफ नर्स निशा आदित्य उसके उपचार कर रहे थे। इसी दौरान ग्राम बुंदिया के रमेश गुप्ता व विनोद गुप्ता अस्पताल पहुंचे। मरीज के उपचार में लापरवाही का आरोप लगाकर दोनों ने चिकित्सक व नर्स से दुर्व्यवहार किया। खुद को सांसद प्रतिनिधि और ऊंची पहुंच तथा प्रभाव वाला व्यक्ति होने का हवाला देकर डॉक्टर और नर्स को देख लेने की धमकी भी दी।

सुरजपुर के चिकित्साधिकारी डॉ. रतन प्रसाद ने बताया कि कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव और नियंत्रण के लिए स्वास्थ्य अमला 24 घंटे मुस्तैदी से ड्यूटी कर रहा है। इसके बावजूद यहां के लोग इस तरह का बर्ताव कर रहे हैं। इससे स्वास्थ्य कर्मियों की नाराजगी बढ़ने लगी तो दोनों आरोपितों के खिलाफ सरकारी कार्य में बाधा डालने की धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया गया है।

लॉकडाउन में फंसे परिवार को डॉक्टर ने 270 किमी कार चलाकर घर पहुंचाया

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

लॉकडाउन के नायक

- कोलकाता के एसएसकेएम अस्पताल में तैनात हैं चिकित्सक
- रात को 9 बजे ही शुरू कर दिया सफर, रात 3 बजे पहुंचे परिवार को लेकर

राजेश बोले, डॉक्टर हमारे लिए भगवान की तरह

डॉक्टर ने बताया, घर पहुंचने के बाद एजेंला अपनी बहन से मिलकर काफी खुश थी और उसके चेहरे पर मुस्कुराहट देखकर मुझे संतुष्टि मिली। वापस आकर डॉक्टर ने अगले दिन सुबह 10 बजे अपनी ड्यूटी शुरू की। एजेंला के पिता राजेश ने कहा कि मैं डॉक्टर का हमेशा ऋणी रहूंगा, वह हमारे लिए भगवान की तरह हैं।

कोरोना वायरस से संक्रमित रोगियों को स्वस्थ्य करने में देशभर के चिकित्सक दिन-रात एक किए हुए हैं। इनमें कुछ ऐसे भी हैं जो सिर्फ अस्पताल में ही नहीं, बाहर भी लोगों की मदद में जुटे हैं। एक ऐसा ही चिकित्सक कोलकाता में हैं, जिन्होंने लॉकडाउन में आठ साल की बच्ची को 270 किलोमीटर कार ड्राइव कर उसे घर पहुंचाया। यह चिकित्सक कोलकाता के एसएसकेएम अस्पताल में कार्यरत हैं। बच्ची और उसके परिवार का घर कोलकाता से 270 किलोमीटर दूर सुलुंगा में था। यही नहीं, डॉक्टर ने घर छोड़ने के बाद फिर 270 किलोमीटर कार चलाई और अस्पताल में ड्यूटी शुरू की। डॉक्टर ने जब सोशल मीडिया पर पूरी कहानी बताई तो लोगों ने उन्हें इस नेक काम के लिए बधाई दी और कहा कि सभी डॉक्टरों को इससे सीख लेनी चाहिए।

25 मार्च को अस्पताल से निकलते समय चिकित्सक बबलू सरदार ने एक दिहाड़ी मजदूर राजेश के परिवार को एंबुलेंस ड्राइवर से घर छोड़ने के लिए विनती करते देखा। ड्राइवर घर पहुंचाने के लिए 13 से 14 हजार रुपये की मांग कर रहा था, जो कि उनके लिए देना असंभव था। राजेश बीरभूम में मजदूरी का कार्य करते हैं। परिवार को परेशान होते देख चिकित्सक सरदार खुद को रोक नहीं पाए। राजेश अपनी 8 साल की बच्ची एजेंला के इलाज के लिए आए थे। उसे आंत से जुड़ी समस्या थी। वह 23 मार्च को ही अस्पताल से डिस्चार्ज हुई थी।

हालांकि लॉकडाउन के चलते परिवार घर जाने में असमर्थ था और अस्पताल में ही 48 घंटे तक रुका रहा। डॉक्टर ने बताया, उस समय काफी रात हो चुकी थी लेकिन फिर भी परिवार घर नहीं जा पा रहा था। इसलिए मैंने उनकी मदद करने का फैसला लिया। मैं समझ सकता था कि परिवार आर्थिक तंगी के चलते घर जाने में समर्थ नहीं था। उनके घर में एक और छोटी बच्ची अकेली थी जिसकी चिंता उनके खाए जा रही थी।

डॉक्टर ने बताया कि अगले दिन उनकी सुबह 10 बजे से ड्यूटी थी, लेकिन उन्होंने उन्होंने डिनर पर जाने के बजाय परिवार को घर तक पहुंचाने का फैसला किया। सरदार ने कहा, हमने एसएसकेएम अस्पताल से 9 बजे सफर शुरू किया और करीब रात 3 बजे 270 किमी दूर सुलुंगा पहुंचा। डॉक्टर ने परिवार को झारखंड सीमा के पास स्थित उनके गांव तक पहुंचाया।

चिड़ियाघरों और अभयारण्यों को किया गया अलर्ट

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना के संक्रमण का खतरा अब तक सिर्फ मानव जाति पर ही था, लेकिन अब इससे वन्यजीवों के भी संक्रमित होने का खतरा मंडराने लगा है। खासकर अमेरिका के चिड़ियाघर में एक बाघिन के कोरोना से संक्रमित पाए जाने के बाद पूरी दुनिया में इसे लेकर खलबली मच गई है। इस बीच केंद्र सरकार ने देशभर के सभी चिड़ियाघरों और अभयारण्यों को इसे लेकर अलर्ट किया है। साथ ही कहा है कि वह पशु चिकित्सकों की मदद से वन्यजीवों के स्वास्थ्य पर लगातार निगाह रखे। वहीं आम लोगों की आवाजाही को भी पूर्ण रूप से प्रतिबंधित करने के निर्देश दिए है।

वन एवं पर्यावरण मंत्रालय और सेंट्रल जू अथारिटी ने अलग-अलग जारी निर्देशों में सभी राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों को इसे लेकर विशेष सावधानी बरतने को कहा है। मंत्रालय ने अपनी एडवाइजरी में सभी चिड़ियाघरों और अभयारण्य प्रबंधनों को जानवरों को चौबीसों घंटे सीसीटीवी की निगरानी में रखने को कहा है। साथ ही कहा है कि जो लोग उनकी देखरेख में लगे हैं, उनका लगातार स्वास्थ्य परीक्षण भी कराया जाए। वे जानवरों के पास चिकित्सकों द्वारा उपयोग में लाया जाने वाला सुरक्षा किट (पीपीई) पहनकर ही जाएं। इसके साथ ही हर दिन जानवरों को ताजा खाना परोसने के भी निर्देश दिए गए हैं।

मंत्रालय ने इसके साथ ही टास्क फोर्स गठित करने का भी सुझाव दिया है, जिसमें स्थानीय पशु चिकित्सक को अनिवार्य रूप से रखने की सिफारिश की गई है। वहीं सेंट्रल जू अथारिटी ने सभी टाइगर रिजर्व को खास एहतियात रखने को कहा है।

27 मार्च को दिखे थे लक्षण

प्रथम पृष्ठ से आगे

27 मार्च को बीमारी के लक्षण दिखने के बाद रक्त के नमूने लेने के साथ ही उसका एक्स-रे और अल्ट्रासाउंड भी कराया गया था। कैले ने कहा कि जानवरों में संक्रमण के बारे में बेहतर जानकारी हासिल करने के लिए वह नादिया की रिपोर्ट अन्य विशेषज्ञों के साथ भी साझा करेंगे। इससे पहले बेल्जियम में एक बिल्ली और हांगकांग के दो कुत्तों में भी कोरोना का संक्रमण देखा गया था। इन सभी जानवरों में संक्रमण उनके मालिकों से आया था। अमेरिका के कृषि विभाग ने कहा है कि जब तक वायरस के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं मिल जाती तब तक वायरस संक्रमित लोग अपने पालतू जानवरों के सीमित संपर्क में रहें।

खतरे में जंगल

तोता, चिड़िया और अन्य पक्षी पकड़ कर खा रहे लोग, जंगल में 70 स्थानों पर लग चुकी है दस दिनों में आग

दहक रहा झारखंड का सारंडा जंगल

सुधीर पांडेय, प. सिंहभूम

लॉकडाउन में झारखंड का सारंडा जंगल दहक रहा है। जंगल में 10 दिनों में अलग-अलग 70 जगहों पर आग लग चुकी है। लॉकडाउन के कारण ग्रामीण रोजगार के लिए नहीं निकल पा रहे। उन तक सही से राशन पहुंच भी नहीं रहा। इस कारण जंगल में रहने वाले गांवों के युवा टोली बनाकर सारंडा जंगल में घुसकर पशु-पक्षियों का शिकार कर रहे हैं। विशेष रूप से पक्षियों को पकड़ने के लिए युवक जंगल में आग लगा दे रहे हैं। आग लगने से उठने वाले धुएं से पक्षी बेबस होकर निढाल हो जाते हैं। इसके बाद शिकारी युवक इन पक्षियों को आसानी से पकड़कर भोजन के रूप में खा रहे हैं।

सारंडा डीएफओ रजनीश कुमार कहते हैं कि युवकों को जंगल में आग नहीं लगाने के लिए जागरूक किया जा रहा है, मगर उनका कहना है कि कोरोना वायरस के डर से मुर्गा-मछली कोई बेच नहीं रहा। गाड़ियों के बंद रहने से गांव से बाहर निकल नहीं सकते। काम-धाम सब बंद है। ऐसे में जंगल में जाकर शिकार कर पेट की भूख मिटा रहे हैं। डीएफओ ने बताया कि 28 मार्च से पहले सारंडा जंगल में आग लगने की कभी-कभार ही सूचना मिलती थी। 28 मार्च के बाद से अब तक करीब 70 जगह आग लग चुकी है। 4 अप्रैल को एक ही दिन में 30 जगह आग लगने की सूचना हम लोगों को मिली थी जबकि 5 अप्रैल को 7 जगह आग लगाई गई। वहीं छह अप्रैल को 24 जगहों पर आग लगाए जाने की घटना हुई है। इतनी ज्यादा संख्या में जंगल में पहली बार आग लगी है। लोग पक्षियों को पकड़ने के लिए पहले पेड़ के नीचे आग लगा देते हैं। धुएं के कारण पक्षी चुपचाप होकर अपने घोंसले में छिपे रहते हैं। शिकारी युवक पेड़ पर चढ़कर घोंसले से अंडा अथवा पक्षी को निकाल लेते हैं। रविवार को कुछ ग्रामीणों ने जंगली तोते पकड़कर खाये हैं। इस साल अभी तक सारंडा में 70-80 हेक्टेयर में छोटे पौधे जलकर खाक हो चुके हैं। महुआ चुनने के कारण भी ग्रामीण जंगल में आग लगा रहे हैं। यहां जंगल में साल के पेड़ हैं जिनके सूखे पत्तों में बहुत तेजी से आग फैलती है।

> लॉक डाउन की अवधि में आग रोकने के निर्देश दिए गए हैं। सारंडा में जनजातीय लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था स्थानीय डीएफओ स्तर से की जा रही है। सेंचुरी में खानेपीने की दिक्कत न हो, इसका ध्यान जिला प्रशासन के स्तर से तो रखा ही जा रहा है, वन विभाग भी अपने स्तर से प्रयास कर रहा है।
> - शशि नंदकुलियार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक

सैटेलाइट से हो रही निगरानी : रजनीश कुमार ने बताया कि हम लोग सैटेलाइट के माध्यम से पूरे जंगल की निगरानी करते हैं। कहीं भी आग लगने पर तुरंत सैटेलाइट से मैसेज व लोकेशन आ जाती है। इसके अलावा 50-80 वन मित्र भी बनाये गये हैं। ये भी आग लगने की तुरंत खबर कर रहे हैं। हमारे त्वरित प्रतिक्रिया दल (क्यूआरटी) के सदस्य 24 घंटे लगातार काम पर लगे हैं। रेंज कार्यालय से 40 किलोमीटर दूर जंगल में जान-जोखिम में डाल ये लोग आग को काबू में कर जंगल बचा रहे हैं लेकिन जिस तेजी से आग लगने की घटनाएं बढ़ रही हैं वो चिंता का विषय है।

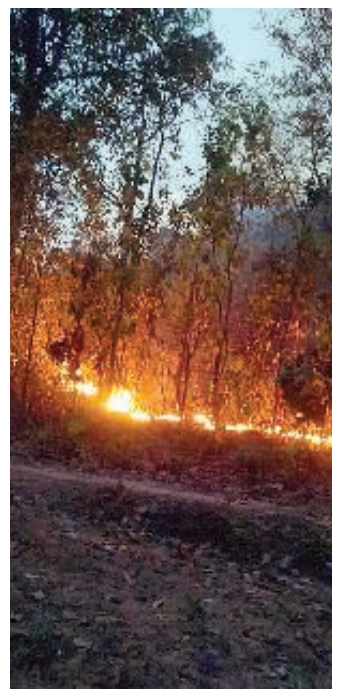

झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले में जामकुंडिया के पास सारंडा जंगल में लगाई गई आग। जागरण

मौसम विशेष

दिल्ली, पंजाब, उत्तरी राजस्थान, हरियाणा में अनेक स्थानों पर गरज और तेज हवाओं के साथ वर्षा संभव है। दक्षिण राजस्थान में गरजने वाले बादल बन सकते है तथा दिन काफी गर्म बना रहेगा। जम्मू-कश्मीर व हिमाचल प्रदेश में कुछ स्थानों पर गरज के साथ वर्षा व बर्फबारी संभव है।

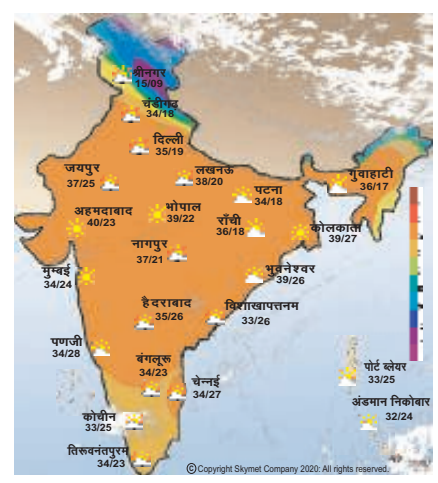

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	32/20/आंबा अहमदाबाद	39/16/व	
कोलकाता	33/23/आंबा बड़ोदा	38/16/सा	
चेन्नई	33/23/आंबा नागपुर	38/20/व	
हैदराबाद	36/22/सा इन्दौर	34/18/आंबा	
बंगलूरु	34/21/आंबा रांची	31/16/व	
त्रिवेन्द्रम	35/25/आंबा पटना	33/19/आंबा	
गुवाहाटी	34/21/आंबा जमशेदपुर	33/20/व	
गंगटोक	16/10/आंबा पुणे	35/18/व	

पहली बार शुरू हुई माचिस की बिक्री

आज ही के दिन 1827 में माचिस का आविष्कार करने वाले ब्रिटेन के रसायनशास्त्री जॉन वॉकर ने पहली बार माचिस की बिक्री शुरू की। पचास तीलियों वाले माचिस के डिब्बे में एक सैंड पेपर मौजूद था। जिस पर रगड़ने से रासायनिक मिश्रण लगी तीली जल उठती थी।

जिमी कार्टर ने न्यूट्रॉन बम बनाने पर रोक लगाई

आज ही के दिन 1978 में अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने न्यूट्रॉन बम बनाने पर रोक लगा दी। यह थर्मोन्यूक्लियर हथियार विकिरण द्वारा लोगों को मारने में सक्षम थे। इन्हें एंटी बैलेस्टिक मिसाइल पर तैनात किया गया था।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना हुई

आज ही 1948 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की स्थापना हुई। इस दिन को विश्व स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसके 194 देश सदस्य हैं। स्थापना के समय 61 देशों ने इसके संविधान पर हस्ताक्षर किए। पहली बैठक 24 जुलाई 1948 को हुई। दुनिया में छह क्षेत्रीय कार्यालय और करीब 150 ऑफिस हैं। इसमें करीब 7000 लोग कार्यरत हैं। यह संयुक्त राष्ट्र संघ की सहयोगी शाखा के रूप में कार्य करता है। इसका मुख्यालय स्विट्जरलैंड के जेनेवा में है। डब्ल्यूएचओ स्वास्थ्य को बढ़ावा देने, दुनिया को सुरक्षित रखने और कमजोर लोगों की सेवा करने के लिए काम करता है। इथोपिया के डॉ टेडरोस अधानोम गेब्रियेसस इसके महानिदेशक हैं।

इधर-उधर की

वीडियो कांफ्रेंसिंग से उकता गए हैं लोग

लंदन, एजेंसी : वर्क फ्रॉम होम के दौरान काम करते हुए कई लोगों को ऑफिस की वीडियो कांफ्रेंसिंग में भाग लेना होता है, लेकिन कई लोग इससे परेशान हैं। ऐसे लोगों के लिए डैन क्राउन ने एक वीडियो बनाया है, जिसे ट्विटर पर अब तक करीब चालीस लाख से भी ज्यादा बार देखा जा चुका है। इसमें वीडियो कांफ्रेंसिंग के दौरान एक शख्स अपनी कार्य योजना के बारे में बात कर रहा है, लेकिन तभी दरवाजा खुलता है और वही शख्स दरवाजे पर होता है। उसे जब यह अहसास होता है तो वह वहां से चला जाता है। एक शख्स ने इसे भ्रम, दूसरे ने मॉडर्न आर्ट बताया है। एक ने लिखा कि क्वारंटाइन से बाहर आने का सबसे अच्छा तरीका यही है। इसे साढ़े चार लाख लोगों ने पसंद किया है। वीडियो पर मिली प्रतिक्रिया को देखकर लगता है कि लोग ऐसे कामों से कितना बचना चाहते हैं।

मास्क पर एक हफ्ते सक्रिय रहता है वायरस

अध्ययन ▶ करेंसी नोट, प्लास्टिक व स्टील की सतह पर कई दिन तक रह सकता है जिंदा

हांगकांग विवि के वैज्ञानिकों ने कहा, बार-बार हाथ धोना ही है कोरोना से बचाव का उपाय

बीजिंग, प्रेट्र : कोविड-19 को लेकर एक अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है कि कोरोना वायरस मास्क की बाहरी सतह पर एक हफ्ते तक और करेंसी नोट, स्टेनलेस स्टील व प्लास्टिक की सतह पर कई दिन जिंदा रह सकता है। हालांकि घरेलू कीटनाशकों, ब्लीच और साबुन से लगातार हाथ धोकर इसका सफाया भी किया जा सकता है।

हांगकांग के साउथ चाइना मार्निंग पोस्ट के मुताबिक, हांगकांग विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में कमरे के तापमान पर विभिन्न सतहों पर कोविड-19 की सक्रियता का पता लगाया है। उन्होंने पाया कि लकड़ी और कपड़े पर यह एक दिन तक सक्रिय बना रहा। कांच व बैंक नोट पर चार दिन बाद इसका सफाया हो पाया। स्टेनलेस स्टील और प्लास्टिक की सतह से पूरी तरह खत्म होने में इसे चार से सात दिन लग गए। शोधकर्ताओं के अनुसार, अचंभे की बात यह थी कि मास्क की बाहरी सतह पर यह सात दिन तक सक्रिय बना रहा। इसलिए बहुत जरूरी है कि जब आप मास्क का इस्तेमाल करें तो ऊपरी सतह को कतई हाथ न लगाएं। इससे आप के हाथों से होकर संक्रमण मुंह और आंखों में पहुंच सकता है। हांगकांग विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ के लियो पून लिटमैन मलिक पीरिस ने कहा कि यह वायरस अनुकूल परिस्थितियों में लंबे समय तक सक्रिय बना रहता है। हालांकि मानक कीटनाशकों से इसका सफाया भी आसानी से किया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने बताया कि अन्य सतहों पर यह वायरस समय बीतने के साथ तेजी से खत्म होता है। उन्होंने कहा कि यह शोध लैब में सुरक्षा तरीकों को अपनाते हुए बिना अंगुली या हाथ लगाए किया गया है। इन निष्कर्षों से यह नहीं बताया जा सकता कि संक्रमित सतह के संपर्क में आकर किसी व्यक्ति के संक्रमित होने की कितनी संभावना है।

उल्लेखनीय है पिछले माह नेचर जर्नल में प्रकाशित अमेरिकी शोधकर्ताओं की रिपोर्ट में भी अलग-अलग सतहों पर कोविड-19 की सक्रियता के बारे में रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी। जिसमें इस वायरस के प्लास्टिक और स्टील की सतह पर 72 घंटे और तांबे की सतह पर 24 घंटे जीवित रहने की बात कही गई थी। शोधकर्ताओं ने कहा कि इस वायरस से बचाव का फिलहाल सबसे बढ़िया उपाय हाथों को बार-बार धोते रहना है। साथ ही हमें मुंह और आंखों को कम से कम स्पर्श करना चाहिए। यह संक्रमण का बड़ा कारण है।

कोरोना वायरस से पीड़ित मरीजों का इलाज करने वाले डॉक्टर और नर्सें इस तरह खुद को पूरी तरह ढककर उनके पास जाते हैं ताकि वह खुद संक्रमित होने से बच सकें। एएफपी

स्पेस स्टेशन पर जाने को दल तैयार

कोरोना के प्रकोप के बीच अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन के लिए नौ अप्रैल को उड़ान भरने के लिए अंतरिक्ष यात्रियों का एक दल तैयार है। रूसी स्पेस एजेंसी रॉसकॉस्मोस ने सोयूज एमएस-16 स्पेसक्रॉफ्ट को कजाकिस्तान स्थित बैकानूर कॉस्मोड्रोम पर पहुंचा दिया है। इस यात्रा के लिए रूस के इवान वैगनर, आनातोली इवानिशिन और नासा के क्रिस कैसिडी की तैयारी भी पूरी है। एएफपी

एआइ से होगी क्रेटरों में दबे बमों की खोज

▶ वियतनाम युद्ध के दौरान कंबोडिया की धरती पर गिराए गए थे बड़े विस्फोटक

▶ अमेरिका की ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने किया अध्ययन

प्रतीकात्मक

न्यूयॉर्क, आइएएनएस : एक नवंबर 1955 से 30 अप्रैल 1975 के बीच हुए वियतनाम युद्ध में कई प्रकार के बमों का प्रयोग किया गया था। इनकी मार से वियतनाम, लाओस और कंबोडिया की धरती पर बड़े-बड़े क्रेटर (गड्ढे) बन गए थे। आज भी यदि उन्हें खंगाला जाता है तो उस दौर के कई जिंदा बम यहां मिल जाते हैं। इन विस्फोटकों की खोज अब आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) के जरिये भी संभव है। शोधकर्ताओं ने एआइ के जरिये सेटेलाइट इमेजों की मदद से कंबोडिया में ऐसे कई क्रेटरों का पता लगाया है, जहां जिंदा बम मिलने की संभावना ज्यादा है।

शोधकर्ताओं का दावा है कि मानक विधियों की तुलना में नई विधि से जिंदा बम क्रेटरों का पता लगाने की संभावना 160 फीसद ज्यादा रहती है। अमेरिकी सैन्य रिकॉर्ड में प्रयुक्त हुए मॉडल का भी अनुमान है कि अध्ययन किए गए क्षेत्र में लगभग 44 से 50 फीसद बिना फटे हुए बम मौजूद हो सकते हैं।

कंपोंग ट्राबेक शहर का किया अध्ययन : अमेरिका की ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता एरिन लिन ने कहा, 'जिंदा बम और बारूदी सुरंगों को खोजने के लिए अब तक जिन माध्यमों का उपयोग किया गया वे बहुत प्रभावी नहीं हैं।' पीएलओएस वन नामक जर्नल में प्रकाशित निष्कर्षों के लिए शोधकर्ताओं ने कंबोडिया के कंपोंग ट्राबेक शहर के पास 100-वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में बने क्रेटरों की सेटेलाइट इमेजों का अध्ययन करने से शुरुआत की। यह क्षेत्र मई 1970 से अगस्त 1973 तक अमेरिकी वायु सेना का प्रमुख लक्ष्य था।

ऐसे किया अध्ययन : इस अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं मशीन लर्निंग का इस्तेमाल किया और दो चरणों में इसे पूरा किया। पहले चरण में चंद्रमा और ग्रहों पर उल्कापिंडों से बने क्रेटरों का पता लगाने के लिए विकसित एल्गोरिदम का इस्तेमाल किया गया। इससे मदद तो मिली लेकिन यह बहुत अच्छी साबित नहीं हो पाई, क्योंकि बम और उल्कापिंडों से बनने वाले क्रेटर लगभग समान होते हैं। इसलिए दोनों की भिन्नताओं का पता लगाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ रही थी। इसका पता शोधकर्ताओं ने दूसरे चरण में लगाया। इसके लिए उन्होंने एक कंप्यूटर एग्लोरिद्म विकसित की जो बम क्रेटरों के आकार, रंग और बनावट के आधार पर यह तय करता कि क्रेटर में बम मौजूद है या नहीं। अध्ययन के दौरान शोधकर्ताओं ने उस क्षेत्र में 177 बम क्रेटरों का पता लगाया। पहले चरण में जांच करने पर पता चला कि 89 क्रेटरों पर जिंदा बम मौजूद हैं, जबकि दूसरे चरण के अध्ययन में 96 फीसद क्रेटरों में बम पाए गए।

यूरोप में इस बार बहुत गर्म रहा मार्च का महीना

पेरिस, एएफपी : यूरोपीय संघ की सैटेलाइट सेवा ने बताया है कि इस बार मार्च का महीना यूरोपीय देशों के लिए बहुत गर्म रहा। रूस में तो इस दौरान विशेष रूप से गर्मी रही।

कोपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस (सी3एस) ने बताया कि 1981 से 2010 के आंकड़ों के औसत के मुकाबले इस बार मार्च में औसत तापमान 0.68 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। इस बार का मार्च, 2016 के मार्च के बाद सर्वाधिक दूसरा सबसे गर्म रहा। आंकड़ों के मुताबिक ऐतिहासिक औसत के सापेक्ष सभी देशों में दो डिग्री तापमान अधिक रहा। यूरोप में पिछले पांच साल काफी गर्म रहे हैं। अल नीनो प्रभाव के कारण वर्ष 2019 सर्वाधिक गर्म रहा है। जलवायु वैज्ञानिकों ने मौसम की तेजी से बदलती प्रवृत्ति पर चिंता जाहिर की है।

कोविड-19 से लड़ाई में टीबी का टीका हो सकता है कारगर

शोध अनुसंधान

▶ इम्यून सिस्टम को बढ़ाता है बीसीजी का टीकाकरण

कोरोना महामारी के बीच यह सवाल बार-बार पूछा जा रहा है कि क्या दशकों से इस्तेमाल होने वाला बीसीजी का टीका स्वास्थ्यकर्मियों को संक्रमण से बचा सकता है। शोधकर्ता टीबी से बचाने वाले बीसीजी टीके के संभावित लाभों का अध्ययन कर रहे हैं। फ्रेंच पब्लिक हेल्थ रिसर्च इंस्टीट्यूट की कैमिली कोच ने बताया कि हम दशकों से यह बात जानते हैं कि बीसीजी का टीका उन बीमारियों से भी व्यक्ति को दूर रखता है, जिसके लिए इसे नहीं बनाया गया था। वह कहती हैं कि जिन बच्चों में बीसीजी का टीका लगा है, वह श्वसन रोगों से कम पीड़ित होते हैं।

इस टीके का प्रयोग कैंसर के इलाज में भी किया जाता है। यह टाइप-1 डायबिटीज और अस्थमा जैसी बीमारियों से भी बचाता है। शोधकर्ता यह परीक्षण करना चाहते हैं कि क्या यह टीका किसी व्यक्ति को कोरोना वायरस के संक्रमण से भी बचा सकता है या फिर उसके प्रभाव को कम कर सकता है। बीसीजी के टीके के क्लीनिकल ट्रायल की मंजूरी को अंतिम रूप देने वाली कैमिली कोच ने कहा कि अगर इसके अच्छे परिणाम सामने आते हैं तो इसे सबसे पहले स्वास्थ्यकर्मियों को दिया जाएगा। हालांकि विशेषज्ञ अब भी इसके प्रभाव को लेकर एकमत नहीं हैं। इस बीच, नीदरलैंड्स की रेडबाउड यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर ने कहा है कि इस टीके का 500 स्वास्थ्यकर्मियों पर प्रयोग किया जाएगा और अगर इसके अच्छे परिणाम सामने आते हैं तो यह उत्साहजनक होगा। विश्वविद्यालय के एक शोध में बताया गया है कि बीसीजी का टीका कोरोना से सीधे बचाव नहीं करता है, लेकिन मनुष्य के इम्यून सिस्टम को बढ़ा देता है। जिससे कोरोना जैसी महामारी से लड़ने में मदद मिलती है। - एएफपी

सलमान ने कहा- डरने में बहादुरी है

लॉकडाउन के दौरान कई लोग अपनी जिम्मेदारी समझते हुए जहां हैं, वहीं ठहर गए हैं। एक ओर जैकी श्रॉफ पुणे के पास एक गांव में रुके हुए हैं, वहीं सलमान खान भी अपने परिवार के कुछ सदस्यों के साथ मुंबई से दूर अपने फार्महाउस पर रुके हुए हैं। जबकि उनके पिता सलीम खान और भाई अरबाज खान मुंबई में अपने घर पर हैं। लॉकडाउन के दौरान जो लोग घर से निकल रहे हैं या अपने गावों की तरफ भाग रहे हैं, उनसे नाराज सलमान ने एक वीडियो साझा कर बताया कि वह खुद अपने घर से दूर हैं, लेकिन ऐसी हरकतें नहीं कर रहे हैं। सलमान के साथ वीडियो में सोहैल के बेटे निर्वान भी नजर आ रहे हैं। सलमान वीडियो में कह रहे हैं, 'हम यहां (फार्महाउस) कुछ दिनों के लिए आए थे। अब हम यहीं पर हैं। हम तो डर गए हैं। मैंने अपने पिता को तीन हफ्तों से नहीं देखा है। मेरे पिता अकेले घर पर हैं। सलमान निर्वान से पूछते हैं-क्या तुमने वह डायलॉग सुना है कि 'जो डर गया वो मर गया'। सलमान ने कहा कि कोरोना से लड़ने के लिए हम बड़ी ही बहादुरी से कह रहे हैं कि हम डर गए हैं। निर्वान कहते हैं कि हम जितना घर पर रहेंगे, उतनी जल्दी इससे बाहर निकल पाएंगे। सलमान कहते हैं कि अब यह डायलॉग सही है कि 'जो डर गया वो बच गया'। कहानी का नतीजा यह निकला कि हम डर गए। इस वीडियो के साथ सलमान ने लिखा है- 'घर पर रहें और सुरक्षित रहें।'

'अंग्रेजी मीडियम' डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हुई रिलीज

कोरोना वायरस के कहर के चलते जब सिनेमाघरों को बंद करने की घोषणा हुई थी, उससे ठीक एक दिन पहले ही फिल्म 'अंग्रेजी मीडियम' रिलीज हुई थी। उसके बाद फिल्म की टीम ने सोशल मीडिया पर बताया भी था कि वह इस फिल्म को सब कुछ सामान्य हो जाने पर दोबारा रिलीज करेंगे। लेकिन अब मेकर्स ने परिस्थिति को देखते हुए इसे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रिलीज कर दिया है। इरफान के साथ फिल्म की टीम ने इसकी घोषणा सोशल मीडिया पर की है। इरफान ने लिखा, 'पिता-पुत्री के रिश्तों को इस रोलर-कोस्टर राइड पर बैठकर देखिए, क्योंकि अब इसका वर्ल्ड डिजिटल प्रीमियर हो रहा है।'

इस फिल्म को डिजनी प्लस और हॉटस्टार वीआइपी पर देखा जा सकता है। फिल्म के निर्देशक होमी अदजानिया ने कुछ दिन पहले थियेटर में लगा 'अंग्रेजी मीडियम' का पोस्टर साझा करते हुए लिखा था कि यह फिल्म सबसे कम समय के लिए रिलीज होने वाली और लंबे समय तक सिनेमाघरों में पोस्टर लगे रहने की वजह से वर्ल्ड रिकॉर्ड बना सकती है। अब होमी ने सोशल मीडिया पर लिखा, 'यह फिल्म प्यार और हंसी का डोज सबके लिए लेकर आएगी। इस वक्त हमें इसी चीज की जरूरत है। अगर यह फिल्म आपके चेहरों पर मुस्कान ला पाई, तो वह हमारी सफलता होगी।' होमी ने आगे लिखा कि 'इस फिल्म को बच्चे जरूर देखें'। फिल्म में इरफान के साथ करीना कपूर खान, राधिका मदान, दीपक डोबरियाल मुख्य किरदार में थे। यह फिल्म 2017 में रिलीज हुई फिल्म 'हिंदी मीडियम' की सीक्वल है। जिसे दर्शकों ने भरपूर प्यार दिया था।

ट्रोल हुईं सोनम कपूर और सोनाक्षी सिन्हा

सोमवार को सोनम कपूर को उनके एक ट्वीट को लेकर खूब ट्रोल किया गया। दरअसल, रविवार को प्रधानमंत्री के आह्वान पर लोगों ने घरों की बत्तियां बुझाकर नौ मिनट दीपक जलाए थे। कुछ लोगों ने पटाखे भी फोड़े। इस पर सोनम ने लिखा, 'लोग पटाखे फोड़ रहे हैं। आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि इससे कुत्ते डरकर बाहर भाग रहे हैं। मैं उलझन में हूं कि क्या लोग इसे दीवाली समझ रहे हैं?' इस ट्वीट के बाद लोगों ने सोनम की शादी की एक तस्वीर साझा करते हुए उन्हें ट्रोल करना शुरू कर दिया, जिसमें उनके पिता अनिल कपूर पटाखे फोड़ रहे थे। कई यूजर्स ने लिखा- इस तरह के पटाखे से कुत्ते नहीं डरते। वही सोनाक्षी सिन्हा को भी ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा। दूरदर्शन की तरफ से सोशल मीडिया पर पूछा गया कि हनुमान किसके लिए संजीवनी बूटी लाए थे? इस पर एक यूजर ने लिखा, 'मैं सोनाक्षी सिन्हा हूं और उत्तर है सीता।' एक अन्य यूजर ने सोनाक्षी को टैग करते हुए लिखा कि कुछ याद आया। बता दें कि सोनाक्षी 'कौन बनेगा करोड़पति 11' में इस सवाल का जवाब नहीं दे पाई थीं और उन्होंने लाइफलाइन का प्रयोग किया था।

राहुल देव तोड़ नहीं सके खलनायक की छवि

खलनायक के किरदार में नजर आने वाले राहुल देव वेब सीरीज 'हू इज योर डैडी' में एक सेवानिवृत्त फौजी की भूमिका में हैं। लगातार खलनायक का किरदार निभाने पर राहुल का कहना है कि एक्टिंग स्कूल में कलाकार को सिखाया जाता है कि सभी नौ रसों को अच्छी तरह से निभाने वाला ही अच्छा एक्टर है, लेकिन इंडस्ट्री में यह बात प्रायोगिक नहीं है। वर्ष 2000 में फिल्म चैंपियन में पहली बार खलनायक का किरदार निभाने के बाद लोग उन्हें आजतक खलनायक के रूप में ही देखते हैं। कुछ फिल्मों से उन्होंने छवि बदलने की कोशिश की तो उसमें सफलता नहीं मिली। उनका मानना है कि इंडस्ट्री की भेड़चाल ने उन्हें खलनायक की छवि से आगे बढ़ने नहीं दिया। इसीलिए उन्होंने इस वेब सीरीज में अपनी छवि से अलग किरदार निभाना स्वीकार किया। राहुल के मुताबिक, 'इस वेब सीरीज के लिए उन्होंने कॉमेडी करने की कोशिश नहीं की है, लेकिन परिस्थितियां ऐसी बनती है कि लोगों को हंसी आएगी।' उन्होंने उम्मीद जताई है कि उनका नया किरदार लोगों को पंसद आएगा। इस सीरीज के इस वेब सीरीज में हर्ष बेनीवाल और निखिल भांबरी भी मुख्य भूमिकाओं में हैं।

स्क्रीन शॉट

कलाकारों को मिलते थे तीन हजार रुपये : गूफी पेंटल

वर्ष 1988 में बने धारावाहिक 'महाभारत' का दूरदर्शन पर पुनः प्रसारण हो रहा है। 'महाभारत' में शकुनि का किरदार निभाने वाले गूफी पेंटल ही इसके कास्टिंग डायरेक्टर भी थे। उनके मुताबिक, इस शो के तैयारी में पांच साल लगे थे। एक साल तक ऑडिशन चले थे। वह कहते हैं, 'कास्टिंग में बहुत हेरफेर हुई थी। मुकेश खन्ना को पहले भीष्म पितामह नहीं, द्रोणाचार्य के किरदार के लिए चुना गया था। नीतीश भारद्वाज को विदुर के लिए चुना गया था, फिर हमने नीतीश का एक विज्ञापन देखा, उनकी आंखों में गहराई नजर आई, जिसके बाद उन्हें कृष्ण का रोल दिया गया। गोविंदा अभिमन्यु का किरदार करने वाले थे, लेकिन उन्हें 'लव 86' फिल्म मिल गई थी। द्रौपदी के लिए जूही चावला को चुना गया था।' अपने किरदार की कास्टिंग को लेकर वह कहते हैं, 'यह मैंने तय नहीं किया था कि शकुनि का किरदार मैं करूंगा। दरअसल, पहले 'बहादुर शाह जफर' नाम का एक सीरियल आया करता था। उसमें मैंने ब्रिटिश जनरल मेटकाफ का रोल निभाया था। चोपड़ा साहब को वह पसंद था, उन्होंने कहा शकुनि के रोल के लिए तुम ही जेहन में थे। शकुनि की ड्रेस काली होगी और वह लंगड़ाकर चलेगा, यह राय भी मैंने ही दी थी।' गूफी बताते हैं, 'इस शो के सभी प्रमुख किरदारों को तीन हजार रुपये प्रति एपिसोड मिलते थे। जब शो शुरू हुआ था, तो दो-तीन गाड़ियां ही पार्किंग में नजर आती थीं, लेकिन शो खत्म होने तक 35-36 गाड़ियां वहां खड़ी हो गई थीं। शो का अहम हिस्सा समय था। शो के लेखक डॉ. राही मासूम रजा का यह आइडिया था। उस वक्त अमीन सयानी, बृजभूषण जी, प्रताप शर्मा और हरीश भिमानी, ये चार आवाजें प्रसिद्ध थीं। हरीश भिमानी ने 'समय' के लिए आवाज दी थी।'

अनन्या पांडे को यकीन नहीं होता कि उन्हें बॉलीवुड में दो साल हो गए

चंकी पांडे की बेटी अनन्या पांडे ने अपने करियर की शुरुआत करण जौहर की फिल्म 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर 2' से की थी। दो साल में अनन्या ने दो फिल्में कर ली हैं और तीन फिल्में रिलीज होने की कतार में हैं। इनमें 'खाली पीली', 'फाइटर' और एक अनाम फिल्म शामिल है। अनन्या बताती हैं, 'मुझे आज भी याद है कि 7 अप्रैल, 2018 को इस फिल्म की शूटिंग शुरू हुई थी। मैं नर्वस थी। मुझे अब भी यकीन नहीं होता है कि दो साल हो गए हैं। इन दो सालों में इतना कुछ बदल चुका है। अजीब-सा एहसास हो रहा है।' लगातार बड़े बैनर के साथ काम कर रहीं अनन्या का कहना है, 'शुरू में सोचा नहीं था कि बड़े बैनर की ही फिल्में करनी हैं। फिल्म के निर्देशक का अपने प्रोजेक्ट और स्क्रिप्ट को लेकर कितना जुनून है, यह देखकर मैं फिल्म साइन करती हूं। 'खाली पीली' की कहानी मकबूल सर ने जिस तरह नैरेट की थी, उसी समय मैंने हां कर दी थी।' 'खाली पीली' नाम से मुंबई की काली-पीली टैक्सी की याद आ जाती है। अनन्या ने बताया कि इस फिल्म में उन्होंने टैक्सी में बैठने की कसर पूरी कर ली है। जब वह छोटी थीं, तब टैक्सी में जाया करती थीं। कई बार मम्मी-पापा कार लेकर चले जाते थे। तब मैं टैक्सी से जाती थी। टैक्सी में बैठने की खूबसूरत याद दादी से जुड़ी हुई है। हम उनके साथ टैक्सी में जाया करते थे।

व्यायाम कर रही हैं शिल्पा शेट्टी की सास

शिल्पा शेट्टी इन दिनों अपने साथ पूरे परिवार की फिटनेस पर ध्यान दे रही हैं। उन्होंने सोमवार को सोशल मीडिया पर अपनी सास ऊषा रानी कुंद्रा का वीडियो साझा किया। इस वीडियो में उनकी सास व्यायाम करती दिख रही हैं। वीडियो में वह सास को प्रोत्साहित भी करती हैं। वीडियो के अंत में शिल्पा के बेटे विआन भी दादी के साथ व्यायाम करते हैं। शिल्पा ने लिखा, 'मेरी 68 वर्षीय सासू मां व्यायाम कर रही हैं और मैंने चुपके से उनका वीडियो बना लिया। वह डायबिटीज से ग्रसित हैं, लेकिन व्यायाम और योग के लिए वक्त निकाल लेती हैं। मैं उनके अनुशासन की सम्मान करती हूं, यह प्रेरणादायक वीडियो साबित करता है कि शुरुआत करने के लिए कभी देर नहीं होती। इस वीडियो को साझा करने के लिए वह मुझे खूब डाटेंगी, लेकिन इसे मुझे साझा करना पड़ रहा है।'

आज के प्रमुख टीवी कार्यक्रम

डीडी नेशनल
योग विज्ञान : सुबह 6.30
रामायण : सुबह 9.00/रात 9.00
एहसास-कहानी एक घर की : दोपहर 12.00
श्रीमान श्रीमती : शाम 4.00
बुनियाद : शाम 5.00
देख भाई देख : शाम 6.00
सर्कस : रात 8.00
चाणक्य : रात 10.00

डीडी भारती
उपनिषद गंगा : शाम 6.00
महाभारत : दोपहर 12.00/शाम 7.00

कलर्स
खतरों के खिलाड़ी : सुबह 8.00/11.00
महाकाली : शाम 4.00
लवकुश : शाम 5.00
बिग बॉस 13 : रात 10.00

स्टारप्लस
ये रिश्ता क्या कहलाता है : सुबह 6.00/दोपहर 1.00
महाराज की जय हो : सुबह 6.30/रात 9.00
ये रिश्ते हैं प्यार के : सुबह 7.00/ रात 10.00
राधाकृष्ण : सुबह 8.00
सिया के राम : सुबह 8.30

स्टार भारत
सावधान इंडिया-एफआइआर : दोपहर 12.00
कॉमेडी क्लासेज : रात 8.00

सोनी
द कपिल शर्मा शो : सुबह 7.00
सीआइडी : सुबह 10.00
क्राइम पेट्रोल डायल 100 : दोपहर 12.00/शाम 4.00
मेरे साईं-श्रद्धा और सबूरी : शाम 7.00